भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 306 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 31 अक्टूबर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

2024 में कांग्रेस बनाएगी सरकार, भाजपा बैठेगी विपक्ष में : संजय राउत

पुणे (एजेंसी)। शिवसेना सांसद संजय राउत ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि 2024 में भाजपा विपक्ष में बैठेगी। जबकि कांग्रेस पार्टी के सहयोग से देश में गठबंधन वाली सरकार सत्ता में आएगी। इसके साथ ही मौजूदा एक-पक्षीय सरकार के शासन को समाप्त कर देगी। जेएस करंदीकर स्मारक व्याख्यान को संबोधित करने के बाद पुणे में पत्रकारों से बात करते हुए शिवसेना सांसद संजय राउत ने कहा कि 2024 में कांग्रेस के सहयोग के बिना कोई भी सरकार सत्ता में नहीं आ पाएगी। कांग्रेस देश की एक प्रमुख पार्टी है। कांग्रेस विपक्षी पार्टी भी है और अन्य क्षेत्रीय पाटिर्यां हैं।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर के बयान 'भाजपा कई दशकों तक सत्ता में रहेगी' के बारे में जवाब देते हुए संजय राउत ने कहा कि भाजपा भारतीय राजनीति में रहेगी लेकिन एक विपक्षी दल के रूप में। राउत ने कहा, 'भाजपा का दावा है कि वह दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है। अगर दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी चुनाव हार जाती है तो वे विपक्षी पार्टी बन जाती है। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में भाजपा 105 विधायकों के साथ मुख्य विपक्षी दल है। यूपी में आगामी विधानसभा चुनाव के बारे में संजय राउत ने कहा कि अभी हम दादरा, नगर हवेली और गोवा में ध्यान दे रहे हैं। यूपी चुनाव में अभी समय है। हम यूपी में एक छोटे खिलाड़ी हैं, लेकिन चुनाव लड़ेंगे जरूर।

राम भक्तों पर गोली चलवाने वाले चुनाव में चेहरा बदल कर आएंगे : सीएम योगी

गोरखपुर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 31 साल पहले अयोध्या में राम भक्तों पर बर्बर और निर्मम गोलीकांड हुआ था। सेकुलरिज्म के नाम पर समाज को छिन्न भिन्न करने वाले इस वारदात पर मौन थे या फिर उसे जायज ठहरा रहे थे। लेकिन अयोध्या की घटना इस बात के लिए प्रेरित करती रहेगी कि अगर हमारी नियत साफ है तो हमारी नीति को नियंता भी सफल बनाता है। उन्होंने कहा कि 1990 में मंदिर निर्माण की मांग पर गोली चलवाने वाले आज चेहरे बदल कर फिर आएंगे। नाम और रूप अलग-अलग होंगे पर वह लोग काम वही करेंगे। इन सबके प्रति आपको जागरूक करने के लिए आए हैं। उस त्रासदी को आपने सुना होगा लेकिन लाखों कारसेवकों ने उस दर्द को महसूस किया था।

सीएम योगी आदित्यनाथ शनिवार को योगीराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में गोरखपुर, बस्ती और आजमगढ़ मण्डल के 12 जिलों के मण्डल अध्यक्ष एवं मण्डल प्रभारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह, प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह और गोरखपुर क्षेत्र के चुनाव प्रभारी अरविंद मेनन एवं विवेक ठाकुर भी शामिल रहे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भाजपा आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। यह उसकी नीति और नीयत का परिणाम है।

उन्होंने मण्डल प्रभारियों एवं मण्डल अध्यक्षों से कहा कि रास्ते भले अलग हो, मिशन सबका एक ही है कि कैसे हम सफल हों। सफलता के लिए हमें जानना होगा कि क्या करना है और क्या नहीं करना है।

उन्होंने कहा कि केवल अपने लिए जीना कोई जीना नही होता बल्कि देश और समाज के लिए जीना, जीना होता है। उन्होंने कहा कि हम केवल जाति एवं धर्म की राजनीति करें तो कश्मीर से धारा 370 कभी खत्म नहीं हो पाता। 2017 और 2014 से पहले प्रदेश एवं देश में भाजपा सरकार नहीं थी। तब हम सीमित संख्या में थे लेकिन आज हम बहुमत में हैं। 17 के पहले यूपी में 47 विधायक थे। आज 304 भाजपा विधायक हैं। 17 से पहले यूपी में 10 एमएलसी थे आज 37 एमएलसी हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सम्मान का रास्ता संघर्ष से शुरू होता है।

गश्त के दौरान एलओसी के पास लैंडमाइन ब्लास्ट, सेना का अफसर और जवान शहीद

राजौरी (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास शनिवार दोपहर एक लैंडमाइन ब्लास्ट में सेना के अधिकारी समेत दो जवान शहीद हो गए। इस ब्लास्ट में तीन अन्य जवान घायल हुए हैं। ब्लास्ट के कारणों का पता नहीं लग पाया है। सेना के अधिकारियों ने बताया कि शनिवार दोपहर राजौरी जिले के नौवेशरा के लाम सेक्टर में कलाल एरिया पर सेना के जवान गश्त कर रहे थे। नियमित गश्त के दौरान नियंत्रण रेखा के पास एक लैंडमाइन विस्फोट हो गया। सेना के जवान अचानक हुए इस ब्लास्ट की चपेट में आ गए। इस घटना में एक लेफ्टिनेंट और चार जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें अस्पताल लाया गया।अधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, विस्फोट के कारणों का अभी पता नहीं लग पाया है। घायलों में लेफ्टिनेंट और जवान शहीद हो गए हैं। जबकि तीन अन्य

जवान गंभीर रुप से घायल बताए जा रहे हैं। उनका उपचार चल रहा है। फिलहाल नियंत्रण रेखा पर सेना ने चौकसी बढ़ा दी है। साथ ही विस्फोट के कारणों की जांच शुरू कर दी है।

कोरोना के बाद कानपुर में जीका वायरस का खौफ, एयरफोर्स कर्मचारी के बाद तीन और लोगों में नए वायरस की पुष्टि

कानपुर (एजेंसी)। कानपुर में जीका वायरस का हमला तेज हो गया है। नेशनल वायरोलॉजी सेंटर पुणे की रिपोर्ट में तीन और मरीजों में संक्रमण की पुष्टि होते ही हड़कंप मच गया है। इसके साथ ही यहां कुल मरीजों की संख्या 4 पहुंच गई है। जांच रिपोर्ट आने के बाद स्वास्थ्य महकमा हैरत में पड़ गया है। वायरस की पुष्टि होने की खबर लगते ही अपर मुख्य सचिव (चिकित्सा) ने आपात जूम मीटिंग कॉल की। स्वास्थ्य विभाग के अफसरों को बचाव के लिए तत्काल प्रयास तेज करने के निर्देश दिए। डीएम ने प्रभावित क्षेत्र में पहुंचकर अधिकारियों के साथ जायजा लिया। इसके साथ ही क्षेत्र में हाई अलर्ट कर दिया गया है। नए संक्रमित मरीजों में दो एयरफोर्स कर्मचारी हैं। दोनों लालबंगला के तिवारीपुर आदर्श नगर में रहते हैं। तीसरा संक्रमित तीन किलोमीटर के दायरे में श्याम नगर का रहने वाला है। उसकी ट्रैवल हिस्ट्री केरल और राजस्थान के प्रभावित इलाकों से मिली है।57 वर्षीय एयरफोर्स कर्मी में जीका की पुष्टि के बाद तीन किलोमीटर के दायरे में सघन सर्वे अभियान चल रहा है। शनिवार को नए संक्रमितों के घर के आसपास 400 घरों को कंटेनमेंट घोषित करके स्क्रीनिंग की जा रही है। सर्वे टीमों ने अब तक 493 सैंपल नेशनल वायरोलॉजी सेंटर पुणे भेजे है। शनिवार को भी 126 नमूने लिए गए जो रविवार को भेजे जाएंगे। सीएमओ डॉ. नेपाल सिंह के मुताबिक तीनों मरीजों को 14 दिनों के लिए आइसोलेट कर दिया गया है।

अपहरण और गैंगरेप मामले में पूर्व विधायक को उम्रकैद की सजा, 30 हजार का जुर्माना भी लगा

बदायूं (एजेंसी)। अपहरण और गैंगरेप के मामले में पूर्व विधायक योगेंद्र सागर को शनिवार को अदालत ने दोषी करार दे दिया। कोर्ट ने पूर्व विधायक को आजीवन कारावास समेत 30 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। फिलहाल उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेजने की तैयारी चल रही है। साल 2008 में बिल्सी की रहने वाली एक छात्रा का अपहरण हुआ था और बाद में गैंगरेप भी किया गया। इस मामले में पूर्व विधायक योगेंद्र सागर उनका सहयोगी तेजेंद्र सागर समेत मीनू शर्मा भी नामजद थे। दोनों आरोपियों को पहले ही सजा सुनाई जा चुकी है। जबकि शनिवार को योगेंद्र सागर को एडीजे-9 अखिलेश कुमार ने आजीवन कारावास की सजा के साथ 30 हजार रुपये जुर्माना भी लगाया। पूर्व विधायक योगेंद्र सागर बिसौली के मौजूदा विधायक कुशाग्र सागर के पिता हैं। उनकी पत्नी प्रीति सागर जिला पंचायत अध्यक्ष भी रही हैं। जबकि खुद योगेंद्र सागर बसपा से बिल्सी के विधायक रह चुके हैं।

बिहार में ये कैसी शराबबंदी? जहरीली शराब ने 7 महीने में छीन ली 30 की जिंदगी

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में जहरीली शराब का पीने से शनिवार तक कुल आठ लोगों की मौत हो चुकी है। नीतीश सरकार ने शराबबंदी को लेकर राज्य में कड़े कानून बना रखे है, उसके बावजूद भी शराब की तस्करी धड़ल्ले से हो रही है। हालांकि पुलिस ने इस दौरान भारी मात्रा में अवैध शराब को बरामद भी किया है। आंकड़ों पर गौर करे तो मार्च 2021 से लेकर अब तक जहरीली शराब पीने से 30 लोगों की मौत हो चुकी है। बता दें कि इसी साल नवादा शहरी इलाके में होली के दौरान कथित जहरीली शराब पीने से 15 लोगों की मौत हो गई थी। मृतकों द्वारा होली के दौरान नवादा में तैयार की गयी जहरीली शराब पी गई थी। शराब पीने के बाद से इनकी हालत बिगड़ने लगी और 31 मार्च से 02 अप्रैल 2021 के बीच अलग-अलग जगहों पर इलाज के क्रम में इनकी मौत हो गयी। शराब पीने से चार अन्य लोगों के आंखों की रोशनी चली गयी थी। पुलिस के मुताबिक प्रथम दृष्टया जांच में इनके नकली शराब पीने से मौत हुई थी। मृतकों ने डिनेचर्ड (विकृत) स्पिरिट से बनी घातक शराब का सेवन किया था।

वहीं इसी महीने सीवान जिले के गुठनी थाना क्षेत्र में शराब पीने से छह लोगों की मौत हो गयी। छह लोगों के मरने की सूचना के बाद पुलिस प्रशासन में हड़कंप मच गया। इस मामले को लेकर ने बयान दिया था कि जहरीली शराब से आंखों की रोशनी तत्काल चली जाती है लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वहीं मृतकों के परिजनों ने कहा था कि जहरीली शराब पीने से ही उनकी मौत हुई है। इसके अलावा वैशाली में अक्टूबर के महीने में जहरीली शराब से एक व्यक्ति की मौत हो गई थी।

आरएसएस ने बताया विस्तार का प्लान

अगले लोकसभा चुनाव तक देश के हर ब्लॉक में होगी मौजूदगी

धारवाड़ (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने शनिवार को कहा कि आरएसएस अपनी गतिविधियों का विस्तार करने के लिए अगले तीन वर्षों में देश के सभी विकास खंडों तक पहुंचने पर विचार कर रहा है। कर्नाटक के धारवाड़ में चल रही अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल बैठक संपनन होने के बाद तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान लिए गए फैसलों के बारे में जानकारी देते हुए होसबाले ने कहा, ''हमने अपनी गतिविधियों को विस्तार देने का फैसला लिया है। वर्तमान में 6,483 विकास खंडों में से 4,683 में हतारी उपस्थिति है। हालांकि, हम मार्च 2024 तक भारत के सभी विकास खंडों तक पहुंचना चाहते हैं।'' गौरतलब है कि 2024 में लोकसभा चुनाव भी होना है और इस लिहाज से भी आरएसएस के विस्तार की योजना काफी अहम है। संघ ने उन लोगों से भी अपील की है जो देश भर में इसके आधार का विस्तार करने के लिए 2 साल तक स्वेच्छा से काम करना और वर्ष 2025 तक सभी विकास खंडों में इसकी उपस्थिति सुनिश्चित करना चाहते हैं। वर्ष 2025 में संघ अपनी शताब्दी मनाएगा। आरएसएस के पदाधिकारी ने कहा कि मिज़ोरम, नगालैंड, कश्मीर और लक्षद्वीप में संघ की गतिविधियां नहीं हैं। उन्होंने कहा कि संघ कश्मीर में अपनी शाखाएं चला रहा था लेकिन वहां से हिंदुओं के पलायन

के बाद गतिविधियां प्रभावित हुईं।

होसबाले ने कहा कि इन राज्यों में पहुंचने के बाद स्थानीय प्रचारकों को संबंधित राज्यों में संघ के विस्तार के लिए योजना बनानी होगी। संघ की गतिविधियों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि रोजाना 34,000 स्थानों पर शाखाएं चलाई जा रही हैं जोकि कोविड महामारी के दौरान प्रभावित हुई थीं। संघ नेता ने कहा कि दैनिक शाखाएं, साप्ताहिक शाखाएं, पखवाड़ा और मासिक शाखाओं को मिलाकर 55,000 स्थानों पर संघ शाखाओं का संचालन होता है।

होसबाले ने कहा कि चूंकि यह वर्ष भारतीय स्वतंत्रता की प्लेटिनम जयंती है, ऐसे में संघ ने स्वतंत्रता सेनानियों और स्वतंत्रता संग्राम के कई गुमनाम नायकों के योगदान को याद करते हुए प्रदर्शनियों का आयोजन करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि संघ सिख गुरु तेग बहादुर को श्रद्धांजलि देने के लिए विभिनन कार्यक्रम आयोजित करने की भी योजना बना रहा है। साथ ही संघ रोजगार सृजन और कौशल विकास पर भी ध्यान देना चाहता है। जनसंख्या नीति के बारे में पूछे जाने पर संघ नेता ने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र की एक जनसंख्या नीति होनी चाहिए जो सभी पर लागू हो। उन्होंने कहा कि संघ ने कुछ साल पहले इस मुद्दे पर एक प्रस्ताव पारित किया था। प्रदूषण को रोकने के लिए दीपावली पर पटाखों पर प्रतिबंध संबंधी सवाल पर होसबाले ने कहा कि इस तरह के कदम त्योहार के आसपास नहीं बल्कि साल की शुरुआत में उठाए जाने चाहिए।

अखिलेश यादव ने मायावती और बीजेपी को दिया झटका, 7 बागी विधायक सपा में शामिल

लखनऊ (एजेंसी)। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने शनिवार को बसपा और बीजेपी को झटका दिया है। लखनऊ सपा मुख्यालय पहुंचे बसपा के 6 बागी विधायक और एक भाजपा विधायक ने सपा की सदस्यता ली। सभी बागी विधायकों को अखिलेश यादव ने पार्टी की सदस्यता दिलाई। इस दौरान अखिलेश ने भाजपा पर जमकर हमला बोला। भाजपा के एक विधायक शामिल होने के बाद अखिलेश यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री भाजपा पार्टी का नारा बदल देंगे। मेरा परिवार भाजपा परिवार की जगह नारा बदल के नाम होगा मेरा परिवार भागता परिवार रख देंगे। अखिलेश ने कहा कि भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में किए गए वादे पूरे नहीं किए। समाजवादियों का मानना है कि जो

कांग्रेस है वही भाजपा है जो भाजपा है वही कांग्रेस है।सुषमा पटेल, हरगोविंद भार्गव, असलम चौधरी,असलम राइनी, हाकिम लाल बिन्द और मुज्तबा सिद्दीकी, भाजपा के बागी विधायक राकेश राठौर, हरेंद्र मलिक भी कर चुके हैं वापसी

चार बार विधायक व एक बार राज्यसभा सदस्य रहे हरेंद्र मलिक ने करीब 20 साल बाद शुक्रवार को एक बार फिर लखनऊ में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के समक्ष समाजवादी पार्टी में वापसी की है। उनके साथ दो बार के पूर्व विधायक पंकज मलिक, चरथावल के पूर्व ब्लॉक प्रमुख जिल्ले हैदर समेत काफी संख्या में जिले के कांग्रेसियों ने पार्टी छोड़कर सपा की सदस्यता ली। पार्टी में शामिल होने के अवसर पर हरेंद्र मलिक ने अपने संबोधन में कांग्रेस को बंजर और सपा को उपजाऊ भूमि की उपमा दी।

पाक की जीत का जश्न मनाने वालों पर ऐक्शन, बचाव में महबूबा ने पीएम मोदी को लिखा लेटर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप में भारत के खिलाफ मैच में पाकिस्तान की जीत पर जशन मनाने वालों पर हुई कार्रवाई को लेकर जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने पीएम नरेंद्र मोदी को लेटर लिखा है। आगरा के कॉलेज में 3 कश्मीरी स्टूडेंट्स की गिरफ्तारी को लेकर महबूबा ने कहा, ''मैंने आपसे हस्तक्षेप की अपील इसलिए की है ताकि इन युवाओं का भविष्य खराब ना हो। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच

दोस्ताना क्रिकेट मैच यहां लोगों के लिए मनोरंजन का साधन था और लोगों ने विजेता टीम के लिए खुशी मनाई। उन्होंने कहा कि इसके लिए युवा स्टूडेंट्स पर आतंकरोधी कानून के तहत कार्रवाई की गई है। महबूबा ने कहा कि कश्मीर में यह हैरान करने वाला नहीं है, लेकिन आगरा में भी ऐसा ही किया गया है, जबकि कॉलेज ने कह दिया था कि वे किसी राष्ट्र विरोधी गतिविधि में शामिल नहीं थे। महबूबा मुफ्ती ने कहा कि देशभक्ति और वफादारी की भावना को करुणा के साथ बढ़ाया जा सकता है। लाठी या बंदूक की बैरल से इसके लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि इस तरह की कार्रवाई से केवल अविश्वास बढ़ेगा और युवाओं का देश के अन्य हिस्सों से अलगाव होगा।

धर्म बदलने वाला खुद करे इसकी घोषणा, आरएसएस ने कहा- धर्मांतरण के खिलाफ बने कानून

धारवाड़ (कर्नाटक) (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने शनिवार को कहा कि धर्म परिवर्तन बंद होना चाहिए और धर्म बदलने वालों को खुद इसकी घोषणा करनी चाहिए। संघ के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने कहा कि अगर कोई सरकार धर्मांतरण विरोधी विधेयक पारित होता है तो वे उसका स्वागत करेंगे। कर्नाटक के धारवाड़ में तीन दिवसीय अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल (एबीकेएम) की बैठक से समापन के मौके पर पत्रकारों से बात करते हुए आरएसएस के महासचिव दत्तात्रेय होसबोले ने कहा, ठधर्मांतरण को रोका जाना चाहिए और जिन लोगों ने धर्म परिवर्तन किया है, उन्हें घोषणा करनी होगी कि उन्होंने धर्मांतरण किया है। धर्मांतरण विरोधी कानून पर आरएसएस के रुख पर एक सवाल का जवाब देते हुए होसबोले ने कहा, ठअल्पसंख्यक इसका विरोध क्यों कर रहे हैं, ये एक रहस्य है। किसी भी तरीके से किसी धर्म के लोगों की संख्या बढ़ाना, धोखाधड़ी या ऐसे अन्य तरीकों को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि न केवल आरएसएस बल्कि महात्मा गांधी और अन्य ने भी इसका विरोध किया है। उनके अनुसार देश में 10 से अधिक राज्य ऐसे हैं जिन्होंने धर्मांतरण विरोधी विधेयक पारित किया है। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस सरकार ने एक प्रस्ताव पारित किया।

खबर संक्षेप

जन कल्याण सेवा संघ ने स्टेशन मास्टर को दिया ज्ञापन

जंघई। जंघई रेलवे स्टेशन की 5 प्रमुख समस्याओं को लेकर जनकल्याण सेवा संघ ने स्टेशन मास्टर एवं आर.पी.एफ में 5 सूत्रीय ज्ञापन दिया गया।जिसमें पहला जंघई स्टेशन के आरक्षण खिड़की पर टिकट दलाल सक्रियता, दूसरा प्लेटफॉर्म संख्या 1 कि ऊंचाई कम होने के कारण आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है।तीसरा प्लेटफॉर्म पर कोच पोजीसन डिस्प्ले लगे हैं परंतु कार्य ना होने के कारण ट्रेन आने पर यात्रियों में अफरातफरी मच जाती हैं।चौथा प्रयागराज रेल मार्ग पर स्थित गेट नंबर 20 शाम 6 बजे बंद हो जाने से क्षेत्रवासियों को काफी समस्या का सामना करना पड़ता है।पांचवा स्टेशन पर स्थित सुलभ शौचालय साफ सफाई ना होने के कारण यात्री उसका प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं।जन कल्याण सेवा संघ के संस्थापक रोहित कुमार तिवारी रोहित ब्राह्मण ने उपरोक्त समस्याओं को जल्द से जल्द निवारण की मांग करते हुए कहा कि जनवरी तक यदि इन सभी समस्याओ का समाधान नहीं हुआ तो जन कल्याण सेवा संघ धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होगा।इस अवसर पर अनुज पांडेय क्षेत्र पंचायत सदस्य, संजय तिवारी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जन कल्याण सेवा संघ, आयुष तिवारी, विशाल तिवारी, उपेंद्र दुबे, विकाश उपाध्याय, अंकित तिवारी, शुभम तिवारी, अक्षत दुबे, राज पाठक, शनि पांडेय पूजन भारतीय आदि मौजूद रहे।

लोहे की रॉड से पत्नी की हत्या कर पति पहुंचा थाने

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दारागंज के कच्ची सड़क मोहल्ले में रहने वाली रश्मि यादव (45) को पति बालश्याम यादव ने ही लोहे की रॉड से हमलाकर मौत के घाट उतार दिया। सुबह हुए झगड़े के बाद इस वारदात को अंजाम दिया गया। पुलिस का कहना है कि आरोपी अपनी पत्नी पर शक करता था। उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।कच्ची सड़क मोहल्ले में रहने वाला बालश्याम दो मंजिला मकान के निचले तल पर आटा चक्की चलाता था। करीब 22 साल पहले उसकी शादी सोरांव की रहने वाली रश्मि से हुई थी। शादी के बाद उनके तीन बच्चे भी हुए, जिनमें दो बेटियां इंटर पास कर चुकी हैं, जबकि एक छोटा बेटा है। शादी के कुछ सालों तक तो सबकुछ ठीक-ठीक रहा, लेकिन इसके बाद उनके रिश्ते बिगड़ गए। उनके बीच अक्सर झगड़े होने लगे और हर बीतते दिन के साथ रिश्ते और भी तल्ख होते गए। शनिवार सुबह 6.30 बजे के करीब भी उनके बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ। आरोप है कि इसी दौरान तैश में आकर बालश्याम ने रश्मि पर लोहे की रॉड से हमला कर दिया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। उधर थोड़ी देर बाद बच्चे पहुंचे तो मां को मृत पड़ा देख चीखने लगे। शोरगुल पर परिवार व आसपास के लोग भी जुट गए। इसके बाद सूचना दी गई तो पुलिस भी आ गई। जांच पड़ताल के बाद पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। दारागंज इंस्पेक्टर धर्मेंद्र दुबे ने बताया कि आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। उसे जेल भेज दिया गया है।

मृतक को एंबुलेंस से ले जाती पुलिस

थाने में बोला आरोपी, कोई पछतावा नहीं

पुलिस सूत्रों का कहना है कि गिरफ्तार किए जाने के बाद थाने लाए जाने पर आरोपी के चेहरे पर कोई पछतावा नहीं था। पूछताछ करने पर उसका कहना था कि उसे अपने किए का कोई दुख नहीं है। वह इसके लिए अपनी पत्नी को ही कसूरवार ठहराता रहा।

हत्या के बाद खुद पहुंच गया थाने

सूत्रों का कहना है कि घटना के बाद आरोपी खुद थाने पहुंचा। दरअसल जिस कमरे में हत्या हुई, उसके अगले हिस्से में दुकान थी। हत्या के बाद आरोपी ने दुकान के शटर में बाहर से ताला लगा दिया और फिर थाने पहुंच गया। वहां उसने पुलिसकर्मियों को पत्नी की हत्या की बात बताई तो वह स्तब्ध रह गए। उसे थाने पर ही रोक लिया गया। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची।

आवास आवंटन में हो रही हेरा फेरी की शिकायत

कोरांव। जहां एक ओर सरकार ने सबका साथ सबका विकास के तर्ज पर लोगो को विभन्न सुविधाओ से लैस किया जा रहा है जिसमे सबसे महत्वाकांक्षी योजना गरीबों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिया जा रहा है वही दूसरी ओर ग्राम प्रधानों और विभागीय कर्मचारियों के मिलीभगत एवम स्थानीय राजनीति के द्वेषगत भावना से ग्रसित होकर पात्रों को अपात्र और अपात्रो को पात्र कर-के शासन के मंसूबों पर पलीता लगाने का कार्य किया जा रहा है। ऐसा ही एक मामला मेजा ब्लाक अंतर्गत ग्राम सभा चपरो तहसील कोरांव में देखने को मिल रहा है जहां ग्रामीणों ने खंड विकास अधिकारी सपना अवस्थी मेजा से लिखित शिकायत दर्ज कराया की प्रधान और सक्षम अधिकारियों के मिलीभगत से पात्र ग्रामीणों को आवास नही दिया जा रहा है जबकि वह कच्चे मकानों और छप्पर के नीचे रहने को विवश है जिसके कारण लोगो में शासन के प्रति नाराजगी बढ़ रही है जो की आने वाले आगामी चुनावों में सरकार को खामियाजा भुगतना पड़ सकता है।

न्यूज झरोखा

वाराणसी महानगर की प्रभारी बनी वंदना सिंह, कार्यकताओं में हर्ष

सहसों। भाजपा महिला मोर्चा काशी क्षेत्र की मंत्री प्रयागराज निवासिनी वंदना सिंह को महिला मोर्चा काशी क्षेत्र में वाराणसी महानगर जनपद का प्रभारी बनाये जाने पर कार्यकताओं में हर्ष का माहौल है। तेज तर्रार युवा भाजपा नेत्री वंदना सिंह को महत्वपूर्ण जनपद वाराणसी महानगर जो कि प्रधानमंत्री का संसदीय क्षेत्र भी है महिला मोर्चा का प्रभारी बनाया गया है।उनकी यह नियुक्ति काशी क्षेत्र की महिला मोर्चा की अध्यक्ष नम्रता चौरसिया ने की है। जनपद प्रयागराज की मूल निवासिनी व चंद्र शेखर आजाद इंटर कालेज सोरांव में अंग्रेजी की प्रवक्ता वंदना सिंह की नियुक्ति पर गंगापार महिला मोर्चा की पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने हर्ष व्यक्त किया है।. इस अवसर पर जनपद प्रयागराज की महिला मोर्चा गंगापार की अध्यक्ष आरती अग्रवाल सहित महिला मोर्चा की पदाधिकारी सीमा देवी,रीता त्रिपाठी, रंजना परिहार, कंचन पटेल,प्रतिभा मिश्रा,सरिता शर्मा, संगीता पटेल,साधना तिवारी, अर्चना मिश्रा व महालक्ष्मी तिवारी आदि ने उन्हें इस नयी जिम्मेदारी के लिए बधाई दिया।

विद्या कान्त मिश्र हाईकोर्ट के स्थाई अधिवक्ता नियुक्त

कोराव।प्रयागराज। विद्या कान्त मिश्र एडवोकेट उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थाई अधिवक्ता नियुक्त किए गए। श्री मिश्र को अधिवक्ताओं आम जनों वादकारियों ने हार्दिक बधाई दी। बता दें श्री मिश्र निवासी ग्राम पैंतीहा कोरांव प्रयागराज के निवासी हैं। करीब वर्ष २००१ से वकालत पेशे में आए और दिवानी न्यायालय तथा क्रिमिनल केस को देखते आ रहे हैं। श्री मिश्र एडवोकेट चयन सूची में बारहवें नंबर पर हैं। शहजादे पत्रकार तथा ग्राम प्रधान अल्हवा सहित नागरिकों ने विद्या कांत मिश्र के हाईकोर्ट में चयन होने पर हार्दिक बधाई दी हैं।

महिलाओं को वितरित किया गया उज्वला चूल्हा गैस सिलेंडर

करछना। शनिवार को क्षेत्र के भरहा गाव में भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के द्वारा कमल शक्ति संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य सुबोध सिह ने किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि युवा मोर्चे के जिलाध्यक्ष सुधाकर पाडेय ने संबोधित करते हुए कहां की देश और प्रदेश की सरकार गरीबो असहायो के लिए तरह-तरह की योजनाएं चला रही है।हमारे लिए गर्व है कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सदैव महिलाओं के हितों को ध्यान में रखा है। साथ ही उन्हें सम्मान दिलाने के लिए वे सदैव प्रयासरत है। महिलाओं के सम्मान में स्वच्छ भारत मिशन के तहत घर-घर शौचालय, उज्जवला योजना के तहत मुफ्त में गैस सिलेंडर प्रधानमंत्री आवास के साथ गांव स्तर पर भी महिलाओं को सशक्त स्वालंबन के लिए मुख्यधारा से जोड़कर उन्हें प्रत्येक गांव में छोटे-बड़े कई सहायक समूह के माध्यम से स्वरोजगार उपलब्ध कराने का काम किया है।इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष राज कुमार मिश्रा,जय प्रकाश सिह,बृजेश द्विवेदी,अमन मिश्रा,रिंकू सिह,पंकज शुक्ला गोरेलाल सहित बड़ी सख्या मे भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बेहद जरूरी : गंगा प्रसाद मिश्र

मेजा में खंड स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता में मेजा खास का रहा दबदबा

`खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते मुख्य अतिथि

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही बेहतरीन टॉनिक है। बच्चों के स्वास्थ्य के लिए खेल बहुत ही आवश्यक हैं।उक्त बातें ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि मेजा गंगा प्रसाद मिश्र ने मेजा में युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल विभाग के तत्वावधान में आयोजित खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता के अवसर पर कही।उन्होंने कहा कि बच्चा जब बहुत छोटा होता है, तब वह चारपाई पर लेटा हुआ अपने हाथों और पैरों को चलाता रहता है, जिससे उसकी वर्जिश होती है और उसका दूध पच जाता है।श्री मिश्र ने कहा कि खेल बच्चों के जीवन में शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। खेल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करते हैं। यदि हम प्रतिदिन खेल खेलते हैं तो वह हमारे मानसिक कौशल को विकसित करता है। वह हमारे मनोवैज्ञानिक कौशल में भी सुधार लाता है। खेल से हमें प्रेरणा, साहस, अनुशासन और एकाग्रता मिलती है।

खेल संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह संपन्न

खेल संगोष्ठी में सम्मान समारोह में सम्मानित करते मुख्य अतिथि

मेजा। मेजा के टिकुरी समहन गांव मे वालीबाल खेल के मैदान पर खेल संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आयोजक डॉ. देवी सिंह पटेल ;संरक्षक जिला बलिबाल संघ प्रयागराज एवं प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ रहे। कर्यक्रम मे प्रमुख रुप से पूर्व विधायक व पूर्व मंत्री राम सेवक सिंह पटेल उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में हसनउद्दीन सिद्दीकी पूर्व राष्ट्रीय वालीबाल खिलाडी एवं प्रभारी समाजवादी पार्टी स्पोर्ट्स विंग उपस्थित रहे। कर्यक्रम के संयोजक बागेश द्विवेदी क्रीड़ा अध्यापक वालीबालए अनुराग पटेल क्षेत्र पंचायत सदस्य टिकुरीए निवेदक के रूप मे पंकज शुक्ला रहे। डॉण देवी सिंह पटेल ने कहा की इसका उद्देश्य खिलाड़ियों की आवाज उठाना है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर खिलाड़ियों की चयन प्रक्रिया मे अपारदर्शिता पक्षपात एवं प्रतिभा खोज की खामियां हैं। आगे कहा कि खिलाड़ियों पर मानसिक दबाव व मनोवैज्ञानिक प्रोत्साहन की कमीए खिलाड़ियों के समुचित शारीरिक विश्राम की कमीए खिलाड़ियों के मानदेय में भेदभाव सहित तमाम खामियां गिनाते हुए बताया कि 1994 में सपा की सरकार मे मुलायम सिंह यादव ने यश भारती पुरस्कार योजना की शुरूआत की थीए और इस पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये थी। 2006 मे बसपा सरकार में इन पुरस्कारों को बंद कर दिया गया। फिर सपा सरकार आने पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पहल पर ये पुरस्कार शुरू किया गया और पुरस्कार की राशि बढ़ाकर 11 लाख रुपये कर दी गई। वहीं पुरस्कार पाने वाले व्यक्ति को आजीवन 50 हजार रुपये पेंशन दिए जाने का भी प्रावधान किया गया। लेकिन नए पुरस्कारों में सबसे बड़ी राशि केवल 5 लाख रुपये की होगी जो कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर दी जाएगी।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि का क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी शिवम सिंह व टीम ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। बालक वर्ग और बालिका वर्ग के खेलों में 100मीटर,200 मीटर,400 मीटर,800 मीटर,1500 मीटर,3000मीटर की दौड़ और गोला फेंक,डिस्कस थ्रो,कबड्डी और बालीबाल का खेल संपन्न हुआ।संपूर्ण खेलों में मेजा खास का दबदबा कायम रहा।विजेताओं में 100 मीटर की दौड़ में सचिन प्रथम,धनजय द्वितीय और लाल साहब को तीसरा स्थान मिला।इसी प्रकार 200 मीटर में इमरान प्रथम,अमन द्वितीय और प्रदीप तृतीय 400 में अक्षैबर यादव प्रथम, लाल साहब द्वितीय और अभय तृतीय 800 में विवेक प्रथम,दीपक द्वितीय और प्रदीप तृतीय 1500 मीटर में अजय प्रथम,संतोष सोनकर द्वितीय,संदीप तृतीय और 3000 मीटर की दौड़ में अजय गडेवरा प्रथम,लक्ष्मीकांत तिवारी द्वितीय और अखिलेश को तृतीय स्थान से संतोष करना पड़ा।लंबी कूद में आशीष बिंद सिंकी प्रथम,डाक्टर सोनकर मेजा द्वितीय और विवेक आदिवासी मेजा तृतीय डिस्कस थ्रो में अश्वनी सरोज चपरतला प्रथम,सत्येंद्र कुमार मेजा द्वितीय और गोविंद यादव गुनई तृतीय,गोला फेंक में गोविंद यादव गुनई प्रथम,सत्येंद्र सोनकर मेजा द्वितीय और विजय मेजा को तीसरा स्थान मिला।बालिका वर्ग के एक मात्र खेल में 100 मीटर में कोमल बिंद शाहपुर प्रथम,प्रियांशी कुशवाहा भडेवरा द्वितीय और खुशी कुशवाहा भडेवरा को तृतीय स्थान मिला।सभी विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा शील्ड व प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया।

जागरुकता अभियान : संचारी रोगों की निकाली अंतिम यात्रा

प्रधान और सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी की अगुवाई में निकाली गई रैली

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। संचारी रोगों से बचाव और लोगों को जागरुक करने के उद्देश्य से जागरुकता अभियान चलाया गया। आरोग्य केंद्र कल्याणपुर की ग्राम सभा पगुआर में ग्राम प्रधान गुलाब सिंह की अध्यक्षता में संचारी रोगों के रोकथाम को लेकर रैली का आयोजन किया गया, जिसमें संचारी रोगों की अंतिम यात्रा निकाली गई। आरोग्य केंद्र कल्याणपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी अभिषेक जायसवाल ने बताया कि वर्तमान में डेंगू, मलेरिया, टीबी, कोरोना वायरस, फाइलेरिया जैसे कई खतरनाक बीमारियां लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं और यह सभी रोग संक्रामक यानी संचारी रोग हैं।अगर हम सब मिलकर अपनी साफ सफाई की आदतों को बढ़ावा देते हुए, मच्छर पनपने जैसे स्थानों को नियमित रूप से साफ सफाई करें तो निश्चित तौर पर संचारी रोगों से मुक्ति मिल सकती है। बताया कि दो हफ्ते से अधिक खांसी आने पर बलगम की जांच कराएं। समय पर कोविड-19 टीके लगवाएं तथा शुरूआती लक्षण होने पर ही अपने निकटतम सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में दिखाएं।

संचारी रोग से निजात के लिए रैली निकालते

टीवी को जड़ से खत्म करने का लक्ष्य

बताया कि 2025 तक टीवी को जड़ से खत्म करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमें सभी की सहभागिता जरूरी है। इसे उन्होंने कल होने वाले एकता दिवस के आह्वान के तौर पर प्रस्तुत करते हुए सबको मिलकर ऐसा करने पर बल दिया। कहा कि कोरोना वायरस को हराने का एकमात्र अचूक उपाय कोविड टीका करण है। वर्तमान में बुधवार, शनिवार और रविवार को छोडकर प्रत्येक दिवस कहीं न कहीं कोविड टीके लगातार लगाए जा रहे हैं। आशा से संपर्क करके समय पर अपने टीके लगवा कर हम कोरोना को भी दूर भगा सकते हैं।

साफ-सफाई को ली गई शपथ

रैली में उच्च प्राथमिक विद्यालय पगुवार के हेड मास्टर अजय सिंह, ग्राम वार्ड पंचायत सदस्य विजय मिश्र, अमर सिंह, एएनएम राखी सिंह, आशा सुभद्रा सिंह, समाजसेवी शुभम सिंह, चंद्रभान सिंह के अलावा सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी एवं ग्राम जनों ने बढ़ कर हिस्सा लिया तथा संचारी रोगों से लड़ने की शपथ भी ली।रैली में साफ सफाई रखने खुले में शौच को बंद करने एवं व्यक्तिगत के साथ साथ अपने आस पास की साफ सफाई रखने का संदेश देने हेतु विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गयीं।

प्रदेश सह संयोजक ने पदाधिकारियों संग की बैठक

सहसों। भारतीय जनता पार्टी गंगापार शिक्षक प्रकोष्ठ की एक परिचयात्मक बैठक शनिवार को पार्टी कार्यालय त्रिवेणी होटल अंदावां में हुई। जिसमें गंगापार के शिक्षक प्रकोष्ठ के समस्त मंडलों के मंडल संयोजक उपस्थित रहे। मौके पर उपस्थित बतौर मुख्य अतिथि अनिल कुमार श्रीवास्तव प्रदेश सह संयोजक शिक्षक प्रकोष्ठ ने उपस्थित सभी पदाधिकारियों को पार्टी के रीति नीति के बारे में दिशा निर्देशित करते हुए गंगा पार के पांचों विधानसभाओं के प्रभारी को नियुक्त किया। जिसमें फाफामऊ विधानसभा से रामविशाल मिश्रा, सोरांव से डॉक्टर प्रयाग दत्त त्रिपाठी, फूलपुर से चिंतामणि तिवारी, प्रतापपुर से राम जी शुक्ल एवं हंडिया विधानसभा से गोपी कृष्ण तिवारी को विधानसभा प्रभारी नियुक्त किया गया। बैठक की अध्यक्षता भाजपा गंगा पार जिला अध्यक्ष अश्विनी कुमार द्विवेदी ने किया। विशिष्ट अतिथि जिला महामंत्री जीत लाल त्रिपाठी एवं बहादुरपुर ब्लाक के प्रमुख अरुणेन्द्र यादव डब्बू तथा जिला प्रभारी डॉ मनीष श्रीवास्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन जिला संयोजक शिक्षक प्रकोष्ठ रमेश कुमार द्विवेदी ने मुख्य अतिथि सहित समस्त पदाधिकारियों एवं नवनियुक्त प्रभारियों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

पेंशन बहाली को लेकर नलकूप चालकों नें किया धरना प्रदर्शन, सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेस

करछना। पुरानी पेंशन बहाली सहित 1953 ,54से बनी संघ के सदस्यों, की दशकों से लंबित सेवा नियमावली प्रख्यापित कराने विनियमितीकरण के पूर्व की सेवा पेंशनरी लाभ हेतु जोड़ने सहित पांच सूत्रीय मांग पत्र को लेकर किया गया सिंचाई मुख्यालय पर एक दिवसीय धरना जिलाधिकारी प्रयागराज के प्रतिनिधि अपर नगर मजिस्ट्रेट द्वितीय तथा अधिशासी अभियंता नलकूप खंड 2 पय़ागराज के माध्यम से भेजा गया ज्ञापन सिंचाई संघ उत्तर प्रदेश के आवाहन पर आज दिनांक 30 अक्टूबर को पूरे प्रदेश में सिंचाई संघ के सदस्यों ने सिंचाई जनपद मुख्यालय पर एक दिवसीय धरना दिया, अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष चिंतामणि मिश्रा चिंतामणि मिश्रा ने किया ने किया संचालन लालमणि यादव अध्यक्ष द्वितीय ने किया धरने में 5 सूत्री मांग पत्र पर चर्चा की गई जिसमें प्रमुख रूप से पुरानी पेंशन बहाली 1 अप्रैल 5 के पूर्व सेवा में आए बाद में विनीत हुई संघ के सदस्यों उनकी विनियमितीकरण के पूर्व की सेवा सरकारी सेवा मानते हुए पेंशन का लाभ दिए जाने सहित सेवा नियमावली नलकूप चालक शीशपाल सीच पर्यवेक्षक की दशकों से लंबित है उसे प्रख्यापित कराने संघ के सदस्यों की योग्यता सेवा नियमावली में बढ़ाकर वेतन विसंगति दूर करने सहित 5 सूत्री मांग पत्र पर सदस्यों ने अपने विचार रखते हुए सहमति प्रदान की निर्णय लिया गया कि यदि दिनांक 22 नवंबर तक सिंचाई संघ उत्तर प्रदेश के प्रांतीय नेतृत्व से शासन व विभाग द्वारा द्विपक्षीय वार्ता कर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया तो प्रदेश के आम सदस्य दिनांक 30 नवम्बर को सिंचाई मुख्यालय प्रमुख अभियंता एवं विभागाध्यक्ष के कार्यालय के समक्ष एक दिवसीय विशाल धरना एवं प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे। धरने में राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद एवं राज्य कर्मचारी महासंघ के पदाधिकारियों ने भी अपना समर्थन दिया वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए जिनमें सर्वप्रथम राजेश्वर शुक्ला विनोद कुमार पांडे राजेश्वर यादव अखिलेश कुमार राजेंद्र प्रसाद शुक्ला वीरेंद्र प्रताप सिंह भीम सिंह श्याम रामसूरत शुक्ला सुभाष चंद्र पाठी योगेंद्र गोस्वामी सुरेश चंद्र राजेंद्र मौर्य लालमणि यादव अरविंद जगदीश त्रिपाठी गुलाबचंद यादव रामनाथ यादव महाजन दीप्ति अलका अनिल सिंह विनोद कुमार पांडे मेजा अवध बिहारी हरि दर्शन अंजनी अलगू सगीर अहमद आरके सिंह जनपद प्रयागराज के सभी खंडी मंडली उपखंड पदाधिकारियों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।

दबंगों ने पत्रकार पर किया हमला

अखंड भारत संदेश

मुकदमा दर्ज, जांच मे जुटी पुलिस

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के पकरी गांव में मामूली कहासुनी के दौरान दबंगों ने पत्रकार के ऊपर हमला कर मार्केट मे तोड़फोड़? किया। पत्रकार के नामजद तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच में जुटी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जय प्रकाश द्विवेदी निवासी पकरी एक दैनिक अखबार मे पत्रकार हैं। वह अपने गांव के पास जेपी सुपर मार्केट बना रखा है। उन्होंने बताया कि शुक्रवार शाम चार बजे के आसपास मिसिरपुर गांव के कुछ युवक एक युवती को मार पीट रहे थे। जब पत्रकार ने बीच-बचाव किया तो दबंग युवकों ने पत्रकार जयप्रकाश दुबे को धक्का दे दिया और वह जमीन पर गिर पड़े। इस दौरान कहासुनी होने पर बाजार वासियों ने बीच बचाव करते हुए युवक को भगा दिया। कुछ देर बाद सैकड़ों की संख्या में एकत्रित होकर युवक हाथों में लाठी डंडा लेकर मार्केट के ऊपर हमला बोल दिया तथा कई दुकानों के शटर तोड़ डालें और कई दुकानों में लूटपाट भी किया। इस दौरान प्रभात तिवारी के कपड़े की दुकान के गल्ले में रखा 10 हजार रुपया लूट ले गये। पीड़ित के चार पहिया वाहन का शीशा तोड़कर फूंकने का प्रयास करते हुए मां बहन की भद्दी भद्दी गालियां देते हुए उन्हे तथा उनके लड़के अंकित को मारा पीटा। इस दौरान समूचे बाजार में हड़कंप की स्थिति मची रही। पीड़ित ने मामले की जानकारी थाना प्रभारी मेजा अरुण कुमार चतुवेर्दी को दिया। सूचना पर पहुंचे थाना प्रभारी मामले की जांच करते हुए पत्रकार की तहरीर पर दबंग लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में सात के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच में जुट गए।

महीनो से मजदूरी के लिए परेशान है मनरेगा मजदूर

करछना। विकास खंड करछना के अतर्गत ग्राम पंचायतो मे कराये गये कार्य को लेकर लाखो रुपए मजदूरो का भुगतान अधर मे लटका है जिसके चलते दीपावली त्योहार के मद्धेनजर मजदूर काफी परेशान है।एक माह पूर्व बरसात के दिनो ग्राम पचायतो मे नाली सडक खडजा व आवास मे तेजी से कार्य कराया गया था जिसमे बडी सख्या मे मनरेगा मजदूर लगाये गये थे कार्य समाप्त होने के पश्चात उन्हे अभी तक मजदूरी उनके खातो मे नही पहुच सकी।जिसको लेकर जहा एक ओर उनके सामने आर्थिक स्थिति उत्पन्न हो गई है वही दीपावली पर्व भी फीका रह सकता है।ब्लाक सूत्रो से मिली जानकारी के अनुसार शासन द्वारा मनरेगा फण्ड खाते मे धनराशि के अभाव मे भुगतान नही हो सका ।जिससे प्रधानो कीं भी परेशानियां बढ गयी है मनरेगा मजदूर कार्य के बदले मजदूरी के लिए रात दिन चक्कर लगा रहे हैं।

भागीदारी पार्टी में दर्जनों कार्यकताओं ने ली सदस्यता

भागीदारी पार्टी की सदस्यता दिलाते राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव महेश चन्द्रा

फूलपुर। भागीदारी पार्टी के पदाधिकारियों की एक समीक्षा बैठक शनिवार को फूलपुर में पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ज्ञानचंद प्रजापति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। समीक्षा बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव व पूर्व सदस्य पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम डॉक्टर महेश चंद्रा प्रजापति के नेतृत्व में भागीदारी पार्टी की विचारधारा से प्रभावित होकर दर्जनों लोगों ने भाजपा छोड़कर भागीदारी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ज्ञानचंद प्रजापति ने बताया कि भागीदारी संकल्प मोर्चा का महागठबंधन समाजवादी पार्टी के साथ हुआ है। सभी लोग मिलकर 2022 विधानसभा चुनाव में भागीदारी संकल मोर्चा की सरकार बनाकर वंचित समाज, पिछड़े दलित अल्पसंख्यक को हिस्सेदारी देने का करेंगे। उन्होंने बताया कि 30 नवंबर को लक्ष्मी नारायण डिग्री कॉलेज सिरसा में वंचित समाज पिछड़ा दलित अल्पसंख्यक महापंचायत का आयोजन किया गया है। जिसमें भागीदारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद प्रजापति की अध्यक्षता में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव एवं भागीदारी संकल्प मोर्चा के संयोजक, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर भी उपस्थित रहेंगे। भाजपा छोड़कर भागीदारी पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने वाले पदाधिकारियों में मुख्य रूप से वीरेंद्र कुमार भारतीय, सौरव सिंह पटेल, विनोद कुमार प्रजापति, देवेंद्र कुमार उर्फ पप्पू सोनी ,नीरेंद्र कुमार निषाद,करण सिंह, मान सिंह पटेल, राघवेंद्र प्रजापति, उमेश चंद्र प्रजापति, रमा शंकर प्रजापति, रामकुमार प्रजापति, विक्रम निषाद,संतोष सिंह प्रजापति के साथ अन्य लोगों ने भागीदारी पार्टी की सदस्यता ली।

जमीन विवाद को लेकर मारपीट मे 6 पर मुकदमा

करछना। गुरुवार रात क्षेत्र के नौवा गाव मे जमीन विवाद को लेकर एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर जानलेवा हमला कर दिया जिसमे एक ही परिवार के महिला समेत दो लोगो को गंभीर चोटे आई जिसे सीएचसी करछना ले आये जहा स्थिति गंभीर देख डाक्टरो ने जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।सूत्रो के मुताबिक बरांव गाव निवासी ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद ने 2015 मे 6 विस्वा जमीन का बैनामा कराया था जिसमे अभी हाल मे राजस्व और पुलिस टीम की मौजूदमी मे पैमाइश हुई थी।जिसपर ललिता देवी उक्त जमीन पर मकान का निर्माण करा रही थी जिसपर पडोसी बनवारी,रामबाबू,विकास,जयराम राहुल,रोहित ने मिलकर दुर्गा प्रसाद को लाठी डडो से पीटकर घायल कर दिया शोर शराबा सुनकर पत्नी ललिता व बेटी उषा देवी छुडाने पहुची तो हमलावरो ने उनको भी लाठियो से पीटकर घायल कर दिया।धर्मेन्द्र गौतम पुत्र दुर्गा प्रसाद की तहरीर पर पुलिस ने 6 आरोपियो के खिलाफ धारा 147,323 के तहत मुकदमा पजीकृत कर आरोपियो के खिलाफ धर पकड तेज कर दी है।

खबर संक्षेप

राम का राज्याभिषेक होते ही गूंजे जय श्री राम के जयकारे

जंघई। आदर्श नवयुवक रामलीला समिति चनेथू डीह की रामलीला में अंतिम दिन लक्ष्मण शक्ति, मेघनाथ वध, कुंभकर्ण वध, अहिरावण वध, रावण वध के साथ भगवान श्रीराम का राज्यभिषेक किया गया। भगवान की जय-जयकार से वातावरण गुंजायमान हुआ राज्यभिषेक देखने के लिए आसपास के गांवों से भी सैकड़ों लोग आए थे। समापन पर राजगद्दी कार्यक्रम हुआ भगवान राम के स्वरूप को चंदन का तिलक लगाकर उनका राज्यभिषेक किया गया।

अवैध परिवहन में एक ट्रक सीज

लालापुर। लालापुर से घूरपुर की तरह जा रहे अवैध परिवहन ट्रक को चेकिंग के दौरान लालापुर पुलिस टीम सहित अवैध खनन एवं परिवहन करके लदा ओवर लोड गिट्टी ट्रक को थाने लाकर सीज कर दिया थानाध्यक्ष लालापुर मनीष त्रिपाठी ने बताया कि ट्रक को रोक कर वाहन के कागजात चेक किया गया तो कोई वैध कागजात नही दिखा सका जिसको थाना लाकर अवैध परिवहन करने की धाराओं में चालान कर दिया गया।

पति पत्नी ने मिलकर रीता को उतारा था मौत के घाट, गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। टिकरी गांव की रीता की हत्या में मुख्य आरोपी अच्छे लाल गुप्ता और उसकी पत्नी को पुलिस ने शनिवार को गिरफ्तार कर लिया। अच्छे और उसकी पत्नी रागिनी ने दिन में रीता को घर बुलाकर धारदार हथियार से उसकी हत्या कर दी। हत्या के बाद हड्डियों को कई बार तोड़कर लाश को बोरे में भर दिया था। बाद में साइकिल से शव ले जाते हुए ग्रामीणों ने पकड़ा तो अच्छे लाल फरार हो गया था। शनिवार को अच्छे और उसकी पत्नी जुर्म कुबूल करते हुए कहा कि उसे कोई पछतावा नहीं है। रीता ने उनका परिवार तबाह कर दिया था। टिकरी गांव की रीता की 27 अक्टूबर को लाश मिली थी। पड़ोस का अच्छे लाल बोरे को साइकिल के कैरियर में लादकर ले जा रहा था। खून रिसता देख लोगों ने पूछा तो अच्छे लाल शव छोड़कर भाग निकला। बाद में अच्छे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। पता चला था कि अच्छे और रीता मोबाइल पर बात करते थे। रीता के पति ने उसका मोबाइल तोड़ दिया था तो अच्छे ने उसे नया मोबाइल दिला दिया था। पुलिस ने कॉल डीटेल्स निकाला तो पूरे मामले का खुलासा हुआ। शनिवार को पुलिस ने अच्छे लाल और उसकी पत्नी रागिनी गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया।

दिनदहाड़े घर में बुलाकर घटना को दिया था अंजाम

मोबाइल से बात करके बुलाया था घर

एसओ कौंधियारा विनोद कुमार सिंह ने बताया कि कत्ल अच्छे और उसकी पत्नी रागिनी ने मिलकर किया था। दरअसल अच्छे लाल और रीता देवी लगातार फोन पर बात करते थे। मना करने के बाद भी रीता मानने को तैयार नहीं थी। उससे पीछा छुड़ाने के लिए अच्छे ने रीता के परिवार की एक और महिला से बात करना शुरू कर दिया था लेकिन फिर भी वह नहीं मानी।उधर पत्नी रागिनी ने कह दिया था अब या तो रीता जिंदा रहेगी या वह। दोनों ने प्लान बनाने के बाद बुधवार को अच्छे लाल ने रीता को मोबाइल पर कॉल कर घर बुलाया। घर के अंदर ही अच्छे लाल और रागिनी ने रीता को धारदार हथियार से काट दिया फिर हड्डियों को तोड़कर बोरे में भर दिया। पुलिस हिरासत में अच्छे लाल और रागिनी ने कहा कि उन्हें कोई पछतावा नहीं है। रीता की वजह से परिवार तबाह हो गया था।

तीन बच्चे हो गए बेसहारा : कौंधियारा। अच्छे लाल और रागिनी के तीन छोटे छोटे बच्चे हैं। बुधवार के बाद से ही तीनों अपनी बूढ़ी दादी के साथ बेसहारा घूम रहे हैं। बूढ़ी दादी तीनों को लेकर थाने और आस पास दिन भर बैठी रहती है। बच्चों को तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है कि आखिर क्या हो गया कि उनके मां-बाप को पुलिस पकड़ ले गई।

मार कर लाश को ठिकाने लगाने की थी कोशिश

अच्छे लाल और उसकी पत्नी रागिनी ने साइको किलर की तरह रीता की नृशंस हत्या कर दी। कॉल डीटेल्स से पता चला कि रीता लगातार अच्छे लाल से बात कर रही थी लेकिन उसे उसके खौफनाक इरादों की भनक तक नहीं लगी। पुलिस भी मानती है कि हत्या के बाद लाश की हड्डियों को कई टुकड़ों में तोड़ना सामान्य मानसिकता वाले व्यक्ति के बस की बात नहीं। साइको प्रवृत्ति वाले लोग ही इस तरह की नृशंस घटनाएं अंजाम देते हैं। अच्छे लाल ने न सिर्फ खौफनाक ढंग से हत्या की, दिन दहाड़े शव को बोरे में रखकर ठिकाने लगाने के लिए साइकिल से चल दिया। अगर बोरे से खून न टपक रहा होता तो किसी को पता ही नहीं चलता कि रीता कहां गई।

भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा सिरसा मंडल कार्यसमिति की बैठक संपन्न

मेजा रोड। भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा की सिरसा मंडल कार्यसमिति की एक बैठक शनिवार को सिरसा बाजार के शिव गंगा वाटिका में आयोजित की गयी। बैठक में युवा संवाद का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजयुमो काशी क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सचिन गोस्वामी रहे। उन्होंने सूबे में दोबारा भाजपा सरकार बनाने के लिए हर बूथ पर 21 नवजवानों की कमेटी बनाने की बात कही। उन्होंने कहा कि युवा मोर्चा का एक-एक कार्यकर्ता प्रत्येक बूथ पर जाकर लोगों को बताएं की उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार ने भ्रष्टचार मुक्त विकसित माहौल बनाने का काम किया है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि जिला भाजयुमो उपाध्यक्ष विवेकानंद सिंह ' मोनू' रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा सिरसा मंडल अध्यक्ष श्याम राज यादव ने किया।आयोजक भाजयुमो सिरसा मंडल अध्यक्ष सूरज शुक्ल "सत्या" रहे उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि सारे दल को कोई न कोई परिवार ही चलाते हैं और वही सत्ता पाने पर महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करते हैं। लेकिन भाजपा एकमात्र ऐसी पार्टी है जिसका साधारण कार्यकर्ता भी शीर्ष नेतृत्व कर सकता है। उन्होंने युवाओं को भाजपा से जुड़ने की अपील की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से आशीष पटेल, राकेश सेठ, राजा दोगारी, मनीष मिश्रा, राकेश यादव, रोहित तिवारी, अनुराग पटेल, राणा सेठ ,आकाश त्रिपाठी शिवम, धीरज शुक्ला सहित आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

वाणिज्य प्रबंधक प्रथम, द्वितीय ने किया समीक्षा बैठक, आवश्यक दिशा निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शनिवार को अपराह्न 3 बजे वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में मण्डल के समस्त मुख्य माल पर्यवेक्षकों के साथ मण्डल रेल प्रबंधक कार्यालय के संकल्प कक्ष में मीटिंग आयोजित की गयी , मीटिंग का मुख्य उद्देश्य माल भाड़ा एवं यातायात को बढ़ाना, बकाये का निस्तारण करना एवं माल गोदाम से सम्बंधित अन्य प्रमुख मुद्दों का निपटारा किया जाना था ' मण्डल की स्टेशन आउटस्टैंडिंग को कम करने हेतु निर्णय लिया गया कि पार्टियों द्वारा पहले शुल्क जमा किया जाए तभी माफी पर विचार होगा ' सभी मुख्य माल पर्यवेक्षकों को निर्देशित किया गया कि 15 नवम्बर से पूर्व बकाया सम्बन्धी सभी प्रकरणों पर केस-वाइज विस्तृत जानकारी एकत्रित करें तथा मण्डल को प्रेषित करें। सभी मुख्य माल पर्वेक्षकों को बी डी यू से सम्बंधित मीटिंग करने को कहा गया ' मुख्य माल पर्वेक्षक/इरादतगंज ने माल गोदाम में अत्यंत गन्दगी होने की बात बतायी ,इटावा एवं फतेहपुर मालगोदाम में पेय जल की समस्या बताया ,मु.माल निरीक्षक/नैनी द्वारा नैनी गुड्स शेड में बरसात के दौरान जलभराव एवं लोडिंग/अनलोडिंग स्थल असमतल एवं गड्ढे होना बताया गया, जिसके निस्तारण का अस्वासन दिया गया ' उपरोक्त के अतिरिक्त कर्मचारियों की समस्याओं का सुना गया एवं कर्मचारियों के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का निपटारा करने का आश्वासन दिया गया ' सभी कर्मचारीयों को निर्देशित किया गया की आस-पास के रोड ट्रैफिक के पैटर्न के आधार पर रोड ट्रैफिक को रेल ट्रैफिक की ओर लाने का प्रयास करें एवं इस सम्बन्ध में नए आईडिया जैसे किसान रेल आदि हो तो उससे मण्डल को अवगत कराये जिससे की रेलवे की आय बढ़ायी जा सके। मीटिंग में सहायक वाणिज्य प्रबंधक प्रथम, द्वितीय एवं अन्य सम्बंधित निरीक्षकगण भी उपस्थित थे।

समीक्षा बैठक करते वाणिज्य प्रबंधक प्रथम व द्वितीय

भगवान विष्णु किसी न किसी रूप में अवतरित होकर पृथ्वी के भार को कम करते हैं : सुदर्शनाचार्य महाराज

धनूपुर। रामानुजाचार्य हरिप्रपपन्नाचार्य महाराज द्वारा राजराजेश्वरी महाशक्ति पीठ धनूपुर प्रयागराज प्रांगण में आयोजित 19 वां श्री सहस्त्र चण्डी महायज्ञ एवं भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ कथा में पांचवे दिन श्री कृष्ण बाल लीलाओं का वर्णन किया गया। कथा व्यास सुदर्शनाचार्य महाराज ने कहा कि कृष्ण हिन्दू धर्म में विष्णु के अवतार हैं। सनातन धर्म के अनुसार भगवान विष्णु सर्वपापहारी पवित्र और समस्त मनुष्यों को भोग तथा मोक्ष प्रदान करने वाले प्रमुख देवता हैं। जब-जब इस पृथ्वी पर असुर एवं राक्षसों के पापों का आतंक व्याप्त होता है तब-तब भगवान विष्णु किसी किसी रूप में अवतरित होकर पृथ्वी के भार को कम करते हैं। वैसे तो भगवान विष्णु ने अभी तक तेईस अवतारों को धारण किया। इन अवतारों में उनके सबसे महत्वपूर्ण अवतार श्रीराम और श्रीकृष्ण के ही माने जाते हैं। श्री कृष्ण का जन्म क्षत्रिय कुल में राजा यदु कुल के वंश में हुआ था। भागवत भूषण ने कृष्ण जी के जीवन गाथा का विस्तार पूर्वक विवरण कर संगतों को कृष्ण जी के जीवन लीला के बारे में बताया गया।इस अवसर पर आचार्य अशोक कुमार शुक्ल, आचार्य आद्या प्रसाद तिवारी, उपाचार्य मदन गोपाल मिश्रा, आचार्य अंबुज द्विवेदी, ईश्वरचंद्र शुक्ल, आशाराम शुक्ल, मानस भास्कर अनुज महाराज आदि रहे।

संगम घाट पर स्वच्छता अभियान चलाकर हुआ क्लीन इंडिया कार्यक्रम का समापन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शनिवार को नेहरू युवा केंद्र,प्रयागराज एवं प्रोफेसर राजेंद्र सिंह। (रज्जूभैय्या) विश्व विद्यालय,प्रयागराज राष्ट्रीय सेवा योजना एवं के संयुक्त तत्वाधान में सुबह 10:30 बजे संगम घाट पर क्लीन इंडिया के 1 अक्टूबर 2021 को प्रारंभ किए गए माननीय मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर जी युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के क्लीन इंडिया कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम के समापन अवसर पर संस्थान के स्वयंसेवक एवं स्वयं सेविकाओं ने स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत जहां संगम घाट के किनारे पर पहुंचकर स्वच्छता अभियान चलाया। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक डा उपेन्द्र सिंह का पूरा सहयोग रहा। इस कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र,प्रयागराज के युवा अधिकारी सुश्री जागृति पांडेय, डा सच्चिदानन्द त्रिपाठी जिला नोडल अधिकारी एनएसएस ,प्रयागराज एवं कार्यक्रम अधिकारी लाला लक्ष्मी नारायण डिग्री कॉलेज सिरसा,प्रयागराज, सुश्री एषा सिंह डीपीओ नमामि गंगे प्रोजेक्ट, प्रयागराज डॉ पवन कुमार नगरहा श्याम कुमारी पीजी कॉलेज, डॉ जय शंकर तिवारी राधा रमण पीजी कॉलेज,प्रयागराज , निर्मल कांत पांडेय नेहरू युवा केंद्र सहित अन्य गणमान्य लोग इस अभियान में शामिल रहे। इस अवसर पर संगम घाट के आसपास गहन स्वच्छता अभियान भी चलाया गया तथा लगभग 52 किलो सिंगल यूज प्लास्टिक कचरे की छह बोरियाँ में कुल 2 कुंतल कचरा इकट्ठा हुआ। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर राजेंद्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय, प्रयागराज के राष्ट्रीय सेवा योजना एवं नेहरू युवा केंद्र,प्रयागराज के स्वयंसेवकों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

क्लीन इंडिया कार्यक्रम के तहत संगम तट पर चलाया स्वच्छता अभियान

बंद मकान को चोरों ने खंगाला

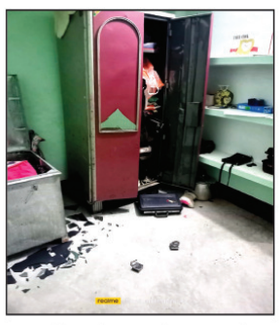

शंकरगढ़। सूरज ढलते ही चोरों ने बंद दरवाजे का ताला तोड़कर घर के अंदर अलमारी व बक्से से लाखों के जेवरात समेत नगदी उठा ले गए।यह घटना शंकरगढ़ नगर पंचायत के वार्ड नंबर 7 मोदीनगर मोहल्ले की है। मोदी नगर निवासी सुनील कुमार सिंह उर्फ विधायक द्वारा की गई शिकायत के मुताबिक वह शुक्रवार की शाम लगभग 6 बजे भोजन करने के लिए अपने गांव तालापार गए थे।रात को लगभग 8 बजे भोजन करके जब वापस आए तो देखा कि दरवाजे का ताला टूटा है तथा दरवाजा खुला है। अंदर जाकर देखा तो अलमारी तथा बक्से का ताला टूटा था व दोनों के सामान बाहर बिखरे थे। गहनता से छानबीन करने पर देखा तो अलमारी में रखा सोने का हार, मनचली, चार अंगूठी, टॉप्स तथा चांदी के कड़धन, बिछुआ, पायल के साथ साठ हजार रुपया गायब था। सुनील की तहरीर पर शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने मौका मुआयना किया और जल्द ही खुलासे का आश्वासन दिया है।

चोर हजारों रुपए के उपकरण उड़ाए

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के गंगापुरम मोहल्ले में चोरों का बोलबाला बढ़ता ही जा रहा है। एक बार फिर चोरों ने इलाकाई पुलिस को खुली चुनौती देते हुए निमार्णाधीन मकान को निशाना बनाते हुए हजारों रुपए के उपकरणों पर हाथ साफ कर दिए। मामले की तहरीर पुलिस को दी गई है। जानकारी के मुताबिक गंगापुरम निवासी डॉः अरुण कुमार शर्मा व सुधीर कुमार शुक्ला अपने-अपने मकानों का निर्माण करा रहे हैं। भुक्तभोगियों के मुताबिक चोर मौका पाते ही रात्रि प्रहर में मकान के अंदर दाखिल हो गए और डॉः अरुण कुमार शर्मा के घर से टुल्लू पंप सहित लोहे के उपकरण समेट गए और सुधीर कुमार शुक्ला के मकान से भी चोरों ने हजारों रुपए के उपकरण चोरी कर फरार हो गए।

नैनी में जम चुकी जुआरियों की महफिल

सुनील गिरि

नैनी। दिवाली में एक बार फिर इलाके के अनेक हिस्सों में जुए की फड़ जम चुकी है। जुआरी बड़ा दांव लगाकर धन कमाने की जुगत में जुट गए हैं। नैनी क्षेत्र के कई स्थानों पर इन दिनों जुआरियों की महफिल सज रही है। जहां प्रतिदिन लाखों का वारा-न्यारा हो रहा है। बताया जाता है कि पुलिस की शह पर कई स्थानों पर सुबह से देर रात तक जुए की फड़ जम रही है। दांव लगाने को बाहर से जुआरियों की फौज आती है। जिसमें बड़े कारोबारी भी शामिल रहते हैं। चल रहे जुए के खेल से स्थानीय लोगों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों की शिकायतों के बावजूद पुलिस कार्यवाही नहीं कर रही है। जो लोगों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है।

यहां सज रही फड़

महेवा, जेल रोड के समीप, डांडी, मामा भांजा तालाब बाजार के समीप, इंदलपुर, गंगोत्री नगर, फ्रेंड्स कॉलोनी, गणपति नगर, पीडीए कॉलोनी, शाह जी का पूरा, देवरख, रेलवे कॉलोनी, छिवकी गांव के समीप, नैनी गांव, पीएसी कॉलोनी के समीप, सरपतहिया, गंजिया, चाका, धनुआ, छिवकी, मुरादपुर, नैनी बाजार, अरैल गांव के

जुआ खिलाने वाले वसूल रहे हैं नाल

समीप बांध रोड के निकट सहित कई स्थानों पर दिवाली से पहले और दिवाली के बाद एकादशी पर्व तक खेल चलता है। इलाकाई पुलिस को पूरी सूचना मुखबिर के जरिए मिलती है। फिर भी कार्रवाई नहीं की जाती है।

ब्याज पर रुपए लेकर खेलते हैं जुआ

नैनी कोतवाली क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर संचालित हो रही है जुआ के इस खेल को जुआरी भारी भरकम ब्याज पर रुपए लेकर भी दांव आजमाते हैं। इतना ही नहीं जुआ में यदि जुआरी हार गया और यदि वह किसी से ब्याज पर रुपए लिए रहते हैं तो उनके पास जो भी उपकरण मौजूद होते हैं। ब्याजखोर उसे अपने कब्जे में लेकर जप्त कर लेते हैं और मूलधन सहित ब्याज का रुपए मिलने पर ही वापस दिए जाते हैं।

जुआ खिलाने वाले वसूल रहे नाल

जुआ खिलाने वालों की पहुंच ऊपर तक बताई जा रही है। जुआ के दौरान 1000 रुपए के दांव पर 150 रुपए प्रति जीत पर वसूली की जाती है। लगातार तीन बार जीतने वाले से 1000 रुपए वसूला जाता है। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रतिदिन संचालित हो रहे फड़ो पर लाखों रुपए की दांव लगता होगा। इस गोरखधंधे की देखरेख को दूरदराज संचालक भी मौजूद रहते हैं। जो जुआरियों को पल-पल की रिपोर्ट देने का काम करते हैं। इस काम के लिए तैनात लोगों को प्रतिदिन 200 से लेकर 500 रुपए तक दिए जाते हैं। इतना ही नहीं यदि इलाकाई पुलिस के अलावा स्पेशल गठित टीम यदि छापेमारी की कार्रवाई करने पहुंचती है तो पटाखे फोड़ कर जुआरियों को सचेत कर दिया जाता है और वह उनकी पकड़ से दूर फरार हो जाते हैं।

सपा बसपा कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए सैकड़ो लोग

जसरा। आज अपने कार्यालय पर बारा विधायक डॉ अजय कुमार ने सैकड़ो लोगों को पार्टी की सदस्यता दिलाई और कार्यकताओं के साथ देश के गृह मंत्री अमित शाह को सुना। आपको बता दें कि भाजपा सदस्यता अभियान का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने आज डिफेंस एक्सपो ग्राउंड लखनऊ में किया और कहा कि पार्टी का लक्ष्य है कि उत्तर प्रदेश में डेढ़ करोड़ नए सदस्य बनाना है।

आज अपने कार्यालय घूरपुर में बारा विधायक डॉ अजय कुमार ने कहा कि योगी सरकार ने जिस तरह से विकास किया है उसका कोई सानी नहीं हैं। परिवारवाद और जातिवाद की राजनीति से हटकर भाजपा की योगी सरकार ने एक नया उत्तर प्रदेश खड़ा किया है। बारा विधायक ने जिन लोगों को सदस्यता दिलाई उसमें मुख्य रूप से प्रकाश चंद यादव, दिनेश कुमार यादव, लक्ष्मीकांत तिवारी, विकास सिंह पटेल, शिव भान भारतीय, श्यामलाल गोबरा, राम मनोहर कुशवाहा, सहित सैकड़ों लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। उधर जिलामंत्री कमलेश त्रिपाठी ने अपने आवास पर अन्य पार्टियों से आए 10 लोगों को भाजपा की सदस्यता दिलाई। सदस्यता अभियान कार्यक्रम में मुख्य रूप से विस्तारक तोयाज पांडे, मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला, वरिष्ठ नेता रामानंद त्रिपाठी, शिव प्रसाद केसरवानी, अंजनी लाल, राम सुफल ओझा, नीरज केसरवानी,आलोक पाठक, सर्वेश पांडे, मोहन यादव, मुन्नू शुक्ला, दीप नारायण भारतीय, बब्बू यादव, अभिषेक शुक्ला, सुबोध जयसवाल, मिश्रीलाल केसरवानी, दिनेश प्रजापति, अनिल भारतीय, भूपेंद्र पाठक, पंकज पांडेय, लल्ला पाठक, क्षेत्र के कई बीडीसी ग्राम प्रधान पूर्व बीडीसी और प्रधान समाजसेवी रहे।

खीरी में टैक्टर एजेंसी का हुआ शुभारम्भ

लेडियारी। कोराव तहसील क्षेत्र के खीरी बाजार में अनमोल ट्रैक्टर के नाम से शनिवार को एक ट्रैक्टर एजेंसी का उद्घाटन किया गया। जिससे आसपास के गांव में खुशी का माहौल है । शनिवार को क्षेत्र के रमाशंकर यादव ने दीप प्रज्वलित कर महिंद्रा कंपनी का अनमोल ट्रैक्टर्स एजेंसी के नाम से उद्घाटन किया ।जिसमें क्षेत्र के तमाम किसान मौजूद रहे। बताते चलें कि खीरी बाजार में पहली बार ट्रैक्टर एजेंसी का उद्घाटन हुआ है। उक्त अवसर पर ट्रैक्टर एजेंसी के मशहूर जानकार अशोक ने उक्त तीन पिस्टन के महिंद्रा ट्रैक्टर्स के विषय में विशेष रुप से किसानों को जानकारी दी ।बताया कि यह ट्रैक्टर्स कम तेल में अधिक काम करेगी। मौके पर अवनीश कुमार केसरवानी ,श्री कृष्ण कुमार केसरवानी ,लालता प्रसाद यादव, कृष्णा कांत मिश्रा, वीरेंद्र कोरी, बलदेव कुशवाहा ,रमेश द्विवेदी समेत दर्जन भर से अधिक लोग मौजूद रहे। उद्घाटन के दौरान कुछ चुनिंदा ग्राहकों के नाम लकी ड्रा भी किया गया ।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा यूपी बोर्ड हाई स्कूल वर्ष 2010 अनुक्रमांक 1852624 व इंटरमीडिएट वर्ष 2012 अनुक्रमांक 1431821 का अंकपत्र सह प्रमाण पत्र वास्तव में कहीं खो गया है।

निर्मल कुमार पुत्र देवेंद्र कुमार
ग्राम जलालपुर पोस्ट
लोकामनपुर, प्रयागराज

बेदखली सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैं कामता प्रसाद पुत्र अंगद राम निवासी कशिया पूर्व थाना कोखराज जनपद कौशांबी अपने छोटे पुत्र रमेश कुमार के कुकृत्य अनैतिक असामाजिक हरकतों से तंग आकर आज दिनांक 30 अक्टूबर 2021 से उसे अपने समस्त चल अचल संपत्ति से और अपने व्यक्तिगत जीवन से उसे बेदखल कर रहा हूं आइंदा भविष्य में उसके द्वारा किए गए किसी कृत्यों की जिम्मेदारी मेरी नहीं होगी वह अपने कृत्यों का स्वयं जिम्मेदार होगा।

कामता प्रसाद पुत्र अंगद राम
निवासी कशिया पूर्व थाना
कोखराज जनपद कौशांबी

इस दिवाली पर मिट्टी के दीयों से रोशन होंगे घर-आंगन

आर.के.शर्मा

मिट्टी के दीयो का है धार्मिक व वैज्ञानिक महत्व, मिट्टी का दीपक जलाने से मंगल और शनि की कृपा प्राप्त होती है और कीटाणुओं का होता है नाश
कुम्हार बड़े पैमाने पर दीया तैयार कर पहुंचा रहे गांवो और बाजारों में, दीया की भारी है मांग

घूरपुर। इस बार की दीवाली में कुम्हारों को उम्मीद हैं कि इस बार की दीपावली में एक बार फिर दीया और बाती का मिलन होगा और लोगों के घर-आँगन मिट्टी के दीये से रोशन होंगे।पीएम मोदी के 'वोकल फार लोकल' की अपील का इस वर्ष जबरदस्त असर पड़ा है।इस दिवाली पर मिट्टी के दीयों से रोशन होंगे घर-आंगन धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक मिट्टी का दीपक जलाने से मंगल और शनि की कृपा प्राप्त होती है। वहीं वैज्ञानिक महत्व के अनुसार कीटाणुओं का नाश होता है। दीपावली को अब कुछ ही दिन रह गए हैं। इसी के साथ ही कुम्हार इस वर्ष बड़े पैमाने पर मिट्टी के दीया तैयार कर गांवो और बाजारों मे ठेले पर लाद पहुंचा रहे हैं।कुम्हारों को उम्मीद है कि दीपावली पर इस बार लोगों के घर आँगन मिट्टी के दीये से रोशन होंगे और उनके कारोबार को दोबारा दुर्दिन नहीं देखने पड़ेंगे। दरअसल पिछले वर्ष चीन के साथ तनाव को देखते हुए सोशल मीडिया पर जमकर चीनी उत्पादों के खिलाफ अभियान चला था। जिसमें दिवाली के मौके पर चाइनीज झालरों के बहिष्कार की भी बात थी। वहीं पीएम मोदी के 'वोकल फार लोकल' की अपील का भी लोगों पर जबरदस्त असर पड़ा और दिवाली के मौके पर दीयों की बिक्री भी जमकर हुई थी। ऐसा लग रहा है कि 'वोकल फॉर लोकल' की अपील का असर इस बार भी लोगों के बीच दिख रहा है और लोग चायनीज झालरों के बजाय मिट्टी के दीयों को प्राथमिकता दे रहे हैं, इससे कुम्हारों में बेहद खुशी है।

फिर मिलेंगे दीया और बाती:

आधुनिकता के इस दौर में भी मिट्टी के दीये की पहचान बरकरार रखने के कारण कुम्हारों के कुछ कमाई की उम्मीद बन गई है। कुम्हारों का कहना है पहले लोग पूजा पाठ के लिए सिर्फ 5, 11 या 21 दीये खरीदते थे। मगर इस वर्ष दिवाली में लोग ने 10 से 15 दर्जन दीये खरीदे रहे है और दीया खरीदने वाले लोगो की संख्या भी इस बार अधिक है। इस बार की दिवाली में कुम्हारों को उम्मीद हैं कि इस बार की दीपावली में एक बार फिर दीया और बाती का मिलन होगा और लोगों के घर-आँगन मिट्टी के दीये से रोशन होंगे।

पटरी पर लौटी कुम्हार की कला:

चाक की तेजी का असर ये है कि बाजार में भी मिट्टी के दीये बिकने के लिए पहुंच गए हैं और लोगों ने अभी से दीयों की खरीदारी भी शुरू कर दी है। चाइनीज झालरों व मोमबत्तियों की चकाचौंध ने दीयों के प्रकाश को गुमनामी के अंधेरे में धकेल दिया था। मगर पिछले दो वर्षों से लोगों की सोच में खासा बदलाव आया और एक बार फिर गाँव की लुप्त होती इस कुम्हारी कला के पटरी पर लौटने के संकेत मिलने लगे हैं। कुम्हारी कला से निर्मित खिलौने, दियाली, सुराही व अन्य मिट्टी के बर्तनों की माँग बढ़ी तो कुम्हारों के चेहरे खिल गए।

इको-फ्रेण्डली:

मिट्टी से निर्मित मूर्तियाँ, दीये व खिलौने पूरी तरह इको-फ्रेंडली होते हैं। इसकी बनावट, रंगाई व पकाने में किसी भी प्रकार का केमिकल प्रयोग नहीं किया जाता है। दीये पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलती है मजबूती

गांव में सदियों से पारंपरिक कला उद्योग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में जहाँ पूरा सहयोग मिलता रहा, वहीं गाँव में रोजगार के अवसर भी खूब रहे। इनमें से ग्रामीण कुम्हारी कला भी एक रही है, जो समाज के एक बड़े वर्ग कुम्हार जाति के लिए रोजी-रोटी का बड़ा सहारा रहा।

दीयों का धार्मिक महत्व:

हिंदू परंपरा में मान्यता है कि मिट्टी का दीपक जलाने से घर में सुख, समृद्धि और शांति का वास होता है। मिट्टी को मंगल ग्रह का प्रतीक माना जाता है। मंगल साहस, पराक्रम में वृद्धि करता है और तेल को शनि का प्रतीक माना जाता है। शनि को न्याय और भाग्य का देवता कहा जाता है। मिट्टी का दीपक जलाने से मंगल और शनि की कृपा प्राप्त होती है। और वैज्ञानिक महत्व है कि तेल का दीपक जलाने से आसपास के कीटाणु मर जाते है।

अखंड भारत संदेश
प्रयागराज, रविवार 31.10.2021

प्रतापगढ़ संदेश

भजन संध्या में भजन व लोकगीतों पर झूमे लोग

नगर पालिका के दीपावली महोत्सव के दूसरे दिन देर रात तक चला कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर के केपी कालेज मैदान में नगर पालिका द्वारा आयोजित दीपावली महोत्सव की दूसरी शाम भजन संध्या के नाम रही जिसमें जिले के ख्याति प्राप्त गायिका आकांक्षा सिंह व समीक्षा सिंह तथा रवि शंकर के भजनों व लोकगीतों पर लोग मंत्रमुग्ध हो गये।

शाम साढे़ पांच बजे से शुरु हुआ कार्यक्रम रात साढे़ आठ बजे तक चलता रहा। प्रारंभ में नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। सरस्वती वंदना के बाद शुरु भजन व लोकगीत का आनंद लोगों ने भरपूर उठाया। इस दौरान नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह को नगर पालिका के ईओ मुदित सिंह ने बुके देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह, जिला खाद्य एवं औषधि अधिकारी वीरेन्द्र कुमार सिंह, आरआई लाल बहादुर सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह, मिथिलेश सिंह, सुरजीत सिंह, अनिल शुक्ला, अशोक शुक्ला, दिनेश राय सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। बता दें कि एक दिन पूर्व इस दीपावली उत्सव का उद्घाटन सांसद संगम लाल गुप्ता ने किया था। यह दीपावली उत्सव एक सप्ताह तक चलने की संभावना है।

खाद्य विभाग की टीम ने खाद्य पदार्थों का लिया नमूना

प्रतापगढ़। खाद्य सचल दल द्वारा जिले के विभिन्न खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर खाद्य पदार्थों का नमूना संग्रहित किया गया जिसमें हीरागंज बाजा? स्थित संजय गुप्ता की मिठाई की दुकान से खाद्य पदार्थ खोया का एक नमूना तथा अशोक मौर्य की मिठाई की दुकान से छेना की मिठाई का एक नमूना संग्रहित किया गया। बाघराय़ स्थित रामबाबू की किराने की दुकान से खाद्य पदार्थ नमकीन का एक नमूना संग्रहित किया गया। इस प्रकार कुल तीन नमूने संग्रहित कर विश्लेषण हेतु खाद्य विश्लेषक प्रयोगशाला को प्रेषित कर दिए गए है। विश्लेषण रिपोर्ट प्राप्त होने के उपरान्त नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जायेगी। प्रवर्तन कार्यवाही दीपावली पर्व तक जारी रहेगी। खाद्य सचल दल में विवेक कुमार तिवारी, संजय कुमार तिवारी एवं जनार्दन सिंह खाद्य सुरक्षा अधिकारीगण उपस्थित रहे।

ट्रेनिग सेंटर कालाकांकर में आवासीय प्रशिक्षण का समापन

अखंड भारत संदेश

परियावां/कालाकांकर/प्रतापगढ़। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन अंतर्गत चार दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण के कुल चार सत्रों का आयोजन क्षेत्रीय ग्राम विकास संस्थान कालाकाकर में पांच अक्टूबर से प्रारंभ होकर शनिवार को सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

प्रशिक्षण में जनपद कौशांबी के विकास खंड नेवादा सरसावा मूरतगंज चायल कडा सिराथू एवं कौशांबी से कुल 135 नव चयनित समूह सखी महिलाओं ने मॉड्यूल-1 का प्रशिक्षण सफलता पूर्वक प्राप्त किया। प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु जिला संदर्भ व्यक्ति श्री कृपा शंकर यादव जनपद मिर्जापुर द्वारा प्रतिभागियों को प्रत्येक सत्र के चारों दिवसों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को जलपान भोजन व प्रशिक्षण किट तथा यात्रा भत्ता वितरित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान संस्थान के आचार्य अनूप कुमार व प्रसार प्रशिक्षण अधिकारी अमर सिंह यादव द्वारा सत्रों का शुभारंभ मार्गदर्शन एवं समापन का कार्य संपादित किया गया एवं वरिष्ठ प्रशिक्षक/सत्र प्रभारी शैलेंद्र सिंह तथा सह प्रभारी दिनेश चंद्र द्वारा प्रशिक्षण सत्रों का संचालन एवं मूल्यांकन समय-समय पर किया जाता है।

कार्यालय आगमन पर प्रदेश सचिव का सपाईयों ने किया अभिनंदन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी कार्यालय आगमन पर प्रमोद मौर्या प्रदेश सचिव, भइ्यारराम पटेल प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य, शायर जनाब शहजादा कलीम राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लोहिया वाहिनी को बुके व माला पहनाकर जोरदार स्वागत अभिनन्दन किया गया।

सपा में ही सर्वसमाज का सम्मान : छविनाथ यादव

तत्पश्चात् नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत अभिनन्दन करते हुए जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जिसमें सर्वसमाज का सम्मान है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव आप सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को बड़ी जिम्मेदारी देते हुए विश्वास जताया है। आप सभी समाजवादी पार्टी को मजबूत करते हुए 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने का काम करेंगे। इस अवसर पर जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, पूर्व विधायक श्याद अली, पूर्व जिलापंचायत सदस्य सुषमा पाल, शबनम बानो, जिला उपाध्यक्ष जगदीश मौर्या, इरफान खान, मो.समीम, संतोष यादव, रामबहादुर पटेल, मनीष पाल, प्रदीप सरोज, राहुल सिंह, राजू यादव, साजिद अली, अमरेन्द्र मौर्या, लालबहादुर यादव, राकेश सरोज, कमलेश मधुकर, उमेश वर्मा, विनोद यादव, राघवेन्द्र चौहान, सचिन शर्मा, विजय यादव, सुरेश यादव, मीडिया प्रभारी वकार अहमद सहित अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

पूर्व बीडीसी की मौत पर अज्ञात चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या की रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। टैंकर की टक्कर से पूर्व बीडीसी सदस्य की मौत को लेकर लालगंज कोतवाली पुलिस ने अज्ञात टैंकर चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। दुर्घटना को लेकर मृतक के भतीजे ने पुलिस को तहरीर दी है। लालगंज कोतवाली के सड़वा सोमवंशियान निवासी राकेश सिंह 45 पुत्र लुरखुर सिंह पूर्व बीडीसी सदस्य थे। वह बीते शुक्रवार की शाम करीब सवा सात बजे साहबगंज मोड से बाइक से सगरा सुंदरपुर की ओर जा रहे थे। इसी दौरान प्रतापगढ़ की ओर जा रहे टैंकर ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे मौके पर ही राकेश की दर्दनाक मौत हो गयी। घटना को लेकर मृतक के भतीजे ऋषभ सिंह पुत्र राजेश सिंह ने पुलिस को अज्ञात टैंकर चालक के खिलाफ तहरीर दी। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि टैंकर को कब्जे मे लिया गया है। तहरीर के आधार पर अज्ञात टैंकर चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है।

स्टेशन पर अदालत में 36 वादों का निस्तारण, 23 हजार की वसूली

रेलवे पर लगी कैम्प कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने आरोपी हुये पेश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शनिवार को प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन पर रेलवे मजिस्ट्रेट कोर्ट कैम्प में रेलवे एक्ट के 36 मामलों का निस्तारण किया गया। आरोपियों से करीब 23 हजार का अर्थ दंड वसूला गया। बिना टिकट यात्रियों की धरपकड़ को ट्रेनों में चले चेकिंग अभियान के दौरान 36 यात्रियों को पकड़ा गया। जिन्हें आरपीएफ ने रेलवे मजिस्ट्रेट की अदालत के समक्ष पेश किया।

जज ने दंड सुनाया। जुर्माना भरने के बाद ही यात्रियों को राहत मिल पाई। न्याय प्रक्रिया में तेजी लाने लोगों को कानूनी समस्याओं से मौके पर ही निजात दिलाने के उद्देश्य से रेलवे की अदालतें स्टेशनों पर ही लगाई जा रही हैं। जिसमें रेलवे एक्ट से संबंधित मामलों का निस्तारण किया जा रहा है। शनिवार को ऐसी ही रेलवे की अदालत स्थानीय स्टेशन पर लगी। जिसमें चेकिंग के दौरान पकड़े गये बिना टिकट यात्रियों और अनाधिकृत वेंडरों को आरपीएफ इंस्पेक्टर सीपी मिश्रा ने रेल मजिस्ट्रेट डॉक्टर उत्सव गौरव राज के समक्ष पेश किया। यहां पर उन्हें जुर्माना लगाया। ये यात्री स्टेशन पर हुई जनता एक्सप्रेस, इंटर सिटी, पंजाब मेल ट्रेनों की चेकिंग में पकड़े गये थे। गौरतलब है कि अगर इस तरह के अभियान चलते रहे तो जागरूकता आएगी। टिकट के साथ यात्रा करेंगे। उन्हें जुर्माना और अदालत का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। रेलवे राजस्व बढ़ेगा। इस दौरान सहायक उपनिरीक्षक राकेश सिंह और डीपी सिंह दलबल के साथ मौजूद थे।

प्रभात एकेडमी में हुई रंगोली प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर क्षेत्र के अष्टभुजा नगर स्थित प्रभात एकेडमी में शनिवार को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन बच्चों के मध्य किया गया। यह प्रतियोगिता चार हाऊस के बीच हुआ, जिसमें नालन्दा, कौशांबी,तक्ष एवं विक्रयशिला शामिल रहे।

प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र छात्राओं ने रंगोली बनाकर अपने हुनर को प्रदर्शित किया।

बच्चों ने अपनी कला का किया प्रदर्शन

बच्चों ने चावल फूल सहित विभिन्न प्रकार एवं रंगों की रंगोली बनाया। जूनियर ग्रुप में आयुष, आयुष्मान, कुश, विराज, शंम्भुल, शुभि, वैश्णवी, श्रेया, श्रद्धा, अंशिका,सन्हा, दीक्षा, आराध्या, प्रियांशी, आर्या, अस्मिता, आदिति, समृद्धि एवं हिमांशु तथा सीनियर ग्रुप से साक्षी, खुशी, यशी, वंशिका, स्वाति, अनमोल, अक्षय, आदित्य, युवराज, प्रज्ञा, जहरा रिजवी, वर्तिका, यशी त्रिपाठी, आराध्या, प्रतिमा आदि जूनियर एवं सीनियर वर्ग के छात्र-छात्राओं ने आकर्षक व प्रेरक रंगोली बनाकर कला कौशल का प्रदर्शन किया। विद्यालय के प्रबंधक डॉ. प्रभात शर्मा ने बताया कि रंगोली हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इसे आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

एकता व अखण्डता के रुप में बच्चों ने मनाई लौह पुरुष पटेल की जयंती

जेएमजी कालाकांकर में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

परियावां/कालाकांकर/प्रतापगढ़। जेएमजी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल कालाकांकर प्रतापगढ़ में शनिवार को जेएमजी परिवार में विद्यालय के प्रधानाचार्य मुनीश शर्मा के दिशा-निर्देशन में सभी छात्र-छात्राओं एवं सभी शिक्षक शिक्षिकाओं ने भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता दिवस के रूप में मनाया।

सभी ने भारतवर्ष की एकता अखंडता एवं सम्प्रभुता की निष्ठा पूर्वक रक्षा करने का संकल्प लिया। विद्यालय के संरक्षक वी एन शुक्ल ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के द्वारा भारत वर्ष के प्रथम गृह मंत्री के रुप में किए अपने अमूल्य योगदान की चर्चा भी की जिनके अथक प्रयासों के कारण ही आज भारत का अखंड स्वरुप हमारे सामने है। विद्यालय परिवार के सभी छात्र-छात्राओं ने एवं सभी सदस्यों ने विशेष असेम्बली में राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को बनाए रखने हेतु सदैव तत्पर रहने के लिए शपथ ग्रहण की। इस कार्यक्रम में कुछ अभिभावकगण भी सम्मिलित हुए। सभी शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने भी अपेक्षित सहयोग किया। प्रधानाचार्य मुनीश शर्मा ने सभी को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों पालन हेतु जागरुक किया।इस मौके पर स्कूल के सभी शिक्षक शिक्षिकाएं मौजूद रही।

घर से गायब हुआ किशोर, परिजनों ने दी तहरीर

पट्टी, प्रतापगढ़। एक किशोर घर से रात्रि ग्यारह बजे गायब हो गया परिजनों द्वारा काफी खोजबीन करने के बाद जब उसका कहीं पता नहीं चला तो थाने में तहरीर देकर गुमशुदगी के लिए तहरीर दी है। कंधई थाना क्षेत्र के मोती लाल पुत्र रामदास ने कन्हई थाना में तहरीर देकर बताया कि उसका परपौत्र अनुज कुमार पुत्र दुर्गा प्रसाद ग्राम जयसिंह गढ़ बीते 27 अक्टूबर को घर से गायब हो गया काफी खोजबीन करने के बाद उसे कुछ पता नहीं चला।

दुष्कर्म के दो आरोपी को 20 वर्ष का कारावास

दो पर लगा 25-25 हजार का जुर्माना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर सत्र न्यायाधीश संतोष कुमार तिवारी ने जानलेवा हमले के आरोपी नीलू उर्फ शर्चीद्र सुत राम अवध व तोते उर्फ विमलेश सुत कपिल देव निवासी गण सोनपुरा थाना आसपुर देवसरा को दोषी पाते हुए प्रत्येक को आजीवन कारावास व पच्चीस-पच्चीस हजार रूपया अर्थदंड से दंडित किया। अर्थदंड की कुल राशि अंकन 50 हजार रुपया घायल कमलेश को प्रतिकर के रूप में देय होगी। वादी मुकदमा त्रिभुवन नाथ उपाध्याय निवासी सोनपुर थाना आसपुर देवसरा ने 6 सितंबर 2000 को थानाध्यक्ष आसपुर देवसरा को प्रार्थना पत्र दिया कि 6 सितंबर 2000 को सुबह लगभग नौ बजे मै काली सहाय सुत राम लखन निवासी सोनपुरा की छान उठाकर घर आ रहे थे कि जैसे ही राममूर्ति सुत श्री पति के पंम्पसेट पर पहुंचे तो नीलू सुत राम अवध व तोते सुत कपिलदेव जो ननिहाल में रहता है ने कट्टे से फायर कर दिया,जिससे कमलेश सुत त्रिलोकी नाथ निवासी सोनपुरा को गंभीर चोटें आई और वह घायल हो कर गिर गया। राज्य की ओर से पैरवी एडीजीसी रविंद्र बहादुर सिंह ने की।

साक्ष्य के अभाव में दो लोग हुए दोषमुक्त

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विशेष नयायाधीश पाक्सो एक्ट पंकज कुमार श्रीवास्तव ने आदर्श पांडेय उर्फ मुनन निवासी रामपुर खागल थाना पट्टी को दुष्कर्म के आरोप में दोषी पाते हुए बीस वर्ष के कारावास व तीन लाख रुपए अर्थदंड से दण्डित किया। तीन लाख रुपया का अस्सी प्रतिशत धनराशि पीड़िता के चिकित्सकीय एवं मानसिक आधार की पूर्ति एवं उसके पुर्नवास हेतु दिया जाएगा।

वादी के अनुसार उसकी पुत्री पीड़िता को उसके पड़ोस के आदर्श पाण्डेय उर्फ मुनन बहला फुसलाकर कर शादी का झांसा देकर शारीरिक संबंध स्थापित किया तथा बाद में शादी से इंकार कर दिया।इस तरह आदर्श पांडेय जानबूझ कर पीड़िता के साथ बराबर दुष्कर्म करता रहा तथा 12 मई 2015 आदर्श पांडेय उर्फ मुनन व उसके पिता ने पीड़िता से शादी करने से इंकार कर दिया। राज्य की ओर से पैरवी एडीजीसी देवेश चंद्र त्रिपाठी व अशोक कुमार तिवारी ने किया। वहीं एक अन्य मामले में विशेष न्यायाधीश पंकज कुमार श्रीवास्तव ने मिथिलेश कुमार निवासी दूबे पुर थाना बाघराय को छेड़खानी के आरोप में दोषी पाते हुए दो वर्ष के कारावास व तीस हजार रुपया अर्थ दंड से दण्डित किया है। राज्य की ओर से पैरवी एडीजीसी निभय्य सिंह ने किया।

वहीं एक और अन्य मामले में विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट पंकज कुमार श्रीवास्तव ने अभियुक्त जर्रार अहमद निवासी गोतनी थाना मानिकपुर को अपहरण व बलात्कार के आरोप में दोषी पाते हुए बीस वर्ष का कठोर कारावास व एक लाख सत्तर हजार रुपया अर्थदंड से दण्डित किया। वादी मुकदमा के अनुसार 3 अक्टूबर 2011 को सुबह चार बजे गांव के जर्रार अहमद अपने अन्य सहयोगी शहनावज, शकील अहमद, आमिर के साथ एक राय होकर उसकी नाबालिग लड़की जो शौच हेतु घर के पीछे गई थी जबरन अपने साथ उठा ले गए तथा वादिनी व उसके परिवार को जान माल की धमकी दी। न्यायालय ने शहनावज व शकील अहमद को साक्ष्य के अभाव में दोष मुक्त कर दिया तथा आमिर का विचारण किशोर न्याय बोर्ड द्वारा किया जा रहा है। राज्य की ओर से पैरवी एडीजीसी देवेन्द्र त्रिपाठी व अशोक तिवारी ने किया।

रोडवेज बस की टक्कर से घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। चौराहे से पैदल घर जा रहे युवक को रोडवेज बस ने जोरदार टक्कर मार दिया। गंभीर रूप से घायल युवक की इलाज के दौरान मौत हो गयी। घटना से परिजनों मे कोहराम मचा है। लालगंज कोतवाली के रायपुर तियांई गांव निवासी गया प्रसाद सरोज 25 पुत्र सीताराम शुक्रवार की शाम घर से पैदल रायपुर तियांई चौराहे गया था। जहां से वह रात करीब नौ बजे पैदल ही वापस घर लौट रहा था। इसी बीच वाराणसी लखनऊ हाइवे पर आ रही रोडवेज बस ने उसे जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी होते ही परिजन उसे इलाज के लिए लालगंज ट्रामा संेटर ले गये। जहां हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने मेडिकल कालेज प्रयागराज के लिए रेफर कर दिया। परिजनों के अनुसार मेडिकल कालेज मे इलाज के दौरान शुक्रवार की देर रात युवक की मौत हो गयी। घटना से परिजनों मे कोहराम मचा है। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर मिलने पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

चोरी के सामान के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार, तमंचा बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना मानिकपुर से उ0नि0 योगेन्द्र सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के देशराज का इनारा, जाखामई रोड के पास से मु0अ0सं0 193/21 धारा 457, 380 भादवि से सम्बन्धित दो अभियुक्तों दिनेश गौतम पुत्र राम अवतार गौतम नि0 शाहूमई थाना मानिकपुर व ज्ञान सिंह सरोज पुत्र हरीश बाबू सरोज नि0 साहूमई थाना मानिकपुर को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से एक अदद तमन्चा 12 बोर, तीन जिन्दा कारतूस 12 बोर व मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित चोरी के विभिनन सामान (कीमत लगभग 10 हजार रू0) बरामद किया गया।

इस संबंध में थाना स्थानीय पर दोनों अभियुक्तों दिनेश गौतम व ज्ञान सिंह सरोज के विरूद्ध क्रमशः मु0अ0सं0 195/21 व 196/21 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट का अभियोग पंजीकृत किया गया।

आठ देशी बम के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

उधर थाना उदयपुर के उ0नि0 पनन लाल यादव मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थानाक्षेत्र के कुरैशी का पुरवा तिराहा के पास से एक व्यक्ति समीम उर्फ ननकुल्ले पुत्र स्व0 अलेमान नि0 कुरैशी का पुरवा, राहाटीकर थाना उदयपुर को आठ देसी बम के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 215/21 धारा 4/5 विष्फोटक अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

भैंस चोरी से बेंचने वाले तीन अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना आसपुर देवसरा से उ0नि0 अमित कुमार चौहान मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0स0 198/21 धारा 379, 411 भादवि से सम्बन्धित तीन वांछित अभियुक्त जंग बहादुर वर्मा पुत्र मथुरा वर्मा, रामसिंह पुत्र रामत वंकल बर्मा व राम चन्द्र वर्मा पुत्र स्व0 रामकृपाल वर्मा निवासीगण गौहानी थाना आसपुर देवसरा को थाना क्षेत्र के पचौरी तिराहा के पास से गिरफ्तार किया गया।

खबर संक्षेप

उमेश कुमार का पीजीटी में चयन होने पर लगा बधाइयों का तांता

कौशाम्बी। जहां चाह होती है वहां राह होती है, इस कथन को एक बार फिर चरितार्थ किया है कसेंदा गांव के एक मध्यम परिवार के रहने वाले उमेश कुमार ने जिनका चयन पीजीटी में राजनैतिक विज्ञान के पद पर हुआ है। यह खबर कसेंदा गांव जैसी ही पहुंची पूरे जिले से बधाई देने वालों का तांता लग गया। उमेश कुमार ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता पिता सगे संबंधियों गुरुजनों को दिया बेहद सामान्य परिवार में जन्मे उमेश कुमार के पिता अर्जुन भारतीय ने बताया कि उन्हें अपने बेटे के इस सफलता पर गर्व है और इससे सिर्फ उनका ही नहीं पूरे गांव का मान बढ़ा है।पूर्व जिला अध्यक्ष कांग्रेस तलत अजीम ने उनके घर पहुंच कर बधाई दी और कहा कि उमेश ने हम सबको गौरवांवित कर दिया है और आने वाले छात्रों के लिए वह आदर्श रहेंगे। इस मौके पर बधाई देने वालो में मुख्य रूप से ग्राम प्रधान सुखलाल यादव,सैफ अजीम, मैहर लाल कनौजिया सरवन यादव, पिंटू भारतीय आरपीएफ, विवेक गौतम, सनी भारतीय, सुरेश भारतीय राम प्रसाद सहित सैकड़ो लोग शामिल रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार दो सगे भाइयों की दर्दनाक मौत

सैनी कोतवाली के पास अनियंत्रित कंटेनर चालक ने बाइक सवारों को रौंदा

हादसे में मृतकों के शव को उठाते पुलिस चौकीदार

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। सैनी कोतवाली से कुछ ही दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग में बाइक सवारों को कन्टेनर ने रौंद दिया है जिससे बाइक सवार दो सगे भाइयों की मौके पर दर्दनाक मौत हो गयी है हादसे के बाद मौके पर राहगीरों की भारी भीड़ लग गयी है सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचकर शव की शिनाख्त करवाकर शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है। जानकारी के अनुसार कड़ा धाम कोतवाली के हब्बूनगर सिपाह निवासी ताराचंद्र तिवारी उम्र लगभग 70 वर्ष अपने छोटे भाई सुभाष चंद्र तिवारी उम्र लगभग 68 वर्ष पुत्रगण शिव दुलारे एक ही मोटरसाइकिल से कानपुर की ओर से सैनी की तरफ आ रहे थे राष्ट्रीय राजमार्ग सैनी में बन रहे ब्रिज वाया मार्ग-सैनी कोतवाली से चंद कदम की दूरी पर प्रयागराज की ओर से कानपुर की तरफ जा रहे कंटेनर ने बाइक सवार भाइयो को रौंद दिया जिससे मौके पर ही दोनों सगे भाइयों की दर्दनाक मौत हो गयी दुर्घटना देख मौके पर राहगीरों की भारी भीड़ लग गयी सूचना पर सैनी कोतवाल तेजबहादुर सिंह उपनिरीक्षक अजहर जमाल मय हमराहियों मौके पर पहुँचे हादसे की खबर परिजनों को देते हुए शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया है वहीं कन्टेनर चालक स्टार्ट गाड़ी को मौके पर छोड़कर फरार हो गया कोतवाली पुलिस कंटेनर को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई में जुट गई है हादसे के बाद रिश्तेदारों परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

डिवाइडर से टकराए बाइक सवार हादसे में दो घायल

कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के कनवार गांव निवासी विमल कुमार अपने साथी के साथ बाइक से मंझनपुर के एक निजी अस्पताल जा रहे थे मंझनपुर के निजी अस्पताल में विमल कुमार की भाभी इलाज चल रहा है जैसे ही विमल कुमार मंझनपुर में पुलिस अधीक्षक कार्यालय से आगे बढ़े कि तेज गति ईरिक्शा चालक ने अनियंत्रित तरीके से उनकी बाइक को ओवरटेक किया ई-रिक्शा से टकरा कर वह डिवाइडर से टकराकर गिर पड़े हादसे में बाइक सवार और उनके साथी को चोटे आई हैं घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है दुर्घटना के बाद ई रिक्शा चालक फरार हो गया है।

सड़क हादसे में दो पत्रकार घायल

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अझुवा कस्बे के रहने वाले पत्रकार अंजनी पांडेय गुरु जी और राहुल भट्ट पत्रकार शुक्रवार को बाइक से इलाहाबाद गए थे दोनों पत्रकार बाइक से वापस शुक्रवार की शाम अझुवा लौट रहे थे जैसे ही बाइक सवार पत्रकार सैनी कोतवाली के कमासिन के पास पहुंचे अचानक सड़क पर नीलगाय आने से बाइक सवार उससे टकरा गए और सड़क पर गिर पड़े इस हादसे में अंजनी पांडेय और राहुल भट्ट को चोटें आई हैं घायलों को इलाज के लिए मंझनपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां राहुल का इलाज चल रहा है और अंजनी पांडेय को प्राथमिक चिकित्सा के बाद चिकित्सकों ने घर जाकर आराम करने की सलाह दी है।

मेहता कालेज में अवकाश ग्रहण फण्ड में अड़सठ लाख रुपये का हुआ भुगतान

कोरोना महामारी से अब तक कर्मचारियों के बकाए भुगतान को निदेशक ने देकर साल पहनाकर किया सम्मान

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी स्थिति भवन्स मेहता विद्याश्रम के अवकाश ग्रहण करने वाले कर्मचारी संतोष कुमार सिंह ओम प्रकाश विश्वनाथ छोटेलाल अनिल शर्मा राम आसरे मेवा लाल ओपी त्रिपाठी के एन यसोधरण आदि कर्मचारियों को निदेशक संदीप सक्सेना ने दीपावली से पहले अवकाश ग्रहण फण्ड में 68 लाख रुपए की रकम वितरित किया है कर्मचारियों को दीपावली त्यौहार से पहले बकाया रकम मिलने से उनमें खुशी का माहौल है भवन्स मेहता के संजय श्रीवास्तव प्रधानाचार्य, अवधेश मिश्रा, राकेश सिंह, सुधाकर सिंह, सुशील श्रीवास्तव, विवेक शंकर चतुवेर्दी, विवेक केशरवानी शिवम केशरवानी, नसीम अहमद, आशीष शर्मा, रजनी श्रीवास्तव, रश्मि पाठक, साहिबा जरीन, दिव्या सिंह, सचिन तिवारी, पूनम सिंह आदि का सम्मान किया गया।

मंझनपुर क्षेत्र का एक अदना सा भाजपा नेता चायल क्षेत्र से ठोक रहा विधायकी की दावेदारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। भाजपा के बढ़ते जनाधार के बीच विधायकी का ख्वाब देखने वालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है आम जनता से दूरी रखने वाले एक अदना सा भाजपा नेता इन दिनों चायल विधानसभा क्षेत्र से विधायक पद का प्रबल दावेदार बन गया है हालांकि पार्टी के नेता उसे टिकट देगे या नहीं यह पार्टी के दिग्गज जाने लेकिन राजनीति के क्षेत्र में उसे एक सांसद का वरदहस्त प्राप्त है जिससे जनता के बीच अपने को आने वाले विधानसभा चुनाव में चायल सीट से विधायक की दावेदारी प्रस्तुत की है चायल सीट से विधायक की दावेदारी प्रस्तुत करने वाला यह भाजपा नेता मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र का निवासी बताया जाता है इतिहास बताता है कि चायल क्षेत्र की जनता ने हमेशा दूसरे क्षेत्र के नेताओं को सबक सिखाई है लेकिन फिर भी दूसरे क्षेत्र के नेता चायल क्षेत्र से प्रतिनिधित्व करने को बेताब है पार्टी के बीच महत्वहीन नेता भी दावेदार है जिसका पार्टी में भी कोई वजूद नहीं है वह भी दावेदार है इतना ही नहीं माफिया और अपराधी भी चायल सीट से विधायक पद के दावेदार हैं पार्टी नेताओं ने तमाम दावेदार नेता को कभी तवज्जो नहीं दिया है लेकिन फिर भी यहां तमाम भाजपा नेता इन दिनों विधायकी के प्रबल दावेदार है विधायकी का ख्वाब दिखाकर मीटिंग वा अन्य कार्यक्रमों में खर्चे की ब्यवस्था दावेदार नेताओं से कराई जा रही है।

चायल क्षेत्र का एक माफिया भी चायल क्षेत्र से विधायकी की दावेदारी के लिए बेताब

अधिकारियों के चश्मे से जिले का विकास देखकर लौट गए नोडल अफसर

निरीक्षण के दौरान तमाम कमी पाए जाने के बाद कार्यवाही करने के बजाए नेताओं की तरह बयान बाजी तक सीमित रहे नोडल अफसर

अस्पताल का निरीक्षण करते नोडल अफसर।

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जनपद के नोडल अधिकारी/प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा श्री सुभाष चन्द्र शर्मा ने विकास कार्यों एवं कर करेत्तर की समीक्षा बैठक में परिवहन, आबकारी, वाणिज्य कर, स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन आदि विभागों के अधिकारियों को लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति लाने एवं संबंधित अधिकारियां को और अधिक प्रवर्तन कार्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने राजस्व वादां के निस्तारण में तेजी लाने के निर्देश दिये। उन्होंने अवैध खनन के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही करने के भी निर्देश दिये।

नोडल अधिकारी ने जनपद में अतिवृष्टि एवं बाढ़ के कारण हुई जनहानि, पशुहानि व फसलां की क्षति की विस्तृत समीक्षा करते हुए सर्वे कराकर शेष रह गये सभी पीड़ितों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि जिन लोगों के मकान गिर गये हैं/क्षतिग्रस्त हुए हैं, उन सभी लोगों के मकानों का पुनर्निमाण/नया आवास दिये जाने की कार्यवाही तेजी से पूर्ण की जाय।

उन्होंने वर्तमान में गंगा नदी में बाढ़ के दृष्टिगत उपजिलाधिकारी सिराथू को फसल की क्षति का आंकलन कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। निर्माण कार्यां में तेजी लाकर पूर्ण कराने के निर्देश सहित अधिशासी अभियंता लो0नि0वि0 को करारी-भरवारी मार्ग का निरीक्षण कर सड़क की मरम्मत कराने के निर्देश दिये। बैठक में जिला पंचायत द्वारा कराये जा रहे कार्यों की समीक्षा के दौरान अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत ने बताया कि लगभग 45 करोड़ धनराशि का बजट उपलब्ध है, जिस पर नोडल अधिकारी ने कार्ययोजना बनाकर विभिन्न निर्माण कार्य कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी अधिकारियों से कहा कि जो भी निर्माण कार्य स्वीकृत हो चुके है तथा धनराशि मिल गयी है, उन सभी कार्यों को तत्काल प्रारम्भ कराया जाय तथा जिन परियोजनाओं में द्वितीय किश्त नहीं मिली है, उन सभी की सूची उपलब्ध करायी जाय। उन्होने कहा कि जो भी निर्माण कार्य पूर्ण हो गये है, उन्हें हैण्डओवर कर लोकार्पण कराया जाय। नोडल अधिकारी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, पेंशन, ओडीओपी, प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी एवं ग्रामीण, दवाओं की उपलब्धता, एम्बुलेन्स की स्थिति एवं आपरेशन कायाकल्प आदि योजनाओं की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में जिलाधिकारी सुजीत कुमार, मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। कौशांबी फोटो नंबर

प्राथमिक विद्यालय समदा का किया निरीक्षण

कौशाम्बी। नोडल अधिकारी ने प्राथमिक विद्यालय समदा, मंझनपुर के निरीक्षण के दौरान शौचालय में गंदगी पाये जाने एवं पानी की टंकी खाली होने पर कड़ी नाराजगी प्रकट करते हुए हेड मास्टर के खिलाफ कठोर कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्हांने उपस्थिति रजिस्टर की जांच एवं अध्यापकों की संख्या की जानकारी तथा बच्चो से पिछले वर्ष मिले बैग, ड्रेस, जूता, मोजा आदि की भी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण एवं भरपेट भोजन देने के निर्देश दिये। उन्होंने खण्ड शिक्षाधिकारियों से नियमित विद्यालयो के निरीक्षण कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने बच्चों को बोर्ड पर लिखने हेतु प्रोत्साहित किया तथा अध्यापकों को बच्चों से नियमित बोर्ड पर लिखने का अभ्यास कराने के निर्देश दिये।

जिला चिकित्सालय का किया निरीक्षण

कौशाम्बी। नोडल अधिकारी ने संयुक्त जिला चिकित्सालय के निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित पाये गये चिकित्सकों से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने अस्पताल में भर्ती मरीजों से वार्ता कर उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उन्हें बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराने एवं अस्पताल एवं परिसर में बेहतर साफ-सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये।

जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक संपन्न हुई बेठक में बताया गया कि जांच के पश्चात 307 के सापेक्ष 300 कैटल शेड में कमी पायी गयी, जिस पर सांसद ने जांच कर कार्यवाही करने एवं मानक के अनुरूप कार्य सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। उन्होने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की विस्तृत समीक्षा करते हुए कुल गठित समूह की संख्या, सक्रिय समूह की संख्या, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा किये जा रहे कार्य एवं उन्हें प्रशिक्षण आदि की जानकारी प्राप्त की।

उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायतों में बनाये गये सामुदायिक शौचालयों को साफ-सुथरा रखा जाय, गन्दगी मिलने की शिकायत न आने पाये। इसके साथ ही उन्होंने सामुदायिक शौचालयों की सूची भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशासी अभियंता लो0नि0वि0 को दुर्गा देवी इंटर कालेज

कलेक्ट्रेट की बैठक में उपस्थित विभिन्न विभागों के अधिकारी

की इमारत का निरीक्षण कर जांच आख्या उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण के तहत ऐसे सभी पात्र लोगो की सूची उपलब्ध करायी जाय जिनके पास भूमि नही है, ताकि उन्हें भूमि उपलब्ध कराकर आवास बनाने की कार्यवाही की जा सके। उन्होंने बृद्धावस्था, विधवा एवं दिव्यांग पेंशन के तहत प्राप्त सभी आवेदन पत्रां का शीघ्र सत्यापन कराकर पात्र लोगां को लाभान्वित करने के निर्देश दिये। बैठक में बताया गया कि गत बैठक में दिये गये निदेर्शानुसार जिन ग्राम पंचायतों की जाचं हेतु अधिकारी नामित किये गये थे, उनमें से कुछ अधिकारियों द्वारा जांच आख्या उपलब्ध नहीं करायी गयी है, जिस पर सासंद ने स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। उन्होंने जल जीवन मिशन के कार्या को तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश दिये। ससुर खदेरी नदी को सरवाइब किये जाने हेतु भूमि संरक्षण अधिकारी के नेतृत्व में टीम गठित कर विस्तृत कार्ययोजना बनाकर उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होने अधिशासी अभियंता विद्युत से जनपद में विद्युत व्यवस्था की विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि पर्याप्त संख्या में ट्रासफार्मर, खम्भा, पावर हाउस, तार एवं ट्रांसफार्मर की क्षमता वृद्धि की मांग शासन से कर लिया जाय। इसके साथ ही उन्होंने जनपद के सभी नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों की विद्युत भूमिगत किये जाने का प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजने के निर्देश दिये। उन्होंने अविद्युतकृत मजरों को चिन्हित कर विद्युतीकरण का कार्य तेजी से कराने के निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि जनपद में जहां भी बिजली के तार घरों के ऊपर हैं। उन्हें चिहिन्त कर शिफ्टिंग करने की कार्यवाही की जाय। उन्होंने कहा कि बिजली दुर्घटना के तहत आर्थिक सहायता से संबंधित सभी प्रकरणों की विस्तृत आख्या एक सप्ताह के अन्दर उन्हें उपलब्ध करायी जाय। उन्होंने कहा कि अगर 12 घण्टे से अधिक बिजली की तार टूटी होने की शिकायत आती है तो अधिशासी अभियंता के विरूद्ध एफ0आई0आर0 दर्ज करायी जाय। बैठक में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को उपलब्ध करायी गयी धनराशि की जानकारी बीमा कर्मचारी से प्राप्त करते हुए निर्देश दिये है कि शासन को पत्र प्रेषित किया जाय कि बिना किसान की सहमति से उसका बीमा किस्त न काटा जाय। उन्होंने कहा कि जितने भी निमार्णाधीन प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है, उन सभी को तत्काल हैण्डओवर करते हुए लोकार्पण कराया जाय। उन्होंने आयुष्मान योजना की समीक्षा के दौरान मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देश दिये कि इस योजना के तहत किन-किन बीमारियां का इलाज किया जाता है, इसकी होर्डिंग जनपद के सभी तहसीलों एंव विकास खण्डों में लगायी जाय, जिससे अधिक से अधिक लोगों को जानकारी हो सके इस अवसर पर अध्यक्षा जिला पंचायत श्रीमती कल्पना सोनकर विधायकगण लाल बहादुर एंव शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, भाजपा जिलाध्यक्षा श्रीमती अनीता त्रिपाठी, जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं मुख्य विकास अधिकारी सहित अन्य सभी अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सड़क निर्माण की जांच करने पहुंचे सहायक अभियंता

कौशांबी। समदा चौराहे से बम्बू पुर नहर की पटरी पर लोक निर्माण विभाग द्वारा सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है जिस पर सड़क निर्माण के मानक पर सवाल खड़े होने लगे शिकायत पर सहायक अभियंता बलदेव पांडेय जूनियर इंजीनियर के साथ सड़क निर्माण की जांच करने मौके पर पहुंचे हैं उन्होंने मौके पर सड़क निर्माण की सामग्रियों की जांच किया जांच के दौरान सड़क निर्माण नियमानुसार पाए जाने पर उन्होंने जांच रिपोर्ट अधिकारियों को प्रेषित कर दी है उन्होंने कहा है कि सड़क के निर्माण में किसी प्रकार की गुणवत्ता से समझौता नहीं किया गया है और सड़क निर्माण के कार्यों से वह पूर्ण संतुष्ट हैं इस मौके पर उन्होंने सड़क निर्माण में लगे ठेकेदार को स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी है कि सड़क का निर्माण मानक के अनुसार कराया जाए किसी प्रकार की हेराफेरी पाई गई तो कठोर कार्रवाई की जाएगी।

दीपावली पर्व सौहार्दपूर्ण मनाने की डीएम ने की अपील

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने दीपावली पर्व को सौहार्दपूर्ण मनाये जाने एवं शान्ति व कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु संबंधित अधिकारियो के साथ कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारियों एवं क्षेत्राधिकारियों से अब तक की गयी तैयारियों की जानकारी प्राप्त करते हुए कहा कि सभी लाइसेंसी पटाखा बिक्रेताओं आदि का सत्यापन करा लिया जाय तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि पटाखों की बिक्री आबादी क्षेत्र में न होने पाये। उन्होंने मिलावटी खाद्य सामग्रियों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने नियुक्त सभी सेक्टर मजिस्ट्रेटों को अपने-अपने क्षेत्र में भ्रमणशील रहने तथा फीडबैक भी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशासी अभियंता विद्युत को सभी जे0ई0 की ड्यूटी लगाकर सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये तथा सभी ई0ओ0 एवं डीपीआरओ को दीपावली पर्व पर विशेष सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को सभी सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में चिकित्सकों की ड्यूटी लगाकर अपर जिलाधिकारी को सूची उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिये। उन्हांने उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों से त्यौहार को आपसी सौहार्दपूर्ण मनाने का आग्रह किया। बैठक में पुलिस अधीक्षक ने सभी क्षेत्राधिकारियों एवं थानाध्यक्षों से विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश

न्यूज झरोखा

चरवा थाना प्रभारी ने चलाया सघन चेकिंग अभियान

इमामगंज कौशाम्बी। जनपद में यातायात के नियमों के पालन हेतु पुलिस अधीक्षक राधेश्याम के निदेर्शानुसार चरवा थाना प्रभारी अरविंद कुमार द्विवेदी ने थाना क्षेत्र में सघन चेकिंग अभियान चलाकर लगभग 60000 रुपए का चालान और समन शुल्क वसूला है, शुक्रवार की शाम चरवा थाना प्रभारी ने थाना क्षेत्र के तेरह मील पर सघन चेकिंग अभियान चलाया, जिससे बिना हेलमेट और तीन सवारी चल रहे बाइक चालकों में हड़कंप मच गया, बाइक चालक इधर-उधर भागते हुए नजर आए, वहीं जो लोग थाना प्रभारी की गिरफ्त में आ गए उनका चालान बनाया गया।

रात्रिकालीन दशहरा मेला एक और दो नवम्बर को

कौशाम्बी। उदहिन बुजुर्ग बाजार में दो दिवसीय रात्रिकालीन दशहरा मेला का आयोजन किया गया है। एक नवम्बर सोमवार एवं दो नवम्बर मंगलवार को उदहिन बुजुर्ग बाजार में यह मेला आयोजित होगा। मेले में कई चौकियां और झांकियां निकाली जाएंगी और लाइट की सुंदर सजावट की जाएगी। इसी के साथ बेहतरीन साउंड सिस्टम और डी जे का भी इंतजाम किया गया है। मेले में हवाई झूला, मनोरंजन के तमाम साधन मौजूद रहेंगे। मेला कमेटी के अध्यक्ष एवं मेला आयोजक अजय सोनी जिला पंचायत सदस्य ने बताया कि मेले में आने वाले सभी दुकानदारों से किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा और बिना किसी भेदभाव के सभी दुकानदारों को जमीन अलॉट की जाएगी। अजय सोनी ने सभी लोगों एवं दुकानदरों को मेला में आने की अपील की है।

विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 45 ग्राम सभा एवं 07 शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से पंचायत स्तर पर संचालित सरकारी योजनाओं के सम्बन्ध मे विषय पर विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतू जागरूक किया गया। जिसमें आठ ब्लॉक के सी0डी0पी0ओ0, आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं एन0जी0ओ0 व समाज सेवी उपस्थित रहे।

निकाली गयी मतदाता जागरूकता रैली

कौशाम्बी। उप जिला निर्वाचन अधिकारी/अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) ने आज दुर्गा देवी इंटर कालेज से मतदाता जागरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह रैली मण्डी समिति से ग्राम-गौरा होकर दुगार्देवी इंटर कालेज तक निकाली गयी। रैली में एन0सी0सी0, एन0एस0एस0 एवं छात्र-छात्राओं द्वारा आमजन को मतदाता सूची में नाम अंकित कराने एवं मतदान करने के प्रति जागरूक किया गया।

धान खरीद केंद्र चालू करने की मांग

कौशांबी। भारतीय किसान यूनियन ने डिप्टी आरएमओ को पत्र देकर जिले में धान खरीद केंद्र जल्द चालू करने की मांग की है किसान नेता नुरुल इस्लाम ने कहा कि केंद्रों में खरीद नही शुरू होने से किसानों के सामने तमाम समस्याएं हैं उन्होंने अनुरोध किया कि प्रत्येक केंद्र पर खरीद हेतु गांव की सूची चस्पा की जाए किसानों के धान खरीद भुगतान की व्यवस्था शीघ्र की जाए अधिकारियों को पत्र देने के पूर्व किसान यूनियन ने मंझनपुर में बैठक कर धान खरीद शुरू कराए जाने की रणनीति बनाई है।

हैंडपंप के आसपास फैली गंदगी से पीने का पानी दूषित

कौशाम्बी। देश में चल रही महामारी कोरोना वायरस का संक्रमण बढ़ता जा रहा है।वही टेडीमेढ के चौराहा में हैंडपंप के आसपास गंदगी फैलने से लोग परेशान हैं जिससे लोगों को दिक्कत हो रही है टेडीमेढ में पीने के पानी का मुख्य स्रोत हैंडपंप है उसके आसपास कीचड़ व गंदगी फैली हुई है। यहां पर नालियां भी पूरी तरह गंदगी से भरी हुई हैं। जिसमें बदबू और मच्छर आसपास भिनभिना रहे हैं। टेडीमेढ के चौराहा के हैंडपंप पर फैली हुई गंदगी से मजबूर होकर उस गंदगी में खड़े होकर लोग पीने का पानी भर कर ले जा रहे हैं। हैंडपंप पर गंदी नाली के पानी का भराव हो रहा है। टेडीमोड़ के रहने वालो का कहना है कि मुख्य जल स्रोत के आसपास गंदगी होने से बीमार होने का अंदेशा बना हुआ है।

वैश्य समुदाय की उपेक्षा भाजपा को पड़ेगी महंगी

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। व्यापारी और वैश्य समुदाय के सहयोग से केंद्र और प्रदेश की सत्ता पाने वाली भारतीय जनता पार्टी के सरकार के कार्यकाल में सबसे अधिक उत्पीड़न वैश्य समाज और व्यापारियों का हुआ है वैश्य समाज के उत्पीड़न में भाजपा के माननीयों और उनके सिपहसालारों का भी अहम योगदान था जिससे वैश्य समाज के लोगों के बीच खासा रोष व्याप्त है बीते 2014 2017 2019 के चुनाव में भाजपा का समर्थन करने वाले वैश्य समाज के लोगों ने 2022 के चुनाव में अभी से किनारा करना शुरू कर दिया है। बताते चलें कि कौशांबी जिले में कुल मतदाताओं में 22% हिस्सा बैश्य समाज का है लेकिन भाजपा को सत्ता तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले वैश्य समुदाय के मतदाता हमेशा भाजपा के माननीयो के निशाने पर रहे हैं जगह जगह पर बैश्य मतदाताओं का उत्पीड़न कार माननीयों ने उन्हें जलील करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है भाजपा के आयोजित कार्यक्रम और सभा स्थल के खर्च में बैश्य समुदाय ने बढ़-चढ़कर सहयोग दिया था लेकिन उसके बाद भी 8 वर्षों से वैश्य समुदाय का शोषण व्यापारियों पर अत्याचार जुल्म ज्यादती अन्य सरकारों की अपेक्षा अधिक बढ़ गई है तमाम निर्दोष वैश्य समाज के लोगों को जेल भिजवाने में माननीयों ने अहम भूमिका निभाई है जो समय का इंतजार कर रहे हैं जिससे बैश्य समुदाय के लोग भाजपा सरकार से किनारा कर रहे हैं बीते चुनाव में जो भाजपा की मीटिंग में आगे आगे दिखाई पड़ रहे थे इस बार वह अन्य दलों के नेताओं के साथ उठते बैठते और समर्थन करते देखे सुने जाते हैं।

101.328 करोड़ धनराशि की ऋण स्वीकृत प्रमाण पत्र किये वितरित

03 हजार 173 लाभार्थियों को स्वीकृत किए गए ऋण

ऋण वितरण कार्यक्रम में उपस्थित लाभार्थी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। बैंक आफ बड़ौदा के सौजन्य से विकास भवन परिसर में आयेजित ग्राहक सम्पर्क पहल कार्यक्रम का फीता काटकर एवं दीप प्रज्ज्वलित कर सांसद ने शुभारम्भ किया गया तथा बैकों एवं सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से संबंधित विभिन्न विभागों द्वारा लगायी गयी स्टालों का अवलोकन किया गया 03 हजार 173 लाभार्थियों को कुल रुपए 101.328 करोड़ धनराशि की ऋण स्वीकृत प्रमाण पत्र वितरित किया गया सांसद ने जनपदवासियों को दीपावली की शुभकामनायें दी। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी जी ने कहा था कि कोई भी संस्था या संगठन ग्राहक की सेवा करके उस पर अनुग्रह नहीं करते है, बल्कि ग्राहक ऐसा करने का अवसर देकर संस्था को अनुगृहित करने का कार्य करता है। ग्राहक संस्था के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मा0 प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत 45 करोड़ लोगां के खाता खोलने का जो सराहनीय कार्य किया है, वह बैंक कर्मियों के अथक परिश्रम व प्रयास का ही परिणाम है। उन्होंने कहा कि जनधन योजना के तहत लाभार्थियों को 05 हजार रुपए एडवांस खाते में हस्तान्तरित किया गया, इसका लाभ आम लोंगों को मिला एवं उन्हें सूदखोरों के उत्पीड़न से छुटकारा मिला। उन्होंने कहा कि जनधन खातों में विभिन्न योजनाओं की सब्सिडी/धनराशि सीधे हस्तान्तरित की जा रही है। उन्होंने कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार ने 08 करोड़ से अधिक लोगां को उज्ज्वला योजना के तहत निःशुल्क गैस कनेक्शन, 11 करोड़ से अधिक लोगों को निःशुल्क शौचालय एवं 03 करोड़ से अधिक लोगों को आवास देने का कार्य किया है। ऐसे ही अनेक योजनाओं से आमजन को लाभान्वित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सभी को निःशुल्क कोविड-19 का टीका लगाया जा रहा है। कोविड के दौरान निःशुल्क राशन का वितरण किया जा रहा है। उन्होंने बैंक कर्मियों से सरकार की मंशा के अनुरूप योजना से समाज में अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को भी लाभान्वित करने की अपेक्षा की। इस अवसर पर अध्यक्षा जिला पंचायत श्रीमती कल्पना सोनकर विधायकगण लाल बहादुर एंव शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल, भाजपा जिलाध्यक्षा श्रीमती अनीता त्रिपाठी, जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य सभी अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

मेंटल हेल्थ की चुनौती

जानें कोरोना और लॉकडाउन का आम जिंदगी पर कैसे पड़ा असर

एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि आत्महत्या के मामलों में 2019 के मुकाबले इस साल 10 फीसदी इजाफा हुआ है। 2020 में आत्महत्या से कुल 153,053 मौतें हुई हैं, जो 1967 के बाद से सबसे ज्यादा हैं। आत्महत्या करने वाले इन लोगों में सबसे ज्यादा संख्या (24.6 फीसदी) दिहाड़ी पर काम करने वालों की है। लॉकडाउन का सबसे मारक प्रभाव इन्हीं लोगों की आजीविका पर पड़ा था। नैशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की ओर से जारी किए गए साल 2020 के दौरान आत्महत्या और दुर्घटना में हुई मौतों के आंकड़े इस लिहाज से भी अहम हैं कि पहली बार इनसे कोरोना के आम लोगों के जीवन और खासकर उनके दिलो-दिमाग पर पड़े असर की पुष्टि होती है। कोरोना महामारी और लॉकडाउन ने सामान्य जीवन को जिस तरह से तहस-नहस कर दिया था, उसे देखते हुए यह आम धारणा थी कि कमजोर दिल-दिमाग वाले लोगों के लिए इसे सहन करना खासा मुश्किल रहा होगा। एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि आत्महत्या के मामलों में 2019 के मुकाबले इस साल 10 फीसदी इजाफा हुआ है। 2020 में आत्महत्या से कुल 153,053 मौतें हुई हैं, जो 1967 के बाद से सबसे ज्यादा हैं। आत्महत्या करने वाले इन लोगों में सबसे ज्यादा संख्या (24.6 फीसदी) दिहाड़ी पर काम करने वालों की है। लॉकडाउन का सबसे मारक प्रभाव इन्हीं लोगों की आजीविका पर पड़ा था। लेकिन अगर पिछले साल के मुकाबले बढ़ोतरी का प्रतिशत देखा जाए तो सबसे ज्यादा प्रभावित तबके के रूप में उभरते हैं स्टूडेंट्स। अमूमन हर साल खुदकुशी करने वालों में स्टूडेंट्स 7-8 फीसदी होते हैं, लेकिन साल 2020 में इनका प्रतिशत 21.2 दर्ज किया गया है।

असल में, लॉकडाउन के कारण जिस तरह से अचानक सारे स्कूल कॉलेज बंद कर दिए गए, उसका बच्चों पर जबर्दस्त असर पड़ा। न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हुई बल्कि स्कूल-कॉलेज का माहौल छूट गया, दोस्तों से मिलना-जुलना बंद हो गया और उनका पूरा जीवन घर की चारदीवारी तक सिमट कर रह गया। 68 दिन लंबे लॉकडाउन के बाद जीवन के अन्य क्षेत्र धीरे-धीरे खुलना शुरू भी हुए, लेकिन स्कूल कॉलेज बंद ही रहे। इस बीच ऑनलाइन क्लास के जरिए पढ़ाई का सिलसिला शुरू भी हुआ तो उन बच्चों की हताशा और बढ़ गई जिनकी डिजिटल उपकरणों तक पहुंच नहीं थी। और, ऐसे स्टूडेंट्स की संख्या कम नहीं थी। शिक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक देश में 2.9 करोड़ स्टूडेंट्स स्मार्टफोन, कंप्यूटर आदि उपकरणों तक पहुंच न होने के चलते पढ़ाई की व्यवस्था से कट गए थे। वैसे इन सबके बीच ही लॉकडाउन का एक पॉजिटिव पहलू यह रहा कि साल 2020 में सड़क हादसों से होने वाली मौतों का आंकड़ा काफी नीचे आया। इस साल सड़क हादसों में कुल 374,397 मौतें हुईं , जो 2019 के मुकाबले 11.1 फीसदी कम है। कुल मिलाकर देखा जाए तो ये आंकड़े एक ऐसी चुनौती से गुजरने के निशान बयां करते हैं जिसका हमें पहले से कोई अंदाजा नहीं था और जिससे हम अभी भी पूरी तरह से मुक्त नहीं हो पाए हैं। बहरहाल, इन आंकड़ों की रोशनी में नीतियों को काट-छांट कर ज्यादा उपयुक्त, ज्यादा सटीक बनाने का काम बेहतर ढंग से हो सकता है।

आकाश प्राइम मिसाइल ने भारतीय सेना की ताकत में कर दिया बड़ा इजाफा

योगेश कुमार गोयल

भारत के लिए यह बड़ी उपलब्धि है कि जो देश अब तक अपनी अधिकांश रक्षा जरूरतें कुछ दूसरे विकसित देशों से आयात करके पूरी करता था, वह अब रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से कदम बढ़ाते हुए दूसरे देशों को सैन्य साजो-सामान निर्यात करने की ओर भी कदम बढ़ा रहा है। उच्च तकनीक वाली मिसाइलों, अत्याधुनिक लड़ाकू विमानों और उच्च कोटि के सैन्य उपकरणों को सेना के तीनों अंगों का अहम हिस्सा बनाए जाने के चलते एक ओर जहां भारत की सैन्य ताकत लगातार बढ़ रही है, वहीं दुश्मन देशों की हर प्रकार की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए भारतीय सेना भी सशक्त हो रही है। इसी कड़ी में पिछले दिनों भारतीय रक्षा अनुसंधान केन्द्र (डीआरडीओ) ने आकाश मिसाइल के नए अपग्रेडेड वर्जन 'आकाश प्राइम का सफल परीक्षण करके सेना को मजबूत बनाने की दिशा में एक और बड़ी सफलता हासिल की। डीआरडीओ द्वारा यह परीक्षण तीव्र गति वाले एक मानवरहित हवाई लक्ष्य को निशाना बनाकर किया गया, जिसे 'आकाश-प्राइम ने सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया। इस अपग्रेडेड आकाश मिसाइल को भारतीय सेना में शामिल किए जाने के बाद निःसंदेह सेना की ताकत में बड़ा इजाफा होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 30 दिसम्बर 2020 को कैबिनेट की बैठक में भारत की स्वदेशी आकाश मिसाइलों का निर्यात करने का निणर्य भी लिया गया था, जिसके बाद अब दुनिया के अन्य देश भी इन मिसाइलों को खरीद सकते हैं। दरअसल ऐसी खबरें आती रही हैं कि फिलीपींस, बेलारूस, मलेशिया, थाईलैंड, यूएई, वियतनाम इत्यादि दुनिया के कुछ देश आकाश मिसाइलों की मारक क्षमता से प्रभावित होकर भारत से ये मिसाइलें खरीदना चाहते हैं।

निश्चित रूप से भारत के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि जो देश अब तक अपनी अधिकांश रक्षा जरूरतें कुछ दूसरे विकसित देशों से आयात करके पूरी करता था, वह अब रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से कदम बढ़ाते हुए दूसरे देशों को सैन्य साजो-सामान निर्यात करने की ओर भी कदम बढ़ा रहा है। आकाश मिसाइल डीआरडीओ द्वारा विकसित और भारत डायनेमिक्स लिमिटेड द्वारा निर्मित एक मध्यम दूरी की मोबाइल सैम (सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल) प्रणाली है, जो 18 हजार फुट तक की ऊंचाई पर 30-80 किलोमीटर दूर तक निशाना लगा सकती है। आकाश मिसाइल के विभिन्न संस्करणों में लड़ाकू जेट, हवा से सतह पर मार करने वाली मिसाइल, क्रूज मिसाइल और बैलिस्टिक मिसाइल जैसे हवाई लक्ष्यों को बेअसर करने की विलक्षण क्षमता है। भारतीय थलसेना और भारतीय वायुसेना में आकाश एमके-1 तथा आकाश एमके-1एस की कई स्क्वाड्रन तो पहले से ही कार्यरत हैं। चीन के साथ सीमा विवाद के दौरान गत वर्ष आकाश मिसाइल के कुछ संस्करणों को लद्दाख में एलएसी पर भी तैनात किया गया था। इसके अलावा भारतीय वायुसेना द्वारा ग्वालियर, जलपाईगुड़ी, तेजपुर, जोरहाट, पुणे एयरबेस पर भी आकाश मिसाइलें तैनात की गई हैं। भारत में अभी तक आकाश मिसाइल के कुल तीन वैरिएंट मौजूद थे, जिनमें 30 किलोमीटर रेंज वाली 'आकाश एमके1, 40 किलोमीटर रेंज वाली 'आकाश एमके1एस और 80 किलोमीटर रेंज की 'आकाश-एनजी मिसाइलें शामिल थीं। अब चौथा संस्करण 'आकाश प्राइम भी आकाश मिसाइलों की इस श्रृंखला में जुड़ गया है। आकाश एमके1 और एमके1एस सभी मौसम में कम, मध्यम और ऊंचाई से प्रवेश करने वाले मध्यम दूरी के हवाई लक्ष्यों के खिलाफ एक वायु रक्षा हथियार प्रणाली (एयर डिफेंस वेपन सिस्टम) है लेकिन आकाश प्राइम मिसाइल को इस तरह से तैयार किया गया है कि यह ऐसी परिस्थितियों से और भी बेहतर तरीके से निपट सके।

21 जुलाई 2021 को आकाश मिसाइल के अपडेटेड वर्जन 'आकाश-एनजी (आकाश न्यू-जनरेशन) का भी सफल परीक्षण किया जा चुका है, जिसे रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल) द्वारा विकसित किया गया और भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) तथा भारत डायनेमिक्स लिमिटेड (बीडीएल) द्वारा इसका उत्पादन किया जा रहा है। सतह से हवा में मार करने वाली भारतीय वायुसेना के लिए बनाई गई 19 फुट लंबी, 720 किलोग्राम वजनी और 1.16 फुट व्यास वाली आकाश-एनजी मिसाइल अपने साथ 60 किलोग्राम वजन के हथियार ले जा सकती है और 20 किलोमीटर की ऊंचाई तक जाकर करीब 60 किलोमीटर दूर स्थित लक्ष्य को भी भेद सकती है। इसकी रेंज 40 से 80 किलोमीटर है। आकाश सीरिज की यह मिसाइल दुश्मन को बचने की तैयारी का कोई अवसर नहीं देती क्योंकि इसकी गति 3.5 मैक अर्थात् 4321 किलोमीटर प्रतिघंटा है यानी यह महज एक सेंकेंड में ही सवा किलोमीटर की दूरी तय करती है। इस मिसाइल को बनाने की अनुमति वर्ष 2016 में मिली थी, जिसमें डुअल पल्स सॉलिड रॉकेट मोटर है, जो इसकी गति को बढ़ाती है। इसके अलावा इसमें एक साथ कई दुश्मन मिसाइलों या विमानों को स्कैन करने के लिए एक्टिव इलैक्ट्रॉनिकली स्कैन्ड ऐरे मल्टी फंक्शन राडार (एमएफआर) लगा है। डीआरडीओ द्वारा अब सतह से हवा में आसानी से अपने लक्ष्य को भेद सकने में सक्षम आकाश मिसाइल के जिस नए संस्करण 'आकाश प्राइम का सफल परीक्षण किया गया है, वह पहले से मौजूद आकाश मिसाइल प्रणाली से कई मायनों में आधुनिक और बेहतर है। 560 सेंटीमीटर लंबी तथा 35 सेंटीमीटर चौड़ी आकाश प्राइम मिसाइल में कई अत्याधुनिक साजो-सामान जोड़े गए हैं और यह मिसाइल 60 किलोग्राम वजन तक के विस्फोटक अपने साथ ले जाने की ताकत रखती है। यह भारत की बेहद शक्तिशाली और तीव्र गति से हमला करने वाली मिसाइल है। आकाश प्राइम में आकाश मिसाइल के पुराने वर्जन में कई महत्वपूर्ण सुधार करते हुए ग्राउंड सिस्टम तथा अत्यधिक ऊंचाई पर जाने के बाद तापमान नियंत्रण के यंत्र को अपग्रेड किया गया है। इसके अलावा रडार, ईओटीएस तथा टेलीमेट्री स्टेशन, मिसाइल ट्रैजेक्टरी और फ्लाइट पैरामीटर्स को भी सुधारा गया है। कुछ रक्षा विश्लेषकों के मुताबिक वास्तव में इसे आकाश एमके1एस को फिर से री-डिजाइन करके तैयार किया गया है, जिसका भारतीय सेना द्वारा पांच बार परीक्षण किया जा चुका है और आज के समय की मांग को देखते हुए आकाश प्राइम पूरी तरह सक्षम है। आकाश प्राइम में स्वदेशी एक्टिव आरएफ सीकर (रेडियो फ्रीक्वेंसी सीकर) लगा है, जो दुश्मन के टारगेट को पहचानने की सटीकता और इसकी मारक क्षमता को बढ़ाता है। आरएफ सीकर यह सुनिश्चित करता है कि मिसाइल जिस लक्ष्य पर दागी गई है, वह हिट हो।आकाश प्राइम मिसाइल अपने लक्ष्य को अधिक सटीक तरीके से भेदने में सक्षम है, जिसमें अधिक ऊंचाई वाले स्थानों में विषम जलवायु परिस्थितियों से निपटने के लिए रडार और ट्रैकिंग के साथ लांच सिस्टम के लिए कई अतिरिक्त फीचर्स भी मौजूद हैं। इनमें -20 डिग्री सेल्सियस से 60 डिग्री सेल्सियस तापमान पर भी बखूबी कार्य करने वाली बैटरियों की सुविधा होगी, जो इन्हें ठंडे मौसम की स्थिति में उपयोग के लिए व्यावहारिक बनाती है, जहां वायु रक्षा प्रणाली को लंबी अवधि के लिए विपरीत जलवायु में तैनात किया जाता है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार आकाश प्राइम 'सख्त ऑनबोर्ड इलैक्ट्रॉनिक सिस्टम के साथ आएगी ताकि यह शून्य से 35-40 डिग्री सेल्सियस नीचे के तापमान पर भी काम कर सके, जो प्रायः जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में सर्दियों में ऊंचाई वाले क्षेत्रों में औसत दैनिक न्यूनतम तापमान होता है। बहरहाल, मौसम की अलग-अलग स्थितियों में लक्ष्य को भेदने की क्षमता से लैस आकाश प्राइम मिसाइल का प्रयोग भारतीय वायुसेना द्वारा दुश्मन के हवाई हमलों से निपटने में किया जाएगा। यह मिसाइल पूरी तरह से गतिशील है और वाहनों के चलते काफिले की रक्षा करने में सक्षम है। यह मिसाइल ज्यादा ऊंचाई वाले ऐसे परिचालन क्षेत्रों में भी लक्ष्य को सटीकता से भेद सकती है, जहां तापमान बहुत कम होता है। दरअसल उच्च ऊंचाई पर कम तापमान वाले वातावरण में विश्वसनीय प्रदर्शन सुनिश्चित करना इस मिसाइल की बड़ी विशेषता है और मिसाइल की इसी विशेषता के कारण भारत के उत्तरी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में सेना की ताकत में वृद्धि होना तय है।

'सरदार उधम पर फिजूल है यह विवाद, ऑस्कर में फिल्म भेजने को लेकर क्यों उठ रहे सवाल

अजय ब्रह्मात्मज

ऑस्कर की 'श्रेष्ठ इंटरनैशनल फीचर फिल्म श्रेणी के लिए भारत से तमिल फिल्म 'कुलंगल (झंते) भेजी जाएगी। इसका शाब्दिक अर्थ है- कंकड़। फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया की इस घोषणा के बाद मीडिया और सोशल मीडिया में विमर्श और विवाद चल रहा है। विवाद का कारण निर्णायक समिति के एक सदस्य इंद्रदीप दासगुप्ता का बयान है, जिसमें उन्होंने 'सरदार उधम को न भेजने का कारण बताया है। उनका कहना है, 'ष्इसमें ब्रिटिश के खिलाफ हमारी नफरत दिखाई गई है। ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में इस नफरत को बनाए रखना सही नहीं है। अधिकांश आलोचकों का मानना है कि इंद्रदीप दास गुप्ता का तर्क अनुचित है और इस आधार पर 'सरदार उधम को ऑस्कर में न भेजना गलत है। यह कहीं न कहीं 'साम्राज्यवादी हैंगओवर है। वास्तव में दासगुप्ता की कही गई बात की संदर्भहीन व्याख्या की जा रही है। 'ब्रिटिश के खिलाफ शब्दों से अधिकांश को यही लगता है कि यह बयान राष्ट्रीय दर्प और एक क्रांतिकारी के योगदान को नजरअंदाज करता है। बहस में निर्णायक समिति के एक और सदस्य सुमित बसु के बयान पर गौर ही नहीं किया गया। इस पर भी बात नहीं हो रही है कि ऑस्कर पुरस्कार में भेजने के लिए चुनी गई तमिल फिल्म 'कुलंगल कैसी है। 'न्यू इंडिया के राष्ट्रवाद और राष्ट्र गौरव के इस दौर में यकीनन इंद्रदीप दासगुप्ता का बयान चलन और फैशन के अनुसार नहीं है। तर्क और व्याख्या करने वालों का ध्यान चुनाव की प्रक्रिया, निर्णायक समिति की सर्वसम्मति और ऑस्कर के लिए भेजी जाने वाली फिल्मों की वास्तविकता पर नहीं है। 1957 से इस श्रेणी में भारतीय फिल्में भेजी जा रही हैं। बीच में अलग-अलग सालों में सात बार ऐसे मौके आए, जब कोई भी फिल्म नहीं भेजी गई। अब तक केवल तीन भारतीय फिल्में नामांकन सूची तक पहुंच पाईं। ये फिल्में हैं 'मदर इंडिया (1958), 'सलाम बॉम्बे (1989) और 'लगान (2002)। अभी तक एक बार भी भारतीय फिल्म पुरस्कृत नहीं हुई है। हम एक किस्म की ऑस्कर ग्रंथि और हीन भावना के शिकार हैं। हर साल ऑस्कर के लिए एक फिल्म चुनी जाती है। उसे लेकर निणर्य आने तक चर्चा होती रहती है।

अमेरिका में ऑस्कर के निर्णायकों के बीच फिल्म के प्रचार और लॉबीइंग के लिए धन जुटाया जाता है। स्वतंत्र निर्माताओं के पास इसके लिए पर्याप्त धन नहीं रहता। यह राशि अनेक बार फिल्म की लागत से ज्यादा होती है। फिल्म के निर्माता-निर्देशक लगभग साढ़े तीन-चार महीनों के इस अभियान में व्यस्त रहते हैं और नतीजा अभी तक निल बटे सननटा ही आया है। बेशक इंटरनैशनल प्रतियोगिताओं में भारतीय फिल्में भेजी जानी चाहिए, इसी सोच के तहत फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया चुनाव के लिए आई तमाम भाषाओं की फिल्मों में से श्रेष्ठ फिल्म का चुनाव करता है। ध्यान रहे, देश की सभी श्रेष्ठ फिल्मों पर विचार नहीं होता। जो निर्माता इस चुनाव के लिए अपनी फिल्में भेजते हैं, उनमें से ही एक का चुनाव किया जाता है। कई बार बेहतरीन फिल्मों के निर्माता-निर्देशक इसे व्यर्थ का शगल मानकर अपनी फिल्म ही नहीं भेजते।

पिछले सालों में निर्णायक समिति के निणर्यों पर कई बार विवाद हुए हैं, लेकिन पहले किसी निर्णायक की कोई टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती थी। इस साल पहली बार दो सदस्यों की संक्षिप्त टिप्पणी सामने आई है। इसमें लोकतांत्रिक पारदर्शिता की झलक तो मिलती है, लेकिन पूरा परिदृश्य सामने नहीं आता। अगर निर्णायक समिति के अध्यक्ष ने सर्वसम्मति से चुनी गई फिल्म 'कुलंगल की घोषणा की है तो बहस के दौरान असहमति और विरोध में कही गई टिप्पणियों पर बात करने की जरूरत ही नहीं बनती। ये उन सदस्यों के व्यक्तिगत विचार हैं। गौरतलब है कि दूसरे सदस्य सुमित बसु के वक्तव्य 'मुझे लगता है कि फिल्म की लंबाई इशू है। जलियांवाला बाग कांड में मौत के घाट उतारे गए लोगों के लिए रियल दर्द को महसूस कराने में काफी वक्त लग गया है पर कोई चर्चा ही नहीं हुई। बाकी 13 सदस्यों की राय बाहर नहीं आई। 'सरदार उधम के प्रति आम दर्शकों की उत्सुकता अधिक होने की वजह यही है कि यह फिल्म 16 अक्टूबर को एक ओटीटी प्लैटफॉर्म पर आ चुकी है। दर्शकों ने इसे देख लिया है। समीक्षकों ने भी इस फिल्म की सराहना की है। इसके निर्देशक शूजित सरकार हैं, जो सफल और संवेदनशील फिल्मों के लोकप्रिय निर्देशक हैं। इसके विपरीत 'कुलंगल अभी मुख्य रूप से फेस्टिवल में दिखाई गई है। देश के कुछ सुधी समीक्षकों ने इसे जरूर देखा है, लेकिन आम दर्शकों के बीच यह फिल्म नहीं पहुंची है। यह युवा निर्देशक पीएस विनोदराज की सीमित बजट की छोटी फिल्म है। यह एक शराबी पति की कहानी है, जो घर से चली गई पतनी की तलाश में अपने सात-आठ वर्षीय बेटे के साथ निकलता है। बदले दौर में इस फिल्म के बाप-बेटे प्रेमचंद की 'कफन कहानी के घीसू और माधव की याद दिलाते हैं। अभाव और अवसाद के दृश्यों के बीच भी निर्देशक अपने मुख्य किरदारों के लिए सहानुभूति नहीं पैदा करता। वह स्थितियों के चित्रण से मनुष्य की प्रकृति जाहिर करता है। निर्णायक समिति के अध्यक्ष शाजी एन करुण ने इस फिल्म की घोषणा के समय कहा है कि 'हम ऐसी फिल्म चुन कर भेज रहे हैं, जिसके नामांकन और पुरस्कृत होने की सर्वाधिक संभावना है। सिनेमाई कंटेंट के साथ इसकी गुणवत्ता पुरस्कार के योग्य है। यह राष्ट्रीय पुरस्कार नहीं है। हमें ऐसी फिल्म चुननी थी, जो 92 देशों की फिल्मों के बीच ध्यान खींचे। ऑस्कर पुरस्कार के निर्णायकों की संवेदना का खयाल रखना जरूरी है। निश्चित ही ऑस्कर की श्रेष्ठ इंटरनैशनल फीचर फिल्म की श्रेणी में भेजी गई तमिल फिल्म 'कुलंगल 2021 की भारत की श्रेष्ठ प्रविष्टि है। 'सरदार उधम के निर्देशक शूजित सरकार ने भी इस फिल्म की तारीफ में कहा है कि 'जिस फिल्म का चुनाव ऑस्कर के लिए हुआ है, वह शानदार फिल्म है। मैं यह इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मैंने यह फिल्म देखी है।

कांग्रेस के पुनर्जीवन की पगबाधा

राजेन्द्र शर्मा

सब कुछ के बावजूद चूंकि कांग्रेस ही देश के पैमाने पर सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी है, उसकी यह कमजोरी देश के पैमाने पर किसी विश्वसनीय विकल्प की संभावनाओं को भी कमजोर करती है। इसलिए, सिर्फ कांग्रेस के अपने हित में ही नहीं, देश के हित में भी यह जरूरी है कि वह नवउदारवाद की वैकल्पिक नीतियों के मंच की ओर बढ़े। ऐतिहासिक किसान आंदोलन ने और उसके गिर्द, मेहनतकशों के बढ़ते ध्रुवीकरण करने इसकी जरूरत और संभावनाओं, दोनों को ही गाढ़े रंग से रेखांकित कर दिया है। अचरज की बात नहीं है कि पंजाब सरकार में पिछले ही महीने हुए उलट-फेर पर कई टिप्पणीकारों ने अपनी इस धारणा को दोहराया था कि कांग्रेस, आत्मघात की प्रवृत्ति से ग्रस्त नजर आती है। विधानसभाई चुनाव से चंद महीने पहले, मुख्यमंत्री बदलने और पंजाब में पहली बार एक दलित को मुख्यमंत्री बनाने के पैंतरे से, कांग्रेस पंजाब में अपनी सरकार बचा पाती है या एक और राज्य में सरकार उसके हाथ से निकल जाती है, यह तो आने वाले वक्त ही बताएगा। लेकिन, इतना तो तय है कि इस कदम से कांग्रेस ने, ऐतिहासिक किसान आंदोलन के पृष्ठ्भूमि में, कम से कम प्रकटतः जीती नजर आती बाजी में, गंभीर अनिश्चितताओं को न्यौत लिया है। इतना ही नहीं, इस उलट-फेर ने जिस तरह से खुद कांग्रेस में चौतरफा असंतोष को तथा राज्य में पार्टी में एक गंभीर व संभावित रूप से घातक विभाजन को भड़काया है, उसे देखते हुए यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस का प्रभावी नेतृत्व, संगठन को संभालने के मामले में एकदम अनाड़ी साबित हो रहा है। इस सब के ऊपर से, पंजाब की हाल की उथल-पुथल ने, जिस तरह से राजस्थान और छत्तीसगढ़ की दोनों अन्य कांग्रेसी सरकारों में अंदरूनी उठा-पटक तथा खींच-तान को नये सिरे से हवा दे दी, वह भी कांग्रेस नेतृत्व की चुनौतियों को ही नहीं, विफलताओं को भी दिखाता है।

अचरज नहीं कि इस संकट के साथ ही, जी-23 कहलाने वाला, कांग्रेस नेताओं का वह ग्रुप भी फिर से हरकत में आ गया, जिसने पिछले साल सामूहिक रूप से एक पत्र लिखकर, कांग्रेस के प्रभावी नेतृत्व की कार्य-पद्घति पर कई सवाल उठाए थे। इस सब के साथ अगर हम मिसाल के तौर पर गोवा में कांग्रेस में बड़ी टूट को और जोड़ लें तो, एक कमोबेश बिखरती हुई पार्टी की ही तस्वीर नजर आती है। इस सब को देखते हुए, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता है कि देश की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी में सब कुछ ठीक होना तो दूर, संकट ही संकट हैं। जाहिर है कि 2019 के आम चुनाव में कांग्रेस की हार की जिम्मेदारी लेते हुए, राहुल गांधी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने के बाद, कांग्रेस में नेतृत्व को लेकर पैदा हुई अनिश्चितता ने, उसकी समस्याएं बढ़ाने का ही काम किया है।

बेशक, इस सब की पृष्ठ्भूमि में और ज्ञात असंतुष्टों के बार-बार मांग करने के बाद बुलाई गई कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में, एक ओर श्रीमती सोनिया गांधी के जोर देकर इसकी याद दिलाने कि 'वह पूर्णकालिक अध्यक्ष' हैं और पार्टी में चुनाव के अगले साल भर चलने वाले कार्यक्रम की घोषणा किए जाने के बाद, असंतोष कुछ थमा जरूर है। लेकिन, इसे कांग्रेस के लिए अस्थायी राहत से ज्यादा नहीं माना जा सकता है। वास्तव में अगले साल के शुरू में होने जा रहे विधानसभाई चुनावों के बाद, राहुल गांधी के दोबारा अध्यक्ष पद संभालने से भी, जिसकी काफी संभावनाएं नजर आती हैं, कांग्रेस के संकट का कोई टिकाऊ हल निकल आएगा, यह मानना मुश्किल है। तो क्या यह समझा जाना चाहिए कि कांग्रेस का वर्तमान संकट केवल या मुख्यतः उसके वर्तमान नेतृत्व की और उसमें भी खासतौर पर ''गांधी परिवार'' परिवार कहलाने वाले नेतृत्व कुल की, सीमाओं-विफलताओं का ही नतीजा है। ऐसा मानने वाले बुद्धिजीवियों की संख्या भी कम नहीं है। इतिहासकार रामचंद्र गुहा जैसे कई बुद्धिजीवी तो गांधी परिवार की मौजूदगी को ही कांग्रेस की सारी समस्याओं की जड़ और उसकी विदाई को सारी समस्याओं का समाधान बताते भी रहे हैं। जी-23 द्वारा उठाए जाने वाले मुद्दे भी घुमा-फिराकर इसी ओर इशारा करते हैं, हालांकि प्रकटतः उनकी मांगें एक व्यवस्थित, कहीं ज्यादा औपचारिक सांगठनिक व्यवस्था की ही लगती हैं, जिन्हें अपने आप में जनतांत्रिक मांगें भी कहा जा सकता है। वास्तव में इनमें कई मांगें ऐसी हैं जिन पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती है और इन्हें पूरा किए जाने के जरिए सांगठनिक व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने से कांग्रेस को कुछ लाभ भी मिल सकता है। निणर्य प्रक्रियाओं को ज्यादा से ज्यादा पारदर्शी व जनतांत्रिक बनाने की तो, खासतौर पर ज्यादा जरूरत है।

लेकिन, अगर कोई यह सोचता है कि जी-23 की मांगें स्वीकार करने से ही या एक प्रभावी नेतृत्व जुटाने समेत, संगठन को चुस्त-दुरुस्त करने से ही, कांग्रेस की मौजूदा समस्याएं हल हो सकती हैं, तो यह उसकी भारी भूल होगी। यह समझना मुश्किल नहीं है कि कांग्रेस आज जिन समस्याओं का सामना कर रही है, उनका संबंध उसके नेतृत्व तथा संगठन की कमजोरियों से उतना नहीं है, जितना उसके जनाधार के घटने और उसके सत्ता से दूर से दूर खिसकते जाने से है। शासक वर्ग से जुड़ी पार्टी के नाते, एक पार्टी के रूप में ही नहीं बल्कि नेतृत्व के साथ भी जो गोंद कांग्रेसियों को चिपकाए रहता था, वह सत्ता से दूरी की इस धूप में सूखता जा रहा है। ऐसे में नेतृत्व से कुछ जायज तो ज्यादा झूठी शिकायतों समेत, तरह-तरह के बहानों से, बिखराव का सिलसिला बढ़ता जा रहा है। इस संदर्भ में सिंधिया, पायलट, सुष्मिता देब, जतिन प्रसाद आदि आदि, राहुल गांधी के नजदीकी माने जाने वाले, अपेक्षाकृत युवा नेताओं का कांग्रेस से अलग होना, विशेष रूप से अर्थपूर्ण है, जिसने कांग्रेस पार्टी के ढांचे को जनतांत्रिक बनाने के राहुल गांधी के बहुचर्चित मिशन को, जो अपनी सारी नेकनीयती के बावजूद, काफी हद तक किताबीपन का मारा हुआ था, अब पूरी तरह अप्रसांगिक ही बना दिया है। इस सिलसिले में इसका जिक्र करना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि जी-23 द्वारा दर्ज कराई गई आपत्तियों में, राहुल गांधी के खासतौर पर युवाओं के संगठनों के नेतृत्व के लिए जनतांत्रिक तरीके से चुनाव कराने पर आपत्तियां भी शामिल थीं। कहने का आशय यह कि सत्ता से दूरी के चलते कांग्रेस में बढ़ते बिखराव को, जनतांत्रिक चुनाव या युवतर नेतृत्व को आगे बढ़ाने जैसे किसी सरल फार्मूले को तो छोड़ें, तमाम सांगठनिक उपायों से भी हल नहीं किया जा सकता है।कांग्रेस के बढ़ते बिखराव का समाधान, उसके जनाधार में बढ़ती गिरावट को रोकने, इस गिरावट को पलटने तथा उसके जन-समर्थन को और बढ़ाने के रास्ते से ही निकल सकता है। और इसका एक ही तरीका है कि जनता के बढ़ते हिस्से, उसे मौजूदा मोदी-शाह निजाम के विकल्प के रूप में देखें, उस पर मौजूदा हालात में बदलाव लाने के लिए भरोसा करने के लिए तैयार हों। बेशक, कांग्रेस का वर्तमान प्रभावी नेतृत्व इस बात को समझता है और खासतौर पर राहुल तथा प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस को लड़ाकू तेवर देने के अपने प्रयासों के जरिए, अपनी ओर से इसके लिए सचेत रूप से प्रयास भी कर रहा है। इस पहलू से वर्तमान कांग्रेसी नेतृत्व, जी-23 की आलोचनाओं न सिर्फ झुठलाता नजर आता है बल्कि खुद जी-23 को अपने जमीनी गतिविधियों व संघर्षों से कटे होने की आलोचनाओं का, जवाब देना पड़ रहा है। इसीलिए, सारे संकटों के बावजूद, कांग्रेस के शीर्ष पर 'गांधी' परिवार का कोई विकल्प दूर-दूर तक नजर नहीं आता है।लेकिन, सिर्फ नेतृत्व के इस लड़ाकू तेवर से भी कांग्रेस, जनता के बढ़ते हिस्से को अपने पीछे लामबंद करने में कामयाब होती नजर नहीं आती है। सत्ताधारी भाजपा से बढ़ते जन-असंतोष के बावजूद, भाजपा से जहां सीधे मुकाबला है वहां भी कांग्रेस, उसे पछाड़ने में समर्थ होती नजर नहीं आती है। विधानसभाई चुनाव के पिछले चक्र में असम का नतीजा, इसका सबूत है। इसकी मुख्य वजह यह है कि अपने नेतृत्व के सारे लड़ाकू तेवर के बावजूद, कांग्रेस नीतियों के स्तर पर मोदी राज का कोई सुसंगत, जनहितकारी विकल्प पेश नहीं कर पा रही है। ऐसा सुसंगत विकल्प तो वह मोदी राज द्वारा लागू की जा रही, अमीरपरस्त नवउदारवादी नीतियों से अलग, एक मेहनतकश-गरीब हितकारी नीतियों के मंच को अपनाने के जरिए ही पेश कर सकती है। लेकिन, जनहित के पहलू से पूरी तरह से दीवालिया हो चुकी नवउदारवादी नीतियों का मोह, इन नीतियों के दीवालियापन को पहचानने और कई ठोस मुद्दों पर इन नीतियों के विरोध में आवाज उठाने के बावजूद, ऐसा मूलगामी नीतिगत मंच अपनाने से कांग्रेस को रोकता है। कांग्रेस की यही दुविधा उसकी असली कमजोरी है। और इस कमजोरी को और भी घातक बनाती है संघ-भाजपा की बहुसंख्यकवाद की तुरुप की काट के लिए हड़बड़ी में कांग्रेस की नरम हिंदुत्व को हथियार बनाने की कोशिशें। ये कोशिशें, मोटे तौर पर सर्वधर्म समभाव की परंपरा में बने रहने के कारण, धर्मनिरपेक्षता का सीधे-सीधे उतना नुकसान नहीं करती हैं, जितना नुकसान संघ-भाजपा के ज्यादा से ज्यादा उग्र होते सांप्रदायिक तेवर की आलोचनाओं को भोंथरा करने तथा उसे वैचारिक वैधता ही प्रदान करने के जरिए करता है

नहीं बदला तालिबान,सिखों को धर्म बदलने का फरमान

अफगानिस्तान के कब्जे के दो माह बाद भी तालिबान का रवैया वही है, जो बीस साल पहले था। खस्ता हाल और भूखे देश को चलाने के लिए उसे मदद चाहिए,वह भी अपनी शर्तों पर। अफगानिस्तान के हालात को लेकर दुनिया भर के देश चिंतित है। सब चाहते हैं कि अफगानिस्तान में विकास हो। बाकी जनता की समस्याएं हल हो। हालात सामान्य हो। लोगों को भरण-पोषण की चीजें उपलब्ध हों। पर अफगानिस्तान पर काबिज अपने एजेंडे से पीछे हटने को तैयार नही हैं।उसका क्रूरता का चेहरा वैसा ही है जैसा बीस साल पहले था। उसने उसपर कोई मुखौटा नहीं लगाया। कोई आवरण नहीं ओढ़ा। उनको दुनिया से अपने लिए मदद चाहिए, वह भी अपनी शर्तों पर ।उन्हें न मानवता से कुछ लेना है, न मानव समाज से अभी रूस ने अफगानिस्तान के मुद्दे पर की मेजबानी की इसमें तालिबान प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत ने भी बात की। भारत ने सहायता का आश्वासन भी दिया। चीन ने युद्धग्रस्त देश अफगानिस्तान को 10 लाख अमेरिकी डॉलर उपलब्ध कराए हैं। तालिबान के प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद ने बताया कि चीन ने यह आर्थिक मदद दी है और मानवीय मदद (विशेष रूप से भोजन और दवाओं के लिए) के तौर पर पांच लाख अमेरिकी डॉलर और उपलब्ध कराने का वादा भी किया है। अफगानिस्तान की आर्थिक हालात ठीक नही हैं। वहां भोजन का संकट हैं। पेट भरने के लिए लोग अपनी बेटियां तक बेच रहे हैं। वहां न जरूरत का समान है, न ठंड से बचने के लिए कपड़े।इस हालात से दुनिया अफगानिस्तान की जनता के बारे में सोच रही है। चिंताकर रही है।किंतु अफगानिस्तान पर काबिज तालिबान का रवैया कुछ और ही कहता है। उनके आचरण से लगता है कि पिछले 20 साल में उन्होंने अपने में कोई बदलाव नहीं किया। उनका एजेंडा वही है। वे कट्टर इस्लामवाद से पीछे हटने को तैयार नहीं है।सत्ता पर कब्जा करने के बाद तालिबान ने मान्यता पाने के लिए सभी धर्मों को साथ लेकर चलने का दावा किया था। लेकिन अब अल्पसंख्यकों के लिए वहां सुरक्षा हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। तालिबान ने वहां रहने वाले सिखों को फरमान जारी करते हुए कहा है कि या तो इस्लाम कुबूल कर लो या फिर देश छोड़ दो। इतना ही नहीं इस्लाम कबूल न करने पर जान से मारने की धमकी दी जारी है। तालिबान ने सत्ता संभालते ही जेल में बंद सभी कैदियों को रिहाकर दिया। अब ये रिहा कैदी उन्हें सजा देने वाले न्यायधीश को खोज रहे हैं। न्यायधीश अपनी जान बचाते घूम रह हैं। अफगानिस्तान से भागी 26 महिला जज ग्रीस में शरण लिए हैं। अफगानिस्तान में तालिबान के आने के बाद लगा था कि चीन पाकिस्तान और रूस तथा आसपास के कुछ इस्लामिक कंट्री उसे तुरंत मान्यता दे देंगे। पाकिस्तान तो इस अभियान के लिए सक्रिय भी हुआ।इतना सब होने के दो माह बाद भी अब तक एक भी देश तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दे सका। इसका सबसे बड़ा कारण यह रहा कि अमेरिका से वार्ता में उसने वायदा किया था कि वह देश में मौजूद सभी संगठनों को साथ लेकर सरकार बनाएगा। अफगानिस्तान से सटे देश चाहते हैं कि अफगानिस्तान में शांति रहे। वहां की जनता को जरूरत की चीज आराम से मिलती रहे ,किंतु यह सब आपके -मेरे चाहने और सोचने से होने वाला नही हैं। उसके लिए तो तालिबान को ही अपने रवैये में परिवर्तन करना होगा।उसे ही अपने को इस योग्य बनाना होगा कि दुनिया स्वयं सहायता के लिए आगे आए।

-अशोक मधुप

शोएब अख्तर ने अफगानिस्तान के मोहम्मद नबी और राशिद खान को किया सलाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान की टीम आईसीसी टी20 विश्व कप 2021 में लगातार तीन दर्ज करके सेमीफाइनल की दहलीज पर पहुंच गई है। पाकिस्तान ने शुक्रवार को टूर्नामेंट के सुपर 12 के ग्रुप 2 के एक रोमांचक मुकाबले में अफगानिस्तान को पांच विकेट से हरा दिया। हालांकि अफगानिस्तान की टीम इस मुकाबले में अंत तक लड़ी। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने हार के बावजूद अफगानिस्तान टीम के जज्बे को सलाम किया है। अख्तर ने अफगानिस्तान के दो दिग्गज खिलाड़ियों राशिद खान और कप्तान मोहम्मद नबी द्वारा दिए गए टीम के प्रति समर्पण को जमकर तारीफ की है। अख्तर ने अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए कहा, 'हमारा पूरा देश आपके बलिदानों और अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए आप जो मदद कर रहे हैं, उसके बारे में जानता है। हम भी आपके बारे में जानते हैं। आप दोनों बहुत ही जोशीले हो। मैं राशिद और नबी के बारे में बात कर रहा था। दोनों खिलाड़ियों को मेरा सलाम है। अफगानिस्तान टीम को मेरा पूरा सपोर्ट। मैं आपके साथ खड़ा हूं। आपने इतने सीमित संसाधनों में शानदार क्रिकेट खेली है। मैच में एक समय ऐसा भी था, जब आप लोगों ने अपने प्रदर्शन से पाकिस्तान को मुश्किल डाला। इसके लिए आपको बहुत-बहुत बधाई। हम आपको एक देश के रूप में, एक राष्ट्र के रूप में बहुत पसंद करते हैं। राशिद और नबी ने शुक्रवार को पाकिस्तान के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया। हालांकि इसके बावजूद टीम को हार का सामना करना पड़ा। कप्तान नबी ने नाबाद 35 रनों की महत्वपूर्ण पारी खेलने के अलावा फखर जमान का विकेट निकाला। वहीं, राशिद खान ने चार ओवर में 26 रन देकर दो विकेट चटकाए। अफगानिस्तान को अपना अगला मुकाबला 31 अक्टूबर को जबकि पाकिस्तान को दो नवंबर को खेलना है।

भारत के खिलाफ न्यूजीलैंड का पलड़ा काफी भारी, 18 साल में एक बार भी कीवी टीम को नहीं हरा पाई टीम इंडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्ल्ड कप के किसी भी फॉर्मेट में भारत का न्यूजीलैंड के खिलाफ अबतक लगभग वैसा ही रिकॉर्ड रहा है, जैसा कि पाकिस्तान का भारत के खिलाफ रहा है। वर्ल्ड कप के किसी भी फॉर्मेट में भारत ने न्यूजीलैंड को पिछली बार उस समय हराया था, जब अटल बिहारी वाजपेयी भारत के प्रधानमंत्री थे और देश में पेट्रोल की कीमत 32 रुपये प्रति लीटर थी।

मौजूदा कप्तान विराट कोहली उस समय काफी युवा थे और भारत अपना पहला टी-20 इंटरनेशनल मैच खेलने से दो साल दूर था। वह साल 2003 का था, जब सौरव गांगुली की कप्तानी वाली भारतीय टीम ने स्टीफन फ्लेमिंग की कप्तानी न्यूजीलैंड की टीम को सेंचुरियन में खेले गए वनडे वर्ल्ड कप के मैच में सात विकेट से मात दी थी। वर्ल्ड कप में भारत का न्यूजीलैंड के खिलाफ वह आखिरी जीत थी और भारत ने उसके बाद से अबतक वर्ल्ड कप के किसी भी फॉर्मेट में न्यूजीलैंड को नहीं हराया है।

भारतीय क्रिकेट टीम यूएई में जारी आईसीसी मेंस टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के अपने दूसरे मुकाबले में एक बार फिर से न्यूजीलैंड से भिड़ने के लिए तैयार है और टीम इंडिया के वर्ल्ड कप के किसी भी फॉर्मेट में न्यूजीलैंड के खिलाफ 18 साल के सूखे को खत्म करने की चुनौती है। दोनों टीमें दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में टूर्नामेंट का अपना दूसरा मुकाबला खेलेगी। पहले मुकाबले में दोनों टीमों को पाकिस्तान ने पराजित किया था। 2003 के वर्ल्ड कप से पहले भारत ने 1987 विश्व कप में न्यूजीलैंड को दो बार घर में हराया था। इसके बाद 1992 विश्व कप में उसे दो बार और 1999 में एक बार हार का सामना करना पड़ा था।

हालांकि 2003 के बाद से विश्व कप में न्यूजीलैंड का भारत ने ज्यादा सामना नहीं किया है। उसके बाद से तीन बार भारत विश्व कप के फॉर्मेट में न्यूजीलैंड से भिड़ा है और तीनों बार उसे हार मिली है। इनमें इंग्लैंड में 2019 वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में मिली हार सबसे ज्यादा दुखदाई है। टी-20 विश्व कप में भारत का न्यूजीलैंड के खिलाफ रिकॉर्ड सही नहीं रहा है। भारत टी-20 विश्व कप में अबतक एक बार भी न्यूजीलैंड को नहीं हरा पाया है। 2007 में भारत को न्यीलैंड से जोहान्सबर्ग में 10 रन से हार का सामना करना पड़ा था जबकि 2016 टी20 वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने भारत को 47 रन से हराया था।

क्विंटन डिकॉक श्रीलंका के खिलाफ मैच में घुटने पर बैठे, बीएलएम मूवमेंट का किया सपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के सलामी बल्लेबाल क्विटन डिकॉक आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में श्रीलंका के खिलाफ मैच के लिए टीम में वापसी पर नस्लवाद के खिलाफ समर्थन करते हुए घुटने के बल बैठे। उन्होंने टीम के पिछले मैच में ऐसा करने से मना करते हुए खुद को चयन के लिए अनुपलब्ध करार दिया था। 'ब्लैक लाइव्स मैटर' अभियान के समर्थन में इस अनुभवी विकेटकीपर के टीम के साथी खिलाड़ियों के साथ दोनों मैदानी अंपायरों ने भी घुटने के बल बैठ कर अपना समर्थन जताया। इससे पहले क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने मंगलवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 वर्ल्ड कप के मैच से पहले 'ब्लैक लाइव्स मैटर' अभियान के समर्थन में खिलाड़ियों को हर मैच से पहले घुटने के बल बैठने का निर्देश दिया था। इस निर्देश के बाद टीम में विवाद हो गया था और डिकॉक ने इसे मानने से इंकार करते हुए गत चैम्पियन वेस्टइंडीज के खिलाफ मैच नहीं खेलने का फैसला किया था। डिकॉक ने हालांकि गुरुवार को टी-20 वर्ल्ड कप के बाकी बचे मैचों के लिये स्वयं को उपलब्ध रखते हुए कहा कि यदि उनके घुटने के बल बैठने से दूसरों को शिक्षित करने में मदद मिलती है तो उन्हें इसमें दिक्कत नहीं है। डिकॉक ने कहा कि इससे पहले इस तरह बैठने से इनकार करने पर उन्हें नस्लवादी कहा गया जिससे उन्हें काफी पीड़ा पहुंची।

ट्रेंट बोल्ट को उम्मीद, भारत के खिलाफ शाहीन अफरीदी जैसी बॉलिंग कर पाएंगे

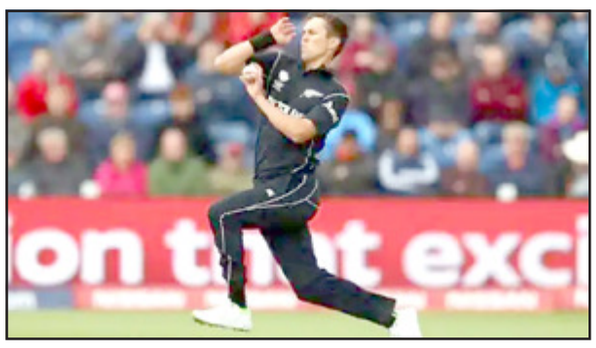

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के प्रमुख तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट ने उम्मीद जताई है कि आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में रविवार को अहम मुकाबले में वे बाएं हाथ के तेज गेंदबाजों के खिलाफ भारतीय बल्लेबाजों की कमजोरी का फायदा उसी तरह से उठा सकेंगे, जैसा शाहीन शाह अफरीदी ने किया था। पाकिस्तान के 21 साल के शाहीन ने अपने शुरुआती दो ओवरों में रोहित शर्मा और लोकेश राहुल के विकेट चटकाए थे। पाकिस्तान ने बीते रविवार को खेले गए इस मैच को 10 विकेट से जीता था। भारतीय टॉप ऑर्डर को बाएं हाथ के तेज गेंदबाज के खिलाफ आउट होते हुए देखने के बाद बोल्ट दोनों देशों के बीच नॉकआउट जैसे मैच में वैसा ही प्रदर्शन करना चाहते है।भारत के खिलाफ मैच से पहले बोल्ट ने कहा, ''उस दिन शाहीन ने जिस तरह से गेंदबाजी की, एक बाएं हाथ के गेंदबाज के तौर पर उसे देखना मेरा लिए अद्भुत था। मेरी गेंद भी थोड़ी स्विंग करती है और उस दृष्टिकोण से मुझे उम्मीद है कि मैं वही कर सकता हूं जो शाहीन ने उस रात किया था।'' बोल्ट भी कई बार भारतीय बल्लेबाजों को परेशान कर चुके हैं, जिसमें 2019 वनडे वर्ल्ड कप का सेमीफाइनल मैच भी शामिल है। इस मुकाबले में उन्होंने कप्तान विराट कोहली को चलता किया था, जबकि उनके साथी तेज गेंदबाज मैट हेनरी ने रोहित और राहुल को पवेलियन की राह दिखाई थी, जिससे 240 रन के लक्ष्य का पीछा करते समय भारत का स्कोर पांच रन पर तीन विकेट हो गया था।बोल्ट ने कहा, ''भारत के पास शानदार बल्लेबाज है, ऐसे में बॉलिंग यूनिट के तौर पर हमारे लिए पारी की शुरुआत में विकेट लेना जरूरी है।'' टूर्नामेंट में अब तक लक्ष्य का पीछा करने वाली टीमें ज्यादा सफल रही है। बोल्ट ने कहा, ''भारत के खिलाफ कई चुनौतियां होंगी। उनके पास शानदार बैटिंग ऑर्डर है। हमें बस अपने विकल्पों के साथ स्पष्ट होने की जरूरत है कि उनके खिलाड़ियों को कैसे रोका जाए। आप जाहिर तौर पर उन्हें जितना संभव हो उतना बड़ा लक्ष्य देना चाहेंगे।'' न्यूजीलैंड को भी पाकिस्तान के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा ऐसे में दोनों टीमें जीत का अपना खाता खोलना चाहेगी। बोल्ट ने कहा, ''टीम के खिलाड़ी भारत का सामना करने के लिए उत्साहित हैं। हम पाकिस्तान के खिलाफ शानदार शुरुआत करने में विफल रहे। पाकिस्तान की टीम अभी बहुत अच्छा क्रिकेट खेल रही है। वनडे वर्ल्ड कप और वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप जैसी हाल की आईसीसी टूर्नामेंट में भारत के खिलाफ जीत के कारण न्यूजीलैंड का पलड़ा थोड़ा भारी होगा लेकिन बोल्ट ऐसा नहीं मानते हैं।

हसरंगा की हैट्रिक पर भारी पड़े किलर मिलर, दक्षिण अफ्रीका ने श्रीलंका को 4 विकेट से हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। वानिंदु हसरंगा की हैट्रिक के बावजूद श्रीलंका को आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के सुपर 12 स्टेज के ग्रुप-1 में आज दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 4 विकेट से हार का सामना करना पड़ा। शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में श्रीलंका ने टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 142 रनों का स्कोर बनाया, जिसे दक्षिण अफ्रीका ने 1 गेंद शेष रहते छह विकेट खोकर हासिल कर लिया।

दक्षिण अफ्रीका की ओर से कप्तान तेम्बा बवूमा ने सबसे ज्यादा 46 रन बनाए। उनके अलावा किलर मिलर के नाम से मशहूर डेविड मिलर ने 13 गेंदों पर दो छक्कों की मदद से नाबाद 23 रन बनाकर दक्षिण अफ्रीका को रोमांचक जीत दिला दी। श्रीलंका की ओर से हसरंगा की हैट्रिक के अलावा दुष्मंता चमीरा ने दो विकेट निकाले। दक्षिण अफ्रीका की तीन मैचों में यह दूसरी जीत है और टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचने की उसकी उम्मीदें अभी जिंदा है। इस हार के बाद श्रीलंका के लिए आगे की राह मुश्किल हो गई है।

सेमीफाइनल से पहले माइकल वॉन पाकिस्तान टीम से 'डरे', बोले- उनके खिलाफ कोई नहीं खेलना चाहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूएई और ओमान में खेला जा रहा टी-20 वर्ल्ड कप जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है, वैसे-वैसे इसको लेकर भविष्यवाणियों का दौर भी जारी है। इस समय सुपर 12 राउंड के मुकाबले खेले जा रहे हैं, जहां दो ग्रुप से चोटी की दो-दो टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। जो क्रिकेट एक्सपर्ट इस साल टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के लिए अब तक सेना देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया) को फेवरेट बता रहे थे, उनका रुझान अब एशियाई देशों पर भी आ गया है। इसमें नया नाम पाकिस्तान का है, जिसका अब तक टूर्नामेंट में प्रदर्शन शानदार रहा है। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने पाक टीम की जमकर तारीफ की है। वॉन ने ट्वीट करते हुए लिखा, ''पिछले सप्ताह के आखिर में हमने बहुत बड़ा मैच देखा और अब हमारे सामने दुनिया का सबसे बड़ा मैच है। इसका इंतजार नहीं कर सकता। कोई भी जीते, पाकिस्तान से सेमीफाइनल से कोई भी खेलना नहीं चाहेगा। टी-20 वर्ल्ड कप।वॉन ने कहा, ''मुझे पूरी उम्मीद है कि पाकिस्तान अपने ग्रुप में टॉप करेगा और हम सेमीफानइल में उसका सामना नहीं करना चाहेंगे। मैं दूसरी सेमीफाइनलिस्ट टीम का सामना करना चाहूंगा।'' पाक टीम की तारीफ करते हुए वॉन ने कहा, ''इस टीम में शानदार ओपनिंग जोड़ी है। इसके अलावा आपके पास मिडिल ऑर्डर में बेहतरीन अनुभवी खिलाड़ी शामिल हैं। पाक टीम में कुछ मैच फिनिशर खिलाड़ी और बेहतरीन बॉलिंग अटैक है, जो आपको एक परफेक्ट टीम बनाता है।

सार्वजनिक स्थलों पर चुनाव पाठशालाओं का आयोजित कर मतदाताओं को करें जागरूक : डीएम

अखंड भारत संदेश

भदोही। स्वीप कार्यक्रम के अंर्तगत आयोजित होने वाले मतदाता जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों की कार्य योजना बनाकर तत्काल उपलब्ध कराये जाय, युवा मतदाताओं को जागरूक कर उनका शत प्रतिशत पंजीकरण कराये जाय, मतदान केन्द्रों/मतदेय स्थलों, सार्वजनिक स्थलों पर चुनाव पाठशालायें आयोजित कर मतदाताओं को जागरूक किया जाय। उक्त निर्देश जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कलेक्टेट्रट सभागार में आयोजित निर्वाचक नामावलियो के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु स्वीप योजनान्तर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में आयोजित बैठक में दिया।उन्होंने बताया कि मतदाता जागरूकता हेतु विशेष पुनरीक्षण अभियान जनपद में 7 नवम्बर (रविवार) 13 नवम्बर(शनिवार), 21 नवम्बर (रविवार) एवं 28 नवम्बर (रविवार) को संचालित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि मतदाता जागरूकता अभियान(स्वीप) का मुख्य उद्देश्य है कि युवा मतदाताओं 18-19 वर्ष के युवाओं/महिलाओं को चिन्हित कर मतदाता बनने हेतु प्रेरित किया जाये तथा स्वीप पाठशालाएं एवं मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर मतदाताओं को जागरूक कर ई0पी0रेशियो/जेण्डर रेशियों बढ़ाया जाये। मतदान केन्द्रों, मतदेय स्थलों तथा विशेष सार्वजनिक स्थलों पर चुनाव पाठशालायें आयोजित कर, मतदाता साक्षरता कमेटी (ईएलसी) के द्वारा मतदाता जागरूकता के लिए निबन्ध, स्लोगन, भाषण, नुक्कड़ नाटक, मेंहदी आदि प्रतियोगिता के माध्यम से मतदाता जागरूकता के लिए व्यापक प्रसार-प्रचार किया जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि इण्टर कालेज, डिग्री कालेज के 01 जनवरी 2022 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले समस्त छात्र/छात्राओं का शत- प्रतिशत पंजीकरण कराया जाये और उनसे इस आशय का प्रमाण पत्र लिया जाये कि उनके परिवार में 18 वर्ष एवं इससे ऊपर के सभी सदस्य मतदाता बने हुए है। युवा मतदाताओं को ''वोटर हेल्पलाइन ऐप'' तथा एन0वी0एस0पी0 के बारे में बताया जाये तथा उनको डाउनलोड कराया जाये। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कहा कि समस्त राजकीय/सहायक प्राप्त/निजी सनतक एवं परास्तानक शिक्षण संस्थानों में मतदाता पंजीकरण हेतु एक कोआर्डिनेटर एवं हेल्पडेस्क की स्थापना की जाये, और फार्म भरने के लिए तिथि व समय निर्धारित किया जाये। संस्थानों द्वारा नामित किये गये कोआर्डिनेटरों के नाम, उनके मोबाइल नम्बर सहित सूचना जिला निर्वाचन कार्यालय को उपलब्ध करायी जाये। मतदाता पंजीकरण के लिए समस्त औद्योगिक एवं व्यावसायिक संस्थानों में उनके प्रतिनिधियों/एसोशिएशन यथा व्यापार मण्डल, उद्योग संगठनों, सिविल सोसाइटी, गैर सरकारी संगठनों का सहयोग लिया जाये।

मतदाता जागरूकता हेतु विशेष पुनरीक्षण अभियान की तिथियां निर्धारित

स्वीप योजनान्तर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में हुई बैठक

जिलाधिकारी ने बांटी टाफी और कहा-समय से स्कूल आया करो

बच्चों से सफाई रखने, ड्रेस पहनकर स्कूल आने को कहा

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने आज विकास खंड ज्ञानपुर के कंपोजिट विद्यालय चकसिखारी का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान डीएम ने मिड डे मील का भी मुआयना किया। रसोइये ने बताया कि आज मेन्यू के मुताबिक चावल और सब्जी बनाई गई थी, सब्जी में आलू, परवल, टमाटर एवं सोयाबीन का प्रयोग किया गया था।इस पर जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि मिड डे मील का वितरण मेन्यू के मुताबिक किया जाए। इसमें मेन्यू के निर्धारित दिनों में दूध और फल का भी वितरण करवाया जाए। खाना बनाते समय, वितरित करते समय साफ-सफाई और मास्क का प्रयोग किया जाए। इसके बाद जिलाधिकारी ने क्लास का भी निरीक्षण कर बच्चों से बातचीत की। विद्यालय में बच्चों के ठहराव के लिए एवं समय से आने के लिए जिलाधिकारी ने सभी बच्चों को प्रेरित करते हुए टाफी बांटी।

इसके साथ ही जिलाधिकारी ने बच्चों को नियमित साफ-सफाई रखने, ड्रेस पहनकर स्कूल आने के लिए कहा। औचक निरीक्षण के दौरान आर्यका अखौरी ने स्कूल में करवाए जा रहे कायाकल्प के कार्यों का भी मुआयना किया और ग्राम प्रधान को निर्देशित किया गया कि कक्षाओं में टाइल्स, रनिंग वाटर की व्यवस्था को ठीक कराने, विद्यालय पर किए गए अवैध कब्जे को हटाने के लिए निर्देशित किया गया और जिला समन्वयक निर्माण को भी निर्देशित किया गया कि अवशेष बचे निर्माण कार्य को अपनी देखरेख में पूर्ण कराना सुनिश्चित कराएं और प्रगति से अवगत कराएं।

सरदार पटेल की कार्यशैली से अवगत हुए छात्र

अखंड भारत संदेश

भदोही। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय सनतकोत्तर महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष में द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसके समापन सत्र में आज सत्याग्रह तथा सरदार वल्लभभाई पटेल का उद्भव विषय पर विभिनन विद्वान वक्ताओं द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता महाविद्यालय के इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अवधेश कुमार ने संगोष्ठी की परिकल्पना से परिचित कराते हुए उसके मुख्य विषय पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। जंतु विज्ञान के प्रभारी डॉ आसुतोष कुमार श्रीवास्तव ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। साथ ही अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अमित तिवारी ने लौह पुरुष की उपाधि की सार्थकता बताते हुए सरदार पटेल की कार्यशैली से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया और यह भी स्पष्ट किया कि किस कठिन परिश्रम से सरदार पटेल ने 562 रियासतों में बटे भारत को अखंड भारत का रूप दिया।

लौहपुरुष जयंतीः बच्चे निकालेंगे प्रभातफेरी, होंगे विविध आयोजन

भदोही। जनपद में सरदार पटेल की जयंती धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाई जाएगी। जिलाप्रशासन जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाएगा। इसके संबंध में आज जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अगुवाई में तैयारी बैठक की गई। कलेक्ट्रेट में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी ने तैयारियों की समीक्षा की और आवश्यक निर्देश दिया। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने बताया कि राष्ट्रीय एकता अखंडता और सुरक्षा की भावना को मजबूती प्रदान करने के लिए पुलिस और अन्य वर्दीधारी बलों व अन्य एजेंसियों के द्वारा 31 अक्टूबर को संयुक्त रूप से मार्च-पास्ट किया जाएगा। यह मार्च पास्ट कलेक्ट्रेट से विभूति नारायण राजकीय इंटर कालेज तक होगा। इस अवसर पर होने वाले समारोह में साइकिलध्मोटर साइकिल रैली का भी आयोजन किया जाएगा।

सौ रोगों की एक दवाई, घर में रखो साफ सफाई

संचारी रोग जागरुकता को लेकर विद्यायालयों में बच्चों ने निकाली रैली, दिया संदेश

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। विकास खंड ज्ञानपुर के उच्च प्राथमिक विद्यालय के बच्चों और शिक्षकों द्वारा संचारी रोगों के प्रति लोगों को जागरुक करने के उद्देश्य से आजजागरुकता रैली निकाली गई। रैली के दौरान आम जनमानस को मच्छरों से बचाव, साफ-सफाई के फायदे और संक्रामक रोगों से बचाव के उपाय सुझाए गए।

यह रैली पीड्ब्लूडी से होते हुए नए तहसील ज्ञानपुर, शीतल पाल तिराहा, केएनपीजी कॉलेज व जिला कारागार से होते हुए बीआरसी ज्ञानपुर पर आकर समाप्त हुई। रैली में बच्चे नारा 'सौ रोगों की एक दवाई घर में रखो साफ सफाई', 'कूड़ा फेंको कूड़ा दानी में सोए मच्छरदानी में', 'हाथों की सफाई कीटाणु की पिटाई' जैसे नारे लगाए, साथ में तख्ती पर लिखे हुए नारे बैनर पर बचाव के उपाय तथा चार्ट पर संचारी रोगों से बचाव के चित्र बने हुए थे। रैली समापन के बाद बच्चों में निबंध प्रतियोगिता कराई गई। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक सतगुरु प्यारी श्रीवास्तव, राज्य अध्यापक पुरस्कार से पुरस्कृत शिक्षक अखिलेश कुमार, डॉ विमल कुमार मिश्र, रंजना कुमारी, रतनलाल, शिवम श्रीवास्तव, तृप्ति श्रीवास्तव, ज्योत्सना यादव आदि मौजूद रहे।

इसी क्रम में प्राथमिक विद्यालय चककलूटी ज्ञानपुर के शिक्षकों, बच्चों, और आंगनबाड़ी केंद्र द्वारा संयुक्त रुप से प्रधानाध्यापक विनोद कुमार के नेतृत्व में संचारी रोग उन्मूलन अभियान रैली निकाली गई। जो चककलूटी गांव में होते हुए विद्यालय पर आकर समाप्त हुई। रैली में बच्चों व शिक्षकों द्वारा संचारी रोगों की रोकथाम करने से संबंधित नारे ,पोस्टर्स, बैनर्स के माध्यम से गांववासियों को जागरूक किया गया।

142 युवाओं को मिला रोजगार

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला सेवायोजन अधिकारी सुश्री शिवानी ने बताया कि निदेशक, प्रशिक्षण एवं सेवायोजन उत्तर प्रदेश लखनऊ के आदेशानुसार आज 30 अक्टूबर 2021 को जिला सेवायोजन कार्यालय, पुरानी कलेक्ट्रेट बालीपुर ज्ञानपुर में रोजगार मेला का आयोजन किया गया। रोजगार मेले में लगभग 450 अभ्यथिर्यों ने प्रतिभाग किया। जिसमें कुल 5 कंपनियों द्वारा कुल 300 अभ्यथिर्यों का साक्षात्कार लिया गया। जिसमें विभिनन पदों हेतु कुल 142 अभ्यथिर्यों का चयन किया गया। इस अवसर पर जिला सेवायोजन कार्यालय के कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

जहर वाला पानी पिलाकर 58 गायों की ले ली जान, नौकरी से हटाए जाने पर यूं निकाला गुस्सा

नोएडा (एजेंसी)। नोएडा के थाना सूरजपुर क्षेत्र के गांव खोदना खुर्द में रहने वाले एक व्यक्ति की 58 गायों को जहर देकर मारने के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी पीडि.ति के यहां पूर्व में नौकरी करता था। नौकरी से निकाले जाने की वजह से उसने गोवंश को जहर देकर उनकी हत्या कर दी। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस आयुक्त आलोक सिंह के प्रवक्ता ने बताया कि गांव खोदना खुर्द में रहने वाले ओमवीर नागर की डेरी है, जहां उन्होंने गाय पाल रखी है। उन्होंने बताया कि ओमवीर नागर की 58 गाय 5 दिनों में संदिग्ध अवस्था में मर गईं।

पोप फ्रांसिस से मिलने पहुंचे पीएम मोदी, फ्रांस और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति से भी मिलेंगे

रोम (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ज-20 समिट में भाग लेने से पहले पोप फ्रांसिस से मिलने 30 अक्टूबर को वेटिकन सिटी पहुंचे हैं। पीएम मोदी के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और विदेश मंत्री सुब्रमण्यम जयशंकर भी साथ हैं। पोप फ्रांसिस से मुलाकात को लेकर विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला ने बताया था कि पीएम मोदी और पोप के बीच बैठक का कोई निर्धारित एजेंडा नहीं है। श्रृंगला ने बताया था कि पीएम मोदी ज-20 नेताओं के साथ वैश्विक आर्थिक स्थिति, कोविड-19 महामारी, सतत विकास और जलवायु परिवर्तन पर चर्चा करेंगे।

बता दें कि दो दिनी ज-20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए पीएम मोदी 29 अक्टूबर को इटली पहुंचे हैं। यह 8वां समिट है जिसमें पीएम भाग लेने पहुंचे हैं। पीएम मोदी 30 अक्टूबर को फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो के साथ बैठक करने वाले हैं। पीएम मोदी के सिंगापुर के पीएम ली होसेन लूंग के साथ भी मुलाकात कर सकते हैं। 30 अक्टूबर को पीएम मोदी एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए टर्मे डि डायोक्लेजि.यानो पहुंचने वाले हैं। बाद में ज-20 नेताओं और सहयोगी देशों के लिए डिनर आदि की योजना है।

29 अक्टूबर को पीएम मोदी ने यूरोपीय संघ के शीर्ष नेताओं और इटली के प्रधानमंत्री मारियो ड्रैगी से मुलाकात की थी। नेताओं ने तेज कोविड टीकाकरण के लिए पीएम मोदी को बधाई दिया है। पीएम मोदी ने इटली में स्थित भारतीय समुदाय के सदस्यों के जरिए भारत के साथ घनिष्ठ संबंध रखने वालों के साथ भी बातचीत की है। पीएम मोदी 31 अक्टूबर तक इटली की राजधानी रोम में रहेंगे।

क्रूज ड्रग्स केसः आर्यन की घरवापसी के बाद 9 और को मिली बेल

मुंबई (एजेंसी)। क्रूज ड्रग्स केस में बॉलीवुड किंग शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान जमानत मिलने के एक दिन बाद यानि आज जेल से अपने घर पहुंचे। क्रूज ड्रग्स केस में सिर्फ आर्यन ही नहीं कुल 20 लोगों की गिरफ्तारी हुई है। शनिवार को एनडीपीएस कोर्ट ने इस प्रकरण में नौ और आरोपियों को जमानत दी। अब तक कुल 14 लोगों को बेल मिल चुकी है। हाई प्रोफाइल क्रूज ड्रग्स केस में सुपरस्टार शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान 22 दिन जेल की हवा खाने के बाद अपने घर मनन्त पहुंच गए हैं। आज आर्यन के घर पहुंचने के मौके पर बड़ी संख्या में लोग मनन्त के पास मौजूद थे। लोगों ने पोस्टरों, ढोल

और आतिशबाजी करके आर्यन का स्वागत किया। इतना ही नहीं शाहरुख खान ने अपने बेटे आर्यन की घरवापसी पर मनन्त को रोशन किया था। आर्यन के जेल से घर लौटने पर पूरा खान परिवार कुशी मना रहा है।

क्रूज ड्रग्स केस में 28 अक्टूबर को आर्यन खान के साथ ही अरबाज मर्चेंट, मुनमुन धमेचा को भी बेल मिल गई थी। आज स्पेशल एनडीपीएस कोर्ट ने नौ और लोगों को बेल दी। आज जमानत पाने वाले लोगों में अचित कुमार, नुपुर साथिया, भास्कर अरोरा, मानव सिंघल, गोपाल आनंद, समीर सहगल, इश्मीत सिंह चड्ढा और श्रेयस नायर शामिल हैं।

त्रिपुरा में एबीवीपी कार्यकर्ता को चाकू से गोदा, आरएसएस बोली- सांप्रदायिक हमला, आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। त्रिपुरा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के एक कार्यकर्ता को चाकू से गोद दिया गया। एबीवीपी कार्यकर्ता पर चाकू से हमला उस वक्त किया गया जब परिषद के द्वारा सदस्यता अभियान चलाया जा रहा था। बताया जा रहा है कि यह घटना नॉर्थ त्रिपुरा के उनाकोटि जिले की है। एबीवीपी कार्यकर्ता शिबाजी सेनगुप्ता पर यह हमला कैलाशशहर में एक स्कूल के बाहर किया गया है। इस हमले में शिबाजी सेनगुप्ता बुरी तरह जख्मी हो गए हैं। घायल अवस्था में उन्हें अस्पताल ले जाया गया है, जहां फिलहाल उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। एक पुलिस अधिकारी ने इस हमले की पुष्टि की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने दावा किया है कि यह हमला सांप्रदायिक था। कैलाशशहर में पहले से ही निषेधाज्ञा लागू है। इसका मतलब यह है कि यहां बिना अनुमति एक जगह पर चार लोगों से ज्यादा लोगों के जमा होने की अनुमति नहीं है। उनाकोटि जिले के डीएम यूके चक्मा ने कहा, 'आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। कैलाशहर में धारा 144 लागू है। हालात अभी नियंत्रण में हैं। लोगों को कानून का पालन करना चाहिए। लोगों को ना तो अफवाह फैलानी चाहिए और ना ही अफवाहों पर ध्यान देना चाहिए।

105 साल के श्याम सरण ने 33वीं बार डाला वोट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में मंडी संसदीय उपचुनाव के लिए देश के सबसे पहले मतदाता 105 साल के श्याम सरण नेगी ने अपना मतदान दिया। इस दौरान मतदान केंद्र पर रेड कार्पेट बिछाकर उनका भव्य स्वागत किया गया। श्याम सरण नेगी ने 33 वीं बार अपना वोट डाला। हिमाचल प्रदेश के कल्पा गांव में देश के सबसे पहले मतदाता श्याम सरण नेगी ने अपना वोट डाला। सरण नेगी को उनके घर कल्पा से सरकारी वाहन में सम्मानपूर्वक बूथ नंबर 51 पर लाया गया। चुनाव अधिकारी सरण नेगी को 1890 में बने एक प्राथमिक विद्यालय के अंदर मतदान केंद्र तक ले गए। 105 साल के सरण नेगी ने आज 33वीं बार अपना वोट डाला। ग्रामीणों के मुताबिक, सरण नेगी ने कभी भी अपना वोट मिस नहीं किया। हिमाचल प्रदेश के कल्पा गांव में मास्टरजी के नाम से लोकप्रिय श्याम सरण नेगी की उम्र भले ही 105 साल हो गई, वे भले ही व्हीलचेयर से बंधे होकर मतदान देने पहुंचे। लेकिन मतदान देने का जोश आज भी उनकी आंखों में देखते ही बनता है। मतदान केंद्र पर नायब तहसीलदार हरि राम समेत तमाम चुनाव अधिकारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

आधिकारिक रिकॉर्ड के मुताबिक, 1 जुलाई 1917 को जन्मे श्याम सरण नेगी भारत के पहले आम चुनाव में मतदान करने वाले

1952 लोकसभा चुनाव से कर रहे है मतदान

पहले व्यक्ति थे। हालांकि चुनाव फरवरी 1952 में हुआ था, लेकिन आदिवासी किन्नैर में मतदान अक्टूबर में पांच महीने पहले आयोजित किया गया था, क्योंकि खराब मौसम के चलते घाटी में सदियों में बर्फ जमी हुई थी। 1952 में देश के पहले आम चुनाव के वक्त कल्पा गांव को चिनने कहा जाता था। सरण नेगी उस वक्त चुनाव ड्यूटी पर थे, लेकिन उन्होंने मतदान केंद्र पर जाने से पहले अपना वोट डाला। तब से, वे एक भी चुनाव में मतदान करने से नहीं चूके। 2012 में तत्कालीन मुख्य चुनाव आयुक्त नवीन चावला ने किन्नैर के कल्पा गांव में भारत के पहले मतदाता सरण नेगी के घर का दौरा किया था। 2014 के लोकसभा चुनावों के दौरान गूगल ने सरण नेगी को वोट देने की प्रतिज्ञा के लिए एक वीडियो भी बनाया था।कल्पा हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन महासू जिले की चीनी तहसील का मुख्यालय था। 1960 में, किन्नैर जिले को महासू से अलग कर कल्पा को जिला मुख्यालय बनाया गया था। 1990 में, किन्नैर के लोगों की प्रशासनिक सुविधा के लिए जिला मुख्यालय को रिकांग पियो में डाउनहिल स्थानांतरित कर दिया गया था। सरण नेगी को भारत का पहला मतदाता घोषित किए जाने के बाद से कल्पा गांव में मतदान का प्रतिशत बढ़ा है। ईवीएम की शुरुआत से पहले कल्पा गांव में लोकसभा के लिए मतदान प्रतिशत 55ड्ढ और विधानसभा चुनावों के लिए 60-65ड्ढ था। 2003 में ईवीएम आने के बाद और चुनाव आयोग और जिला प्रशासन की पहल के कारण गांव में मतदान को लेकर और भी जागरूकता बढ़ी है।

आपकी वजह से मोदी हो रहे और मजबूत... पीके के बाद ममता ने भी कांग्रेस को घेरा, केंद्र पर दादागिरी का आरोप

पणजी (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को गोवा में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अधिक शक्तिशाली बनेंगे क्योंकि कांग्रेस पार्टी राजनीति को लेकर गंभीर नहीं है। इसके अलावा उन्होंने देश की सबसे पुरानी पार्टी पर निणय्र नहीं लेने का आरोप लगाया। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि दिल्ली की 'दादागिरी' काफी है। पणजी के तटीय राज्य के अपने तीन दिवसीय दौरे के अंतिम दिन मीडियाकमिर्यों के समूह को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने यह भी कहा कि देश पीड़ित है क्योंकि कांग्रेस निणय्र नहीं ले सकती है। आपको बता दें कि

गोवा में अगले साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ममता ने मीडिया से बात करते हुए कहा, ठमैं अभी सब कुछ नहीं कह सकती क्योंकि उन्होंने (कांग्रेस ने) राजनीति को गंभीरता से नहीं लिया। मोदी कांग्रेस के कारण और अधिक शक्तिशाली होने जा रहे हैं। यदि कोई निणय्र नहीं ले सकता है, तो देश को उसके लिए क्यों भुगतना चाहिए सीएम ममता ने कहा, उन्हें (कांग्रेस को) मौका मिला। भाजपा के खिलाफ लड़ने के बजाय, उन्होंने मेरे राज्य में मेरे खिलाफ चुनाव लड़ा। ममता ने साथ ही यह भी कहा कि टीएमसी चुनाव में क्षेत्रीय दलों के लिए सीटों के बंटवारे में विश्वास करती है। आपको बता दें कि टीएमसी ने घोषणा की है कि वह आगामी गोवा चुनाव में सभी 40 सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

यह पूछे जाने पर कि उन्हें क्या लगता है कि कांग्रेस को क्या निणय्र लेने चाहिए, उन्होंने कहा, ठमैं कांग्रेस के बारे में चर्चा नहीं करने जा रही हूं क्योंकि यह मेरी पार्टी नहीं है। मैंने अपनी क्षेत्रीय पार्टी बनाई है और बिना किसी के समर्थन के, हमने तीन बार सरकार का गठन किया है। उन्होंने कहा, ठउन्हें फैसला करने दें। वह मेरी प्रणाली भी है, मैं किसी अन्य राजनीतिक दल के कारोबार में हस्तक्षेप नहीं करती। मैं अपने राजनीतिक दल के बारे में कह सकती हूं और हमारी लड़ाई जारी रहेगी। हम भाजपा के आगे सिर नहीं झुकाएंगे।

स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को भी दिवाली का उपहार देगी योगी सरकार

लखीमपुर-खीरी (एजेंसी)। दिवाली से पहले योगी सरकार कर्मचारियों के अलावा बच्चों को भी तोहफा देने की तैयारी में है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार यह तोफा दिवाली से पहले अभिभावकों के खाते में पहुंच जाएगा। बेसिक शिक्षा विभाग ने इसके लिए पूरी तैयारी कर ली है। विभाग के अनुसार लखीमपुर के जिले के दो लाख 13 हजार 971 बच्चों को ड्रेस, जूता मोजा व स्कूल बैग का पैसा दिवाली के पहले उनके अभिभावकों के खाते में पहुंच जाएगा। इन बच्चों का डाटा फाइनल हो चुका है। अभिभावकों के खातों में 1056 रुपए भेजे जाएंगे। वही विभाग में पंजीकृत पांच लाख 70 हजार 560 बच्चों में से तीन लाख 73हजार 528 बच्चों का डाटा पोर्टल पर लॉक किया गया है।

बीजेपी का पूर्वांचल प्लानः मंडल अध्यक्ष-प्रभारियों संग गोरखपुर में मंथन बैठक शुरू, सीएम योगी भी हैं मौजूद

गोरखपुर (एजेंसी)। विधानसभा चुनाव 2022 की तैयारियों में जुटी भाजपा गोरखपुर क्षेत्र के मण्डल अध्यक्ष और प्रभारियों को सहेजने में लगी है। सीएम योगी आज गोरखपुर में गोरखपुर, बस्ती और आजमगढ़ मण्डल के 12 जिलों के मण्डल अध्यक्षों और मण्डल प्रभारियों के बीच यूपी चुनाव की तैयारियों पर चर्चा कर रहे हैं। प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह भी इस मौके पर मौजूद हैं। सीएम योगी आदित्यनाथ के साथ प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह, प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह और गोरखपुर क्षेत्र के चुनाव प्रभारी अरविंद मेनन एवं विवेक ठाकुर भी कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं। यह बैठक योगीराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह एवं संस्कृति केंद्र में हो रही है। बता दें

कि वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में गोरखपुर क्षेत्र की 62 विधानसभा सीटों में से भाजपा ने 44 सीटों पर परचम लहराया था। इसके अलावा 02 सीटों पर सहयोगी दल को सफलता मिली थी।

ऐसे में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इन सीटों पर संगठन की सफलता को दोहराने के लिए पूरी ताकत से जुटे हैं। इन 62 विधानसभा क्षेत्रों में 286 मंडल हैं, जिनमें मण्डल अध्यक्ष एवं मण्डल प्रभारी हैं। बैठक में सभी 12 जिलों के जिलाध्यक्ष, 12 जिलों के जिला प्रभारी, 62 विधानसभा क्षेत्र प्रभारी भी आमंत्रित किए गए हैं। 31 सदस्यीय क्षेत्रीय कार्य समिति भी बैठक का हिस्सा है। इसके अलावा क्षेत्रीय पदाधिकारी भी शामिल हो रहे हैं।

पाकिस्तानी आर्मी चीफ बाजवा को खत लिख मांगा इस्तीफा, रिटायर्ड मेजर जनरल के बेटे को हुई 5 साल की जेल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान में आर्मी के एक सेवानिवृत्त मेजर जनरल के बेटे को 5 साल जेल की सजा सुनाई गई है। रिटायर्ड मेजर जनरल के बेटे पर आरोप है कि उसने देश के आर्मी चीफ जनरल कमर जावेद बाजवा से इस्तीफे की मांग की थी। श्जीम छमू प्दजमतदंजपवदंसश् ने ठठब् न्तकन" मतअपबम के हवाले से अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि आरोपी ने आर्मी चीफ जनरल बाजवा का सेवा विस्तार करने पर एक लेटर लिख कर उनसे इस्तीफा मांगा था।

रिपोर्ट्स के मुताबिक मेजर जनरल रिटायर्ड, ज़फर मेहदी असकरी के बेटे हसन असकरी को खत लिखकर आर्मी चीफ की सेवा विस्तार की आलोचना करने के मामले में राजद्रोह का दोषी पाया गया है। जानकारी के मुताबिक इसी साल जुलाई के महीने में ट्रायल चला था। उस वक्त हसन को पाकिस्तान मिलिट्री कोर्ट की तरफ से वकील भी दिया गया था जिसने अदालत में उनके पक्ष में दलीलें रखी थी।

हसन के पिता ने शिकायत की थी कि साहीवाल में स्थिति उच्चस्तरीय सुरक्षा वाले जेल में उन्हें अपने बेटे से मिलने में दिक्कतें आ रही हैं। इससे पहले जनवरी में इस केस की सुनवाई इस्लामाबाद हाईकोर्ट में हुई थी। ट्रायल के दौरान सवाल उठा था कि क्या किसी आम नागरिक से जुड़े केस की सुनवाई मिलिट्री कोर्ट में हो सकती है। जिसके बाद अदालत ने मिलिट्री अथॉरिटी को न्याय करने के लिए कहा था।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

कैसे और कहां से फैला कोरोना, अमेरिका ने भी खड़े कर दिए हाथ, कहीं रहस्य बनकर न रह जाए

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने कहा है कि हम शायद कभी भी पता नहीं लगा सकें कि कोरोना वायरस की उत्पति कहां से हुई। उन्होंने अपने एक नए रिपोर्ट में कोरोना वायरस के जानवरों से इंसानों में आने या लैब से लीक होने पर विस्तार से बताया है। ऑफिस ऑफ़ द यूएस डायरेक्टर ऑफ़ नेशनल इंटेलिजेंस ;व्क्छप्द्ध ने कहा है कि प्राकृतिक उत्पति और लैब लीक दोनों ही प्रशंसनीय परिकल्पनाएं हैं। लेकिन एनालिस्ट्स इस बात से असहमत हैं कि किसकी अधिक संभावना है या क्या कोई निश्चित मूल्यांकन किया जा सकता है।रिपोर्ट्स ने उन सुझावों को भी खारिज कर दिया है जिसमें कोरोना वायरस को बायो हथियार बताया गया। कहा है कि इस थ्योरी के समर्थकों की वुहान इंस्टिट्यूट ऑफ वायरोलॉजी तक सीधी पहुंच नहीं है। यह रिपोर्ट अमेरिकी राष्ट्रपति को अगस्त में जारी किए गए 90 दिनों की समीक्षा का अपडेट है। कुछ अमेरिकी जासूसी एजेंसियों ने इसका पुरजोर समर्थन किया था कि वायरस की उत्पत्ति प्रकृति में हुई थी लेकिन इसकी बहुत कम पुष्टि हुई है। व्क्छप् की रिपोर्ट में कहा गया है कि चार अमेरिकी जासूसी एजेंसियों और एक मल्टी एजेंसी बॉडी को कम यकीन है कि कोरोना वायरस एक संक्रमित जानवर या संबंधित वायरस से उत्पनन् हुआ है। अमेरिकी जासूसी एजेंसियों का मानना है कि वे नई जानकारी के बिना कोरोना वायरस की उत्पत्ति के लिए निश्चित स्पष्टीकरण नहीं दे पाएंगे।

अब नदी को लेकर मचा बवाल, ईरान को तालिबान से किस बात का खतरा सता रहा

काबुल (एजेंसी)। अब ईरान ने भी तालिबान को लेकर खुलकर अपनी बात रखी है। ईरान के विदेश मंत्रालय ने कहा है कि अफगानिस्तान में हालिया राजनीतिक बदलाव ईरान के हितों के लिए रणनीतिक ख़तरा बन सकता है।

ईरान विदेश मंत्रालय के पश्चिम एशिया डिपार्टमेंट के जनरल डायरेक्टर रसूल मौसवी ने कहा है कि अगर मौजूदा सोच और प्रारूप वाली तालिबान सरकार अफगानिस्तान में स्थापित हो जाती हैए तो यह निश्चित रूप से हमारे देश के राष्ट्रीय हितों के लिए एक रणनीतिक खतरा होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है। हेलमंद नदी संधि को लेकर उन्होंने कहा है कि तालिबान ने ईरान के साथ हुए

अनौपचारिक बैठकों में कहा है कि वह 1973 में हुए इस संधि को मान्यता दी है। इस संधि के मुताबिक अफगानिस्तान हेलमंद नदी के पानी को ईरान के साझा करने के लिए प्रतिबद्ध है। संधि के तहत अफगानिस्तान प्रति सेकेंड 26 क्यूबिक मीटर पानी या 850 मिलियन क्यूबिक मीटर सालाना पानी की आपूर्ति ईरान को करेगा।

टोलो न्यूज की एक रिपोर्ट बताती है कि अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति अशरफ गनी ने बार.बार कहा था कि अफगानिस्तान किसी भी देशए खासकर ईरान को मुफ्त में पानी नहीं देगा। गनी ने कहा था कि वह तेल के बदले पड़ोसी देशों को पानी देने को तैयार हैं लेकिन मुफ्त में पानी नहीं देंगे।

बता दें कि हेलमंद नदी में पानी को लेकर अफगानिस्तान और ईरान में विवाद होता रहा है।

जल्दी देश छोड़ो...सऊदी अरब और बहरीन ने क्यों लेबनान के राजदूतों को निष्कासित किया

सऊदी अरब (एजेंसी)। सऊदी अरब ने लेबनान के एक मंत्री की टिप्पणियों के जवाब में उसके राजदूत को देश छोड़ने का आदेश दिया है और लेबनान से आयात पर रोक लगा दी है। लेबनान के मंत्री ने यमन में युद्ध को सऊदी श्आक्रामकताश् बताया था। इसके कुछ देर बाद शुक्रवार को बहरीन के विदेश मंत्रालय ने बताया कि बहरीन ने लेबनान के राजदूत को दो दिनों के भीतर देश छोड़ने का आदेश दिया है। लेबनान के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने सऊदी अरब के निणय्र पर चर्चा की और तनाव कम करने की उम्मीद से श्उचित निणय्रश् लेने का आह्वान किया। सऊदी अरब की सरकारी मीडिया ने अपनी खबर में कहा कि बेरूत में राज्य के राजदूत को भी स्वदेश लौटने के लिए कहा गया है। खबर में कहा गया है कि इस कदम से सऊदी अरब में रह

रहे और यहां काम कर रहे उन हजारों लेबनानी नागरिकों और उनके परिवारों पर कोई असर नहीं पड़ेगा। लेबनान से आयात पर प्रतिबंध लगाने का सऊदी का फैसला ऐसे समय में आया है जब लेबनान को विदेशी मुद्रा की अत्यंत जरूरत है जो इस समय सबसे खराब आर्थिक और वित्तीय संकट से गुजर रहा है। क्षेत्र की आर्थिक महाशक्ति सऊदी अरब दुनिया के सबसे बड़े तेल उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है और वह दशकों से लेबनानी उत्पादों का एक प्रमुख बाजार रहा है।

नर्सों की भयंकर कमी से जूझता ब्रिटेन

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्रिटेन में अस्पताल नर्सों की कमी से जूझ रहे हैं। इस गंभीर स्थिति को यूरोपीय यूनियन ईयू से आने वाले नर्सिंग स्टाफ के वापिस लौट जाने से जोड़ा जा रहा है। कोविड महामारी की शुरुआत में स्वास्थ्यकर्मियों के योगदान पर तालियां बजा रहे ब्रिटेन में अब चिंता है नर्सों की भयंकर कमी से उपजने वाली खराब स्थिति परण् आंकड़ों के मुताबिक राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा यानी एनएचएस अस्पतालों में नर्सों के लगभग चालीस हजार पंजीकृत पद खाली पड़े हैंण् कोविड से बाहर निकलने की कोशिशों को इससे बड़ा झटका लग सकता है। इसका एक उदाहरण स्कॉटलैंड में देखने को मिला जहां कोविड के मद्देनजर नर्सों की जरूरत को पूरा करने के लिए हाल ही में सैन्यकमिर्यों की तैनाती करनी पड़ीण् सामान्य स्वास्थ्य विभाग हों या आपात सेवाएंए समूचे ब्रिटेन के ज्यादातर अस्पतालों में एक शिफ्ट के दौरान नर्सों की जरूरी संख्या को पूरा कर पाना एक चुनौती बन गया हैण् ऑक्सफोर्ड शहर के जॉन रैडक्लिफ अस्पताल में नवजात शिशु विभाग के डॉक्टर अमित गुप्ता ने बातचीत में बताया कि बाकी ब्रिटेन की तरह हमारे यहां भी काफी दिक्कत है। हमारा अस्पताल कमी को पूरा करने के लिए ब्रिटेन के बाहर से नर्सिंग स्टाफ भर्ती कर रहा है। नया नहीं है नर्सिंग संकट नर्सिंग का ये संकट नया नहीं है।